PG HN S1-012 (DSC)

TWO YEAR POSTGRADUATE PROGRAMME

(CBCS and Accordance with NEP 2020)

भाषा विज्ञान

First Semester

(BHASHA VIGYAN)

Padmanath Gohainbaruah School of Humanities

KRISHNA KANTA HANDIQUI STATE OPEN UNIVERSITY

विषय विशेषज्ञ

प्रोफ़ेसर दिलीप कुमार मेधी, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, असम

प्रोफ़ेसर अमूल्य बर्मन, हिंदी विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय (सेवानिवृत्त विभागाधक्ष्य),असम

प्रोफ़ेसर भूषण पाठक, अध्यक्ष्य, बी. एस. कॉलेज, हाउली, बरपेटा, असम

पाठ्यक्रम समन्वयक : डॉ. प्रांजल कुमार नाथ, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम

एसएलएम् तैयारी टीम

Units	**Contributors**
इकाइयाँ	**योगदानकर्ताओं के नाम**
1, 6, 10–	डॉ. प्रांजल कुमार नाथ
11	अनन्या दास, शोधार्थी, असम विश्वविद्यालय,दिफु
2–3	रुबिमणि दास, शोधार्थी, गौहाटी विश्वविद्यालय
4	मनोज श्रीवास्तव, शोधार्थी, कॉटन विश्वविद्यालय
5, 7, 8, 9	डॉ. नवकांत दास, सहायक अध्यापक, रंगापारा महाविद्यालय
	डॉ. प्रांजल कुमार नाथ, शैक्षिक सलाहकार (हिंदी),च्यच।स्ह्ह
12	डॉ. पल्लबी दास, अध्यक्ष्य, आदर्श विद्यालय, हाजो
13–14	उदीप्त तालुकदार, सहायक अध्यापक, अर्यावियापीठ महाविद्यालय

Editorial Team

Content : डॉ. प्रांजल कुमार नाथ, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय

Language : डॉ.उज्जवल डेका बरुआ, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम

Structure & Format : डॉ. प्रांजल कुमार नाथ, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय

November, 2024 **ISBN :**

This Self Learning Material (SLM) of the Krishna Kanta Handiqui State University is made available under a Creative Commons Attribution-Non Commercial-ShareAlike4.0 License (International) : http.//creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0

Printed and published by Registrar on behalf of the Krishna Kanta Handiqui State Open University.

Headquarters: Patgaon, Rani Gate, Guwahati-781017
City Office: NH 37, Resham Nagar, Khanapara, Guwahati-781022 Web: www.kkhsou.in

CONTENTS

Page No.

इकाई 1 : भाषा विज्ञान की परिभाषा एवं स्वरूप 9–15

भाषाविज्ञान का अर्थ, परिभाषा, स्वरुप, भाषाविज्ञान के अध्ययन से लाभ।

इकाई 2 : भाषा के विविध रूप और भाषा परिवर्तन के कारण 16–31

भाषा के विविध रूप, भाषा परिवर्तन के कारण, भाषा परिवर्तन की दिशाएँ।

इकाई 3 : भाषा संरचना 32–41

भाषा संरचना का स्वरुप, भाषा वैज्ञानिकों की भाषा–संरचना संबंधी मान्यताएँ, भाषा संरचना की विशेषताएँ।

इकाई 4 : भाषा विज्ञान की वैज्ञानिकता 42–46

'भाषाविज्ञान' कला है या विज्ञान ?, भाषाविज्ञान की वैज्ञानिकता।

इकाई 5 : भाषा विज्ञान का क्षेत्र एवं प्रमुख अंग 47–54

भाषाविज्ञान का क्षेत्र, भाषाविज्ञान के प्रमुख अंग,भाषाविज्ञान के गौण अंग।

इकाई 6 : भाषा विज्ञान की शाखाएँ 55–58

समाज भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान, मनोभाषाविज्ञान, ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, तुलनात्मक भाषाविज्ञान।

इकाई 7 : भाषाविज्ञान के अध्ययन की विभिन्न पद्धतियाँ 59–64

वर्णनात्मक पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति या कालक्रमिक पद्धति, तुलनात्मक पद्धति, संरचनात्मक (गठनात्मक) पद्धति, भाषाविज्ञान का प्रयोगात्मक पद्धति।

इकाई 8 : भाषाविज्ञान के साथ विभिन्न मानवीय विज्ञानों का संबंध 65–70

मनोविज्ञान, इतिहास, भूगोल, समाजविज्ञान, व्याकरण, दर्शनशास्त्र।

इकाई 9 : स्वन विज्ञान–1 71–75

इतिहास, स्वनविज्ञान का स्वरुप एवं इसकी शाखाएँ, स्वनिक परिवर्तन के कारण।

इकाई 10 : स्वनविज्ञान-2 **76-82**

स्वनिम विज्ञान की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिम परिवर्तन के कारण।

इकाई 11 : रूप विज्ञान **83-87**

अर्थ एवं परिभाषा, रूपविज्ञान के प्रकार, रूप परिवर्तन के कारण, रूप परिवर्तन की दिशाएँ।

इकाई 12 : वाक्य विज्ञान **88-94**

वाक्य की अवधारणा, वाक्य की आवश्यकताएँ, वाक्य के अंग, वाक्य के भेद, वाक्य परिवर्तन के कारण।

इकाई 13 : अर्थविज्ञान **95-101**

अर्थ विकास एवं अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ, अर्थ परिवर्तन के कारण।

इकाई 14 : शेलिविज्ञान **102-108**

शैली की अवधारणा, शैलीविज्ञान की अवधारणा, शैलीविज्ञान के तत्व, शैलीविज्ञान की शाखाएँ।

विषय परिचय

कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय (KKHSOU) सभी पाठ्यक्रम की तरह हिंदी भी एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें आपके समक्ष इस दो वर्षीय पाठ्यक्रम का दूसरा मूल पेपर डीएससी 2 **'भाषा विज्ञान'** अध्ययन के लिए प्रस्तुत है। भाषा मानव समाज के विभिन्न सांस्कृतिक उपादानों और वैश्विक ज्ञान-विज्ञान को जानने-समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि भाषा के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती और समाज के बिना भाषा का अस्तित्व नहीं है। प्रत्येक भाषा की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए भाषा से संबंधित 14 इकाईयाँ आपके स्नातकोत्तर के प्रथम छमाही में दिया गया है। आगे हम प्रत्येक इकाई की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा करेंगे-

इकाई- 1 इस इकाई में **'भाषाविज्ञान'** के उद्देश्य के बाद भाषा विज्ञान का प्रस्तावना, भाषाविज्ञान की परिभाषा एवं स्वरूप की चर्चा करते हुए भाषाविज्ञान का अर्थ, परिभाषा, भाषा विज्ञान का स्वरूप, भाषाविज्ञान के अध्ययन से लाभ, सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी भाषा विज्ञान के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-2 'भाषा के विविध रूप और भाषा परिवर्तन के कारण' से सम्बंधित उद्देश्य एवं प्रस्तावना की चर्चा करते हुए,भाषा की बुनियादी संरचनाओं में ध्वनिविज्ञान (ध्वनियाँ), आकृति विज्ञान (शब्द निर्माण), वाक्यविन्यास (वाक्य संरचना), शब्दार्थ विज्ञान (अर्थ), और व्यावहारिक विज्ञान (संदर्भगत उपयोग) शामिल हैं। सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी भाषा विज्ञान के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं प्रश्न का हल निकालने में सक्षम होंगे।

इकाई-3 'भाषा संरचना' इकाई में उद्देश्य एवं प्रस्तावना की चर्चा करते हुए भाषा संरचना का स्वरूप, भाषा वैज्ञानिकों की भाषा-संरचना संबंधी मान्यताएँ ,भाषा संरचना की विशेषताएँ की चर्चा करेंगे। इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे एवं दिए गए प्रश्न को सुलझा सकेंगे।

इकाई-4 'भाषाविज्ञान की वैज्ञानिकता' को ध्यान में रखते हुए सबसे पहले इसके उद्देश्य को जानेंग। प्रत्येक इकाई की तरह इस इकाई में भी प्रस्तावना को लिखेंगे। फिर हम भाषाविज्ञान' कला है या विज्ञान ? भाषाविज्ञान की वैज्ञानिकता इत्यादि को जानेंगे। इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दर्शाया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं दिए हुए प्रश्न का हल निकालने में सक्षम होंगे।

इकाई-5 इस इकाई में हम **'भाषाविज्ञान का क्षेत्र एवं प्रमुख अंग'** की चर्चा करेंगे। जिसमें पहले उद्देश्य को लिखा गया है। भाषा विज्ञान के क्षेत्र एवं उसके अंगो को लेकर प्रस्तावना को द्वितीय में प्रस्तुत किया गया है। भाषाविज्ञान का क्षेत्र, भाषाविज्ञान के विविध अंग- ध्वनिविज्ञान, पद-विज्ञान, वाक्यविज्ञान, अर्थविज्ञान, भाषाविज्ञान के गौण अंग, भाषा की उत्पत्ति,भाषाओं का वर्गीकरण, कोश-विज्ञान, लिपि-विज्ञान, भाषिक-भूगोल, प्रागैतिहासिक खोज, शैली-विज्ञान,भू-भाषा-विज्ञान,समाजभाषा-विज्ञान, मनोभाषा-विज्ञान इत्यादि पर चर्चा करेंगे। इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे एवं दिए हुए प्रश्न का हल निकालने में सक्षम होंगे।

इकाई-6 'इस इकाई में हम भाषाविज्ञान की शाखाएँ' का अध्ययन करेंगे। सर्वप्रथम उद्देश्य और प्रस्तावना को लिखने के बाद भाषाविज्ञान की शाखाएँ पर चर्चा की जाएँगी। आगे समाज भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान, मनोभाषाविज्ञान, ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, तुलनात्मक भाषाविज्ञान इत्यादि पर विस्तारित रूप से चर्चा हुई हैं। इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंतिम में अभ्यास प्रश्न दिया गया हैं । जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं दिए हुए प्रश्न का हल निकालने में सक्षम होंगे।

इकाई- 7 'भाषाविज्ञान के अध्ययन की विभिन्न पद्धतियाँ' का अध्ययन इस इकाई में करेंगे। उद्देश्य एवं प्रस्तावना को अभिव्यक्त करके, वर्णनात्मक पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति या कालक्रमिक पद्धति, तुलनात्मक, संरचनात्मक (गठनात्मक) पद्धति, भाषाविज्ञान का प्रयोगात्मक पद्धति पर चर्चा किया गया हैं। इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न को दर्शाया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे एवं दिए हुए प्रश्न का हल निकालने में सक्षम होंगे।

इकाई- 8 'भाषाविज्ञान के साथ विभिन्न मानवीय विज्ञानों के संबंध' को स्पष्ट करते हुए सबसे पहले उद्देश्य के साथ प्रस्तावना भी लिखा गया हैं। इसके बाद इस इकाई में भाषा मनोविज्ञान, इतिहास, भूगोल, समाजविज्ञान, व्याकरण, दर्शनशास्त्र इत्यादि पर चर्चा करने के साथ इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे एवं दिए हुए प्रश्न का हल निकालने में सक्षम होंगे।

इकाई-9 इकाई के शुरुआत में उद्देश्य एवं प्रस्तावना को दर्शाते हुए **'स्वन विज्ञान-1'** का इतिहास, स्वनविज्ञान का स्वरूप एवं इसकी शाखाओं के ऊपर चर्चा किया गया हैं। इकाई के अंत में सारांश प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे एवं दिए हुए प्रश्न का हल निकालने में सक्षम होंगे।

इकाई-10 'स्वनविज्ञान-2' का अध्ययन करते हुए हम इस इकाई में उद्देश्य, प्रस्तावना,स्वनिम विज्ञान की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिम परिवर्तन के कारण इत्यादि के बारे में चर्चा करेंगे। प्रत्येक इकाइयों की तरह इस इकाई में भी सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंतमें अभ्यास प्रश्न को दर्शाया गया है। जिससे शिक्षार्थी इन प्रश्न का हल निकाल सकें।

इकाई-11 'रूप विज्ञान'- रूप विज्ञान इकाई के अंतर्गत उद्देश्य, प्रस्तावना, रूप या पद विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा, रूपविज्ञान के प्रकार, रूप परिवर्तन के कारण, रूप परिवर्तन की दिशाएँ इत्यादि पर चर्चा की गयी हैं। अंत में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंतिम में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं दिए हुए प्रश्न का हल निकालने में सक्षम होंगे।

इकाई-12 'वाक्य विज्ञान'- इकाई की शुरुआत में वाक्य विज्ञान के उद्देश्य पर चर्चा हुई है। वाक्य विज्ञान का प्रस्तावना, वाक्य की अवधारण, वाक्य की आवश्यकताएँ, वाक्य के अंग, वाक्य के भेद (क्रिया के आधार पर, रचना के आधार पर, अर्थ के आधार पर), वाक्य परिवर्तन के कारण इत्यादि पर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई हैं। आगे वाक्य विज्ञान का सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं दिए हुए प्रश्न का हल निकालने में सक्षम होंगे।

इकाई-13 'अर्थविज्ञान'- तेरहवीं इकाई की रूपरेखा में उद्देश्य, प्रस्तावना, अर्थ विकास एवं अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ (अर्थ विस्तार, अर्थ संकोच, अर्थादेश), अर्थ परिवर्तन के कारण (भौगोलिक परिवेश की भिन्नता, सामाजिक परिवेश का परिवर्तन, धार्मिक

परिवेश में परिवर्तन, राजनीतिक स्थिति का प्रभाव, नए भौतिक साधन, शब्द-प्रयोग की अधिकता, लक्षणा-व्यंजना का प्रयोग, शब्दों के तद्भव रूप, शब्दकोशीय पर्याय, सामान्य के लिए विशेष का प्रयोग, अन्य भाषाओं का अधूरा ज्ञान, अन्य कारण इत्यादि पर विस्तारपूर्वक चर्चा की जाएँगी। इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे एवं दिए हुए प्रश्न का हल निकालने में सक्षम होंगे।

इकाई-14 'शैलीविज्ञान'- यह अंतिम इकाई है जिसमें उद्देश्य एवं प्रस्तावाना को दर्शाते हुए शैली की अवधारणा, शैलीविज्ञान की अवधारणा, शैलीविज्ञान के तत्व (चयन, विचलन, समानांतरता, अप्रस्तुत-विधान, प्रतीक-विधान, बिंब-विधान), शैलीविज्ञान की शाखाएँ पर चर्चा की गयी हैं। प्रत्येक इकाइयों की तरह इस इकाई में भी सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न को दर्शाया गया है। जिससे शिक्षार्थी इन प्रश्नों का हल निकाल सकें।

प्रत्येक इकाई को पढ़ते समय, टेक्स्ट बॉक्स भी देख सकते हैं, जिसमें कुछ कठिन शब्दों और अवधारणाओं को समझने में आपकी मदद करने के लिए शामिल किया गया है। प्रत्येक इकाई में 'अपनी प्रगति जांचें' शीर्षक से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न को अभ्यास प्रश्न के अतिरिक्त शामिल किया गया है और प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का रूपरेखा 'प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)' शीर्षक से सारांश के बाद प्रस्तुत किया गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थीयों में नए-नए प्रश्न और उन प्रश्नों के समाधान के लिए आत्मविश्वास पैदा करना है। इससे विद्यार्थी इकाई के महत्वपूर्ण तथ्यों से आसानी से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक इकाई के अंत में 'अधिक जानने के लिए पढ़ें' शीर्षक से कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों की सूची दी गयी है, जो प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अत्यावश्यक है। विषय की गहरी जानकारी के लिए सारी पुस्तकें महत्वपूर्ण हैं।

इकाई 1 : भाषाविज्ञान की परिभाषा एवं स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 भाषाविज्ञान का अर्थ

1.4 भाषाविज्ञान की परिभाषा

1.5 भाषाविज्ञान का स्वरूप

1.6 भाषाविज्ञान के अध्ययन से लाभ

1.7 सारांश

1.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

1.9 अधिक जानने के लिए पढ़े

1.10 अभ्यास प्रश्न

1.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप -

- भाषाविज्ञान का अर्थ और परिभाषाओं को जान पाएंगे।
- भाषाविज्ञान से क्या लाभ होता हैं उसके बारे में पता लगेगा।
- भाषाविज्ञान के स्वरुप और प्रवृत्तियों से परिचय के बारे में जान सकेंगे।

1. 2 प्रस्तावना

भाषा मानव-जीवन का महत्वपूर्ण अंग है और इसी का ज्ञान ही मनुष्य को पशु से अलग करता है। भाषा एक सामाजिक व्यवस्था और व्यवहार है। जिसके प्रयोग से मनुष्य अपने भाव-ज्ञान की अभिव्यक्ति और परस्पर एक दूसरे से अपने विचारों का, भावों का विनिमय करते है। दूसरी ओर भाषाविज्ञान भाषा की वह शाखा हैं। जिसमें भाषा की उत्पत्ति, स्वरुप, अर्थ, सौंदर्य, विकास आदि का वैज्ञानिक एवं विश्लेषनात्मक अध्ययन किया जाता है। जो व्याकरण से बिलकुल ही भिन्न है। भाषा संबंधी इस अध्ययन को विभिन्न नामों से अभिहित किया गया है। सर्वप्रथम इसे फिलोलॉजी, कम्पैरेटिव फिलोलॉजी, कम्पैरेटिव ग्रामार, लिंगविस्टिक, ग्लौतोलेजी, हिंदी भाषा में- भाषा-शास्त्र, भाषा-तत्व, भाषा-विज्ञान, तुलनात्मक भाषा-विज्ञान आदि।



महत्वपूर्ण बिंदु

संस्कृत-साहित्य में यत्र-तत्र उपलब्ध होने वाली भाषा-विचार-विषयक सामग्री ही निश्चित रूप से वर्तमान भाषा-विज्ञान की आधारशिला कही जा सकती है।

1.3 भाषाविज्ञान का अर्थ

'भाषा-विज्ञान' नाम में दो पदों का प्रयोग हुआ है। 'भाषा' और 'विज्ञान'। भाषा-विज्ञान को समझने से पूर्व इन दोनों शब्दों से परिचित होना आवश्यक प्रतीत होता है।

'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से निष्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है- व्यक्त वाक् (व्यक्तायां वाचि)। 'विज्ञान' शब्द में 'वि' उपसर्ग तथा 'ज्ञा' धातु से 'ल्युट्' (अन) प्रत्यय लगाने पर बनता है। सामान्य रूप से 'भाषा' का अर्थ है 'बोलचाल की भाषा या बोली' तथा 'विज्ञान' का अर्थ है 'विशेष ज्ञान', किन्तु 'भाषा-विज्ञान' शब्द में प्रयुक्त इन दोनों पदों का स्पष्ट और व्यापक अर्थ समझ लेने पर ही हम इस नाम की सारगर्भिता को जानने में सफल होंगे। अत: हम यहाँ इन दोनों पदों के विस्तृत अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते वे अपने भावों और विचारों को एक दूसरे तक पहुंचाना चाहते हैं और यह परंपरा युगों से चली आ रही है। मानव को अपने सभ्यता, संस्कृति के इतिहास को जानने के लिए अपने ज्ञान को विकसित करने के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करती है। हमारे पूर्वपुरुषों से सभी साधारण और असाधारण अनुभव हम भाषा के माध्यम से ही जान पाते हैं। दण्डी ने अपने ग्रन्थ 'काव्यादर्श' में भाषा की महत्ता सूचित करते हुए लिखा है-

'इदधतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योत्तिरासंसारं न दीप्यते॥'

अर्थात् उनके अनुसार अगर संसार में शब्द-स्वरूप ज्योति (भाषा) का प्रकाश न होता तो यह सम्पूर्ण संसार अन्धकारमय होता। महत्वपूर्ण है कि यह कथन मानव भाषा को लक्ष्य करके ही कहा गया है। पशु-पक्षी भावों को प्रकट करने के लिए जिन ध्वनियों का आश्रय लेते हैं वे उनके भावों का वहन करने के कारण उनके लिए भाषा हो सकती हैं किन्तु मानव के लिए अस्पष्ट होने के कारण विद्वानों ने उसे 'अव्यक्त वाक्' कहा है, जो भाषा-विज्ञान की दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं रखती। क्योंकि 'अव्यक्त वाक्' में शब्द और अर्थ दोनों ही अस्पष्ट बने रहते हैं। मनुष्य भी कभी-कभी अपने भावों को प्रकट करने के लिए अंग-भंगिमा, भू-संचालन, हाथ-पाँव-मुखाकृति आदि के संकेतों का प्रयोग करते हैं, परन्तु वह भाषा के रूप में होते हुए भी 'व्यक्त वाक्' नहीं है। मानव भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वह 'व्यक्त वाक्' अर्थात् शब्द और अर्थ की स्पष्टता लिए हुए होते हैं। महाभाष्य के रचयिता पतंजलि के अनुसार 'व्यक्त

वाक्' का अर्थ भाषा के वर्णनात्मक होने से ही है।

अत: भाषा हम उन शब्दों के समूह को कहते हैं जो विभिन्न अर्थों के संकेतों से संपन्न होते हैं। जिनके द्वारा हम अपने मनोभाव सरलता से दूसरों के प्रति प्रकट कर सकते हैं। इस प्रकार भाषा की परिभाषा करते हुए हम उसे मानव-समाज में विचारों और भावों का आदान-प्रदान करने के लिए अपनाया जाने वाला एक माध्यम कह सकते हैं, जो मानव के उच्चारण अवयवों से प्रयत्नपूर्वक नि:सृत की गई ध्वनियों का सार्थक आधार लिए रहता है। वो ध्वनि-समूह शब्द का रूप तब लेते हैं जब वे किसी अर्थ से जुड़ जाते हैं। सम्पूर्ण ध्वनि-व्यापार अर्थात् शब्द-समूह अपने अर्थ के साथ एक 'यादृच्छिक' संबंध पर आधारित होता है। 'यादृच्छिक' का अर्थ है पूर्णतया कल्पित। संक्षेप में विभिन्न अर्थों में व्यक्त किये गए मुख से उच्चरित उस शब्द समूह को हम भाषा कहते हैं, जिसके द्वारा हम अपने भावों और विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं और उस सभी का अध्ययन ही मूलत: भाषा-विज्ञान में किया जाता है।

1.4 भाषा-विज्ञान की परिभाषा

भाषा-विज्ञान को लेकर विद्वान अपने-अपने ढंग से मत व्यक्त किए हैं। डॉ: श्यामसुन्दर दास ने अपने ग्रन्थ 'भाषा रहस्य' में भाषा-विज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है-

''भाषा-विज्ञान भाषा की उत्पत्ति, उसकी बनावट, उसके विकास तथा उसके ह्रास की वैज्ञानिक व्याख्या करता है।''

मंगल देव शास्त्री (तुलनात्मक भाषाशास्त्र) के शब्दों में-

''भाषा-विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं जिसमें (क) सामान्य रूप से मानवी भाषा (ख) किसी विशेष भाषा की रचना और इतिहास का और अन्तत: (ग) भाषाओं या प्रादेशिक भाषाओं के वर्गों की पारस्परिक समानताओं और विशेषताओं का तुलनात्मक विचार किया जाता है।''

डॉ० भोलानाथ तिवारी के 'भाषा-विज्ञान' नामक ग्रन्थ में भाषा-विज्ञान की परिभाषा इस प्रकार दी है-

''जिस विज्ञान के अन्तर्गत वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन के सहारे भाषा की उत्पत्ति, गठन, प्रकृति एवं विकास आदि की सम्यक् व्याख्या करते हुए, इन सभी के विषय में सिद्धान्तों का निर्धारण हो, उसे भाषाविज्ञान कहते हैं।''

डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार ''भाषाविज्ञान का सीधा अर्थ है, भाषा का विज्ञान और विज्ञान का अर्थ है विशिष्ट ज्ञान। इस प्रकार भाषा का विशिष्ट ज्ञान भाषा-विज्ञान कहलायेगा।''

बाबूराम सक्सेना ने भाषा-विज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा है- ''भाषाविज्ञान का अभिप्राय भाषा का विश्लेषण करके उसका दिग्दर्शन कराना है।''

उल्लेखित सभी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि उन परिभाषाओं में विशेष कोई अंतर नहीं है। डॉ: श्यामसुन्दर दास की परिभाषा में जहाँ केवल भाषाविज्ञान पर ही दृष्टि केन्द्रित रही है

वही मंगलदेव शास्त्री एवं भोलानाथ तिवारी ने अपनी परिभाषाओं में भाषाविज्ञान के अध्ययन के प्रकारों को भी समाहित कर लिया है। परिभाषा वह अच्छी होती है जो संक्षिप्त हो और स्पष्ट हो। इस प्रकार हम कह सकते हैं- ''जिस अध्ययन के द्वारा मानवीय भाषाओं का सूक्ष्म और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाए, उसे भाषा-विज्ञान कहा जाता है।''



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. भाषाविज्ञान से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 2. विभिन्न विद्वानों द्वारा भाषाविज्ञान की परिभाषाओं का उल्लेख कीजिए।

1.5 भाषाविज्ञान का स्वरूप

भाषाविज्ञान अपने वर्तमान स्वरुप में एक आधुनिक ज्ञानशाखा है, जिसका जन्म अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में हुआ। इसके जानकार सर विलियम जोन्स को माना जा सकता है। उन्होंने रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के सदस्यों के सामने एक निबंध प्रस्तुत किया, जिसमें संस्कृत, ग्रीक और लैटिन आदि भाषाओं में आये गए साम्य के आधार पर यह मत व्यक्त किया कि भारत और यूरोप की भाषाएँ एक ही स्त्रोत से विकसित हुई हैं। इस विचार ने विद्वानों में हलचल मचा दी। भारत और यूरोप की भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन का सिलसिला शुरू हुआ। यही भाषा-विज्ञान का प्रारंभ बिंदु माना गया था। प्राचीनकाल में पाश्चात्य देशों में भाषाविज्ञान और व्याकरण के क्षेत्र में उतना गहन अध्ययन नहीं हुआ जितना भारत में हुआ। सुकरात, प्लेटो, अरस्तु आदि का विचार इस सन्दर्भ में विशेष उल्लेखनीय है।

आधुनिक भाषा-विज्ञान के क्रमबद्ध अध्ययन की शुरुआत सर विलियम जोन्स से होकर कोल्बुक, श्लेगल ब्रदर्स, हम्बोलडत, रैस्क, ग्रीम आदि ने विस्तारित किया। रैजमस रैस्क और याकोब ग्रीस ने ध्वनियों की तुलनात्मक अध्ययन में ऐतिहासिकता को महत्व में रखकर किया। फ्रांत्ज़ बाप ने भी ध्वनियों का तुलनात्मक अध्ययन, स्वरों की तुलना को लेकर किया। 19वीं शताब्दी में भाषाविज्ञान के अध्ययन में और भी गहराई आने लगी। इस काल के भाषाविदों में फैडरिक मैक्समूलर और विलियम हिवटनी का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। भारतीय वाङ्मय को संसार में प्रतिष्ठित करनेवाला प्रथम विद्वान मैक्समूलर ही है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वर्नर, अक्सोली तथा येस्पर्सन ने भारतीय और यूरोपीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन पर चर्चा किया।

बीसवीं शताब्दी में भाषा-विज्ञान के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है। भाषाविद फर्दिना द सस्युर ने भाषिक अध्ययन को वर्णनात्मक और एककालिक स्वरुप प्रदान किया। 1982 में हेग में अंतराष्ट्रीय भाषाविज्ञान परिषद् का प्रथम अधिवेशन हुआ और एककालिक अध्ययन के सिद्धांत को विश्व स्तर पर स्वीकार किया गया। इसके फलस्वरूप विभिन्न देशों में भाषाविज्ञान के

चार केंद्र स्थापित हुए, जिन्हें लन्दन स्कुल, अमेरिकन स्कुल, प्राग स्कुल और कोपनहैगन स्कुल के नाम से नामांकित किया। लन्दन स्कूलों के विद्वानों में डेनियल जोन्स ने मान स्वरों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस स्कुल का अध्ययन क्षेत्र प्रमुख रूप से ध्वनिविज्ञान रहा। अमेरिकन स्कुल ने भाषाविज्ञान के सभी क्षेत्रों में काम किया और स्वनिम और रूपिम की संकल्पनाएँ विश्व के भाषावैज्ञानिकों के सामने रखीं इस स्कुल ने वाक्यविज्ञान, लिपिविज्ञान और भाषाभूगोल के अध्ययन पर विशेष महत्व दिया। इस स्कुल के प्रमुख आचार्य ब्लुम्फिल्ड द्वारा रचित ग्रन्थ 'लैंग्वेज' भाषाविज्ञान की बाइबल है। प्राग स्कुल ने स्वराघात, बलाघात, संगम आदि पर विशेष कार्य किया। जैकबसन, हैले और फांट इसके प्रमुख आचार्य रहे हैं। कोपनहैगन स्कुल का क्षेत्र ग्लोसिमेटिक्स माना जाता है। यह एक जटिल विषय है, जिसका संबंध 'ग्लोसिम' से है, जो ध्वनि की 'स्वनिम' जैसी एक इकाई है। कहा जाता हैं आधुनिक युग में पाश्चात्य विद्वानों ने भाषाविज्ञान के अध्ययन को जो गहराई प्रदान की है, उससे कहीं अधिक गहराई प्राचीन भारतीय चिंतकों की कृतियों में पाए जाते हैं।

मूलत: कहा जा सकता है कि भाषाविज्ञान का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। समस्त संसार की विगत और वर्तमान भाषाओं का अध्ययन इसकी परिधि में आता है। एक तरफ से यह तो निर्धारित सिद्धांतों के आधार पर भाषा विशेष का अध्ययन करता है, तो दूसरी ओर विभिन्न भाषाओं के अध्ययन द्वारा कुछ सुनिश्चित नियमों का निर्धारण भी करता है। भाषाविज्ञान के स्वरूप पर विचार करने से मालूम पड़ता है कि भाषाविज्ञान का काम ध्वनि, शब्द, पदरचना, वाक्यरचना और अर्थ आदि भाषिक इकाइयों से संबंधित नियमों का अध्ययन कराना होता हैं।

1.6 भाषाविज्ञान के अध्ययन से लाभ

भाषा-विज्ञान के अध्ययन से हमें अनेक लाभ होते हैं, जैसे-

1. अपनी चिर-परिचित भाषा के विषय में जिज्ञासा की तृप्ति या शंकाओं का निर्मूलन।
2. ऐतिहासिक तथा प्रागैतिहासिक संस्कृति का परिचय।
3. किसी जाति या सम्पूर्ण मानवता के मानसिक विकास का परिचय।
4. प्राचीन साहित्य का अर्थ, उच्चारण एवं प्रयोग संबंधी अनेक समस्याओं का समाधान।
5. विश्व के लिए एक भाषा का विकास।
6. विदेशी भाषाओं को सीखने में सहायता।
7. अनुवाद करने वाली तथा स्वयं टाइप करने वाली एवं इसी प्रकार की मशीनों के विकास और निर्माण में सहायता।
8. भाषा, लिपि आदि में सरलता, शुद्धता आदि की दृष्टि से परिवर्तन-परिवर्द्धन में सहायता।

इन सभी लाभों की दृष्टि से आज के युग में भाषा-विज्ञान को एक अत्यन्त उपयोगी विषय माना जा रहा है और उसके अध्ययन के क्षेत्र में नित्य नवीन विकास हो रहा है।



1.7 सारांश

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भाषाविज्ञान भाषा का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो भाषा के नियंत्रक भी है। भाषा का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन से न केवल ध्वनि, व्याकरण, और अर्थ का अध्ययन किया जाता है, अपितु इसमें भाषा परिवारों के इतिहास पर भी चर्चा की जाती हैं। मूलत: भाषा अगर मनुष्य के विचारों को व्यक्त करने का साधन है, तो भाषाविज्ञान उस व्यक्त भाषा को शुद्ध करने का एक जरिया है।



1.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : भाषाविज्ञान के अर्थ एवं स्वरूप की चर्चा ऊपर विस्तारपूर्वक किया गया है, कृपया उन्हें देखें।

प्रश्न 2 का उत्तर : भाषाविज्ञान के विभिन्न विद्वान जैसे- डॉ: भोलानाथ तिवारी, डॉ: देवेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ: श्यामसुन्दर दास इत्यादि के परिभाषाओं को जानने के लिए ऊपर पढ़ें।



1.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. डॉ शम्भुनाथ द्विवेदी, भाषाविज्ञान और शैलीविज्ञान, हिंदी बुक सेंटर,नयी दिल्ली।
6. बद्रीनाथ कपूर, वाक्य-संरचना और विश्लेषण: नए प्रतिमान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।



1.10 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. भाषा की उत्पत्ति कब हुई ?
2. भाषा विज्ञान के प्रमुख विद्वानों का नाम उल्लेख करें ?
3. डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार भाषा विज्ञान की परिभाषा दीजिये ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1. भाषा-विज्ञान संबंधी अवधारणाओं पर आलेख प्रस्तुत कीजिए।
2. भाषा विज्ञान के अध्ययन से क्या लाभ है ?
3. भाषा-विज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए इसकी आवश्यकताओं पर चर्चा कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 2 : भाषा के विविध रूप और भाषा परिवर्तन के कारण

इकाई की रूपरेखा

2.1 उद्देश्य
2.2 प्रस्तावना
2.3 भाषा के विविध रूप
2.4 भाषा परिवर्तन के कारण
2.5 भाषा परिवर्तन की दिशाएँ
  2.5.1 ध्वनि परिवर्तन
  2.5.2 शब्द परिवर्तन
  2.5.3 रूप परिवर्तन
  2.5.4 वाक्य परिवर्तन
  2.5.5 अर्थ परिवर्तन
2.6 सारांश
2.7 प्रगति विवरण(केवल रूपरेखा)
2.8 अधिक जानने के लिए पढ़े
2.9 अभ्यास प्रश्न

2.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- भाषा के विषय में सामान्य ज्ञान को जानेंगे।
- भाषा के विकास और परिवर्तन के कारणों को समझ पाएंगे।
- भाषा के विविध रूपों से परिचित होंगे।
- भाषा परिवर्तन के दिशाओं को जान सकेंगे।

2.2 प्रस्तावना

भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को दूसरों के समक्ष व्यक्त कर पाते हैं। भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से बना है, जिसका अर्थ है- बोलना या कहना। अर्थात भाषा वह है जिसे बोला जाए। भाषा वक्ता के विचारों को श्रोता तक पहुँचाती है। भाषा चिरपरिवर्तनशील है। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। परिवर्तन को ही विकास कहा जाता है। संसार की अन्य वस्तुओं की भाँति भाषा में परिवर्तन का क्रम अनिवार्य है। भाषा में परिवर्तन होना उसका विकास है। किसी भाषा समाज के लोग अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक

और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण आवश्यकतानुसार अपनी भाषा में नवीन शब्दों का संयोजन करते हैं या दूसरी भाषा से शब्द ग्रहण करते हैं। इससे एक भाषा की शब्द संपदा में बृद्धि होती है और एक भाषा अपनी पुरानी रूप को छोड़कर नयी रूप धारण करती है अर्थात् भाषा परिवर्तित होती है। कभी-कभी सामान्य वर्ग के लोगों को एक मानक भाषा के शुद्ध उच्चारण करने और उसे समझने में कठिनाई होती है, तब वे अपनी सुविधानुसार उसमें कुछ परिवर्तन कर देते हैं। इस प्रकार विविध कारणों से भाषा परिवर्तित होती रहती है।

2.3 भाषा के विविध रूप

भाषा का प्रयोग व्यक्ति द्वारा किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के भाषा बोलने का तरीका अलग-अलग होता है। प्रत्येक व्यक्ति का उच्चारण, शब्द प्रयोग, वाक्य-विन्यास अलग-अलग होता है। इस प्रकार देखा जाए तो वक्ता के भेद से वाक्य के अनेक रूप हो जाते हैं। मुख्यत: इतिहास, क्षेत्र, प्रयोग, निर्माण, मानकता और मिश्रण के आधार पर भाषा के विविध रूप पाए जाते हैं। उदाहरण स्वरूप इतिहास के आधार पर भाषा के चार रूप मिलते हैं- मूलभाषा, प्राचीनभाषा, मध्यकालीन भाषा, आधुनिक भाषा। भूगोल या क्षेत्र के आधार पर व्यक्ति बोली, स्थानीय बोली, उपबोली, बोली, उपभाषा आदि भाषा के रूप पाए जाते हैं। प्रयोग के आधार पर साहित्यिक भाषा, बोलचाल की भाषा, जातीय भाषा, व्यावसायिक भाषा, दफ्तरी भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, गुप्तभाषा, जीवित भाषा, मृतभाषा आदि भाषा के रूप पाए जाते हैं। निर्माण के आधार पर भाषा के दो भेद हैं- सहज भाषा और कृत्रिम भाषा। मानकता या शुद्धता के आधार पर मानक या परिनिष्ठित भाषा, अमानक भाषा, अपभाषा आदि भेद पाए जाते हैं। मिश्रण के आधार पर भाषा के भेद हैं पिजिन और क्रियोल। इनमें से कुछ प्रमुख भाषा रूपों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित हैं-

- **मानक भाषा**- किसी देश के सभ्य और सुशिक्षित वर्ग द्वारा दैनिक व्यवहार एवं साहित्य रचना में प्रयुक्त होनेवाली परिनिष्ठित भाषा ही मानक भाषा होती है। हिंदी का 'मानक' शब्द अंग्रेजी के 'Standard' शब्द के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, जिसका अर्थ है - स्तर। मानक शब्द से अभिप्राय है कि किसी भी वस्तु, विषय या संदर्भ का वह श्रेष्ठ रूप जो अपने-आप में एक आदर्श हो। भाषा के संदर्भ में हम कह सकते हैं कि भाषा का एक ऐसा रूप जिसका प्रयोग उसके अपने प्रयोक्ताओं के अतिरिक्त अन्य भाषा-भाषी लोग भी एक आदर्श मानकर करे तो उसे मानक भाषा कहा जाता है। मानक भाषा व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध होती है।
- **अमानक भाषा**- अमानक का अर्थ है- जो मानक न हो अमानक भाषा मानक भाषा का विपरीत रूप होता है। हिन्दी के 'अमानक' शब्द के लिए अंग्रेजी के 'Non-Standard' शब्द का प्रयोग होता है। यह भाषा अस्थिर होती है। इसमें व्याकरण का ध्यान नहीं रखा जाता। अमानक भाषा व्याकरण सम्मत नहीं होती और इसमें काफी अशुद्धियाँ होती हैं।

- **अपभाषा**– यह भाषा का एक विकृत या अपभ्रष्ट रूप है। भाषा के इस रूप का प्रयोग प्राय : अशिक्षित या अर्धशिक्षित वर्ग के लोग करते हैं। इसमें बोलचाल के ठेठ और अश्लील शब्दों का प्रयोग होता है। यह भाषा व्याकरण सम्मत नहीं होती है।
- **राष्ट्रभाषा**– राष्ट्रभाषा एक राष्ट्र की प्रतिनिधि भाषा होती है। इसके माध्यम से भावात्मक एकता और राष्ट्रीय गौरव का बोध होता है। भारत में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। भारत के लोग भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी होने के बावजूद हिंदी भाषा के माध्यम से एक-दूसरे के साथ सम्पर्क कर सकते हैं। एक सार्वभौम राष्ट्र में राष्ट्रभाषा का होना अनिवार्य है। महात्मा गांधी जी के अनुसार – 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।'
- **राजभाषा**– राजकाज में प्रयुक्त होनेवाली भाषा को राजभाषा कहते हैं अर्थात इसका प्रयोग राज्य के कामों में होता है। 14 सितम्बर सन् 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा स्वीकारा गया। भारत की संविधान में अनुच्छेद 343 से 352 तक राजभाषा के सम्बंध में व्यवस्था की गयी। राजभाषा किसी देश या राज्य की घोषित भाषा होती है, जो कि सभी राजकीय प्रयोजन अर्थात सरकारी काम-काज में प्रयोग होती है।
- **कृत्रिम भाषा**– गहन-मनन चिंतन के बाद ऐसी एक भाषा बनाई जाती है जो सभी भाषाओं के लिए एक सामान्य भाषा का काम करे। अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार के लिए इस प्रकार की भाषा बनाई जाती है। कृत्रिम भाषा के दो रूप मिलते हैं – गुप्त भाषा और सामान्य भाषा।
  1. **गुप्त भाषा** – गुप्त भाषा का प्रयोग प्राय: सेना, गुप्तचर विभाग, चोर, डाकु, क्रांतिकारिओं में होता है। इसका प्रमुख उद्देश्य है अपनी बात को अनपेक्षित लोगों को न मालूम होने देना। गुप्त भाषा बातचीत के लिए बनती है और प्रचलित भाषा से दूर रखी जाती है ताकि कोई समझ न सकें।
  2. **सामान्य भाषा** – सामान्य भाषा प्रचलित भाषा से मिलती जुलती है और ऐसे बनाई जाती है ताकि लोग उसे समझे और प्रयोग कर पाए। डॉ. जमेनहाफ़ की बनाई गयी 'एसपरैंतो' भाषा ऐसी भाषाओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध है और यह भाषा पूरे संसार के लिए बनाई गयी है। एसपरैंतो भाषा का प्रसार बहुत से देशों में हुआ है। विज्ञापन तथा कुछ अन्य विषयों से सम्बंधित पत्रिकाएँ इस भाषा में प्रकाशित होती है।
- **मिश्रित भाषा**– जिस भाषा में एक से अधिक भाषाओं का मिश्रण हो, उसे मिश्रित भाषा कहते हैं। बंदरगाहों में मिश्रित भाषा का प्रयोग किया जाता है। चीन के कुछ नगरों में प्रयुक्त 'पिजिन इंग्लिश', मॉरीशस में प्रयोग होनेवाली 'क्रियोल' मिश्रित भाषा के उदाहरण है। ऐसी भाषा में न कोई साहित्य की रचना की जा सकती है और न इस भाषा का कोई वैज्ञानिक और व्यवस्थित व्याकरण की रचना करना सम्भव है।
- **साहित्यिक भाषा**– साहित्यिक भाषा का प्रयोग साहित्य के क्षेत्र में होता है। यह भाषा

बोलचाल की भाषा की तुलना में कठिन, अलंकृत और परम्परानुगामिनी होती है।

- **विशिष्ट भाषा**- व्यक्ति आजीविका के लिए विभिन्न पेशों से जुड़े रहते हैं। प्रत्येक पेशे या व्यवसाय की अपनी अलग-अलग शब्दावली होती है। इसका प्रयोग व्यक्ति अपनी दैनिक जीवन में करता है। सरकार, लुहार, इंजीनियर, डॉक्टर, मजदूर, किसान, शिक्षक वकील की भाषा अलग-अलग होती है और अपने क्षेत्र में विशिष्ट होती है।
- **व्यक्ति-बोली**- एक व्यक्ति की भाषा को व्यक्ति-बोली कहा जाता है। यह भाषा का लघुतम रूप है। मनुष्य हर क्षण बदलता रहता है, इसीलिए एक व्यक्ति की बोली भी सर्वदा एक जैसी नहीं रहती।
- **उपबोली या स्थानीय बोली**- उपबोली या स्थानीय बोली एक छोटे से प्रांत में बोली जाती है। यह बहुत सी व्यक्ति-बोलियों का सामूहिक रूप है।
- **बोली**- बहुत-सी मिलती-जुलती उपबोलियों का सामूहिक रूप बोली है अर्थात् एक बोली के अंतर्गत कई उपबोलियाँ होती है। यह ध्वनि, रूप, वाक्य-गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से किसी भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होता है।



महत्वपूर्ण बिंदु

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतराष्ट्रीय रूप है। परन्तु हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी सरकारी कामकाज में किया जा सकता है (राजभाषा अधिनियम की धारा 3)।

2.4 भाषा परिवर्तन के कारण

भाषा में परिवर्तन उसके पाँचों ही रूपों, जैसे - ध्वनि, शब्द, वाक्य, रूप और अर्थ में होता है। भाषा में परिवर्तन या विकास जिन कारणों से होता है, उन्हें मुख्यत: दो भागों में विभाजित किया गया है। एक आंतरिक कारण और दूसरा बाह्य कारण। आंतरिक कारण में वे कारण सम्मिलित होते हैं, जो प्रयोक्ता की शारीरिक या मानसिक योग्यता सम्बंधी स्थिति से सम्बंध रखते हैं। बाह्य कारण में वे कारण आते हैं, जो बाहर से भाषा को प्रभावित करते हैं। यहाँ दोनों कारणों के अंतर्गत आनेवाले कुछ प्रमुख कारणों पर संक्षेप में विचार प्रस्तुत किया जा रहा है।

क- आंतरिक कारण - जिस परिवर्तन का संबंध स्वंय भाषा से होता है या भाषा प्रयोक्ता से होता है, उसे आंतरिक या अभ्यंतर, भीतरी कारण कहा जाता है। प्रमुख आंतरिक कारण इस प्रकार है -

- **प्रयोग से घिस जाना** - अधिक प्रयोग के कारण धीरे-धीरे संसार की अन्य सभी वस्तुओं

की भाँति भाषा में भी परिवर्तन होता है।

- **अनुकरण की अपूर्णता** – भाषा अर्जित सम्पत्ति है। भाषा का अर्जन मनुष्य अनुकरण के सहारे समाज से करता है। अनुकरण में अनुकर्ता कुछ भाषिक तथ्यों को छोड़ देता है और कुछ को अपनी ओर से अनजाने ही जोड़ देता है। इस तरह अनुकरण में भाषा का परिवर्तन पनपता रहता है। अनुकरण प्राय: अपूर्ण होता है। अशिक्षा या अज्ञानता के कारण भी अनुकरण अपूर्ण रहता है। भाषा ग्रहण एक मानसिक प्रक्रिया है। भाषा सुनकर सीखी जाती है। भाषा सुनते समय असावधान रहने से अनुकरण भी त्रुटिपूर्ण होता है।
- **मुख-सुख या प्रयत्न** – लाघव- मनुष्य की यह प्रवृत्ति है कि वह कम से कम प्रयास से अधिक से अधिक काम करना चाहते हैं। बोलने में भी इसी प्रकार कम से कम प्रयत्न से लोग शब्दों को उच्चरित करना चाहते हैं और इसे कम से कम प्रयास या प्रयत्न की लघुता के कारण शब्दों को सरल बनाते हैं जैसे – कृष्ण का कन्हैया, धर्म का धरम, भक्त का भगत आदि। प्रयत्न की लघुता के लिए कुछ शब्द छोटे बना लिए जाते हैं। उदाहरण के लिए उपाध्याय का ओझा, कब ही का कभी, हस्ती का हाथी आदि।
- **मानसिक स्तर या बोद्धिक भिन्नता** – बोलने वालों के मानसिक स्तर में परिवर्तन होने से विचारों में परिवर्तन होता है, जिससे अभिव्यंजना के ढंग में परिवर्तन होता है और इसका प्रभाव भाषा पर भी पड़ता है।
- **जातीय मनोवृत्ति** – जातीय मनोवृत्ति के कारण भी भाषा में परिवर्तन हो जाता है। संसार की प्रत्येक जाति की अलग-अलग प्रवृत्ति और विशेषताएँ होती है, अगर ऐसा नहीं होता तो प्रत्येक जाति की बौद्धिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक उपलब्धियाँ एक जैसी होती है। इन प्रवृत्तिओं के अनुसार भी भाषा में परिवर्तन होता है।
- **बल** – बोलते समय वाक्य या शब्द के किसी अंश पर अधिक बल प्रयोग किया जाता है। इसीलिए सच के स्थान पर सच्च, पका के स्थान पर पक्का कहा जाता है। भाव के अधिकता के कारण लोग किसी शब्द को दो-दो बार कहते हैं, जैसे- गरम-गरमागरम, फट-फटाफट आदि।

ख- बाह्य कारण – जिस परिवर्तन का संबंध भाषा के बाहरी तत्वों से होता है, उसे बाह्य कारण कहते हैं। प्रमुख बाह्य कारण इस प्रकार हैं-

- **भौगोलिक प्रभाव**- भाषा पर सबसे अधिक प्रभाव पड़नेवाला बाह्य कारण है, जो भौतिक वातावरण है। भौतिक वातावरण के कारण ही एक भाषा के अंतर्गत अनेक बोलियाँ बन जाती हैं। गर्मी या सर्दी के अधिक या कम होने से व्यक्ति की जीविका, रहन-सहन, स्वभाव आदि पर जब प्रभाव पड़ता है, तो भाषा भी प्रभावित होती है। मैदानी इलाकों में लोगों को एक-दूसरे के साथ सम्पर्क रखने में कोई असुविधा नहीं होती है, पर पहाड़ी इलाकों में जहाँ आने-जाने की कोई सुविधा न हो या कम हो, वहाँ लोग अकेले रहने के आदी हो जाते हैं। फलस्वरूप उनकी भाषा का अलग-अलग विकास होता है

और कई भाषाओं या अनेक बोलियों का विकास हो जाता है।

- **सांस्कृतिक प्रभाव**- संस्कृति समाज का प्राण होता है। अत: संस्कृति का भी प्रभाव भाषा पर पड़ता है। संस्कृति से जुड़ी संस्थाएँ प्राचीन शब्दों को फिर से लाती है और फलस्वरूप विचार में परिवर्तन होता है, जिससे अभिव्यक्ति की शैली प्रभावित होती है। व्यापार, राजनीति तथा धर्म आदि के कारण कभी-कभी दो संस्कृतियों का मिलन होता है, इसका भी भाषा के परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है। दो संस्कृतियों के बीच विचार-विनिमय के कारण एक-दूसरे के कला, साहित्य प्रभावित होती है, जिसका भी भाषा के परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है।
- **ऐतिहासिक प्रभाव**- भाषा के विकास में इतिहास का प्रभाव सर्वाधिक रहता है। जिन ऐतिहासिक कारणों का प्रभाव भाषा पर पड़ता है उनमें राजसत्ता में परिवर्तन, बाह्य जातियों का आगमन, क्रांति, व्यापारिक संबंध आदि कारण आते हैं।
- **साहित्यिक प्रभाव**- साहित्य समाज का दर्पण होता है, साहित्यिक भाषा समाज के दर्पण के रूप में समस्त विचारों को अभिव्यक्त करती है। भारत में संस्कृत का एकछत्र प्रभाव था। भक्ति आंदोलन के बाद ऐसा परिवर्तन हुआ कि लेखक और पाठक सभी हिंदी भाषा का प्रयोग करने लगे। कबीर, जायसी, तुलसी आदि भक्त कवियों ने हिंदी के विभिन्न बोलियों की अभिव्यंजना की।
- **सामाजिक प्रभाव**- समाज की स्थिरता, अस्थिरता, युद्ध, शांति, जय-पराजय पर भाषा का प्रभाव पड़ता है। समाज की स्थिरता एवं शांति के समय साहित्य, कला, संगीत, धर्म और दर्शन का विकास होता है। नए-नए शब्दों का विकास होता है। वर्तमान समय में लोगों की व्यस्तता बढ़ गयी है। लोग एक यांत्रिक जीवन जी रहे हैं। भौतिक उपलब्धियों के लिए लोग संघर्ष कर रहे हैं। लोगों के सुविधानुसार संक्षिप्त शब्दावली का प्रयोग बढ़ रहा है।
- **वैयक्तिक प्रभाव**- महापुरुष और महत्वपूर्ण व्यक्तियों का प्रभाव भाषा पर पड़ता है। जैसे- गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी भाषा को, सूरदास ने ब्रजभाषा को, कबीरदास ने सधुक्कड़ी भाषा को प्रभावित किया और अपनी लेखनी से विकसित किया। भारत में हिंदुस्तानी भाषा के विकास में महात्मा गांधी जी का योगदान महत्वपूर्ण रहा। इसी प्रकार किसी भाषा के परिवर्तन या विकास में वैयक्तिक प्रभाव भी देखा जाता है।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. भाषा परिवर्तन के पांच रूपों का वर्णन कीजिये।

प्रश्न 2. भाषा विज्ञान की साहित्यिक प्रभाव का उल्लेख कीजिये।

2.5 भाषा परिवर्तन की दिशाएँ

भाषा के पाँच अंग हैं, जो इस प्रकार है- ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य और अर्थ। भाषा का परिवर्तन इन पाँच अंगों में होता है, जिन्हें ध्वनि परिवर्तन, शब्द परिवर्तन, रूप परिवर्तन, वाक्य परिवर्तन और अर्थ परिवर्तन कहा जाता है।

2.5.1 ध्वनि परिवर्तन

ध्वनि परिवर्तन से आशय है किसी ध्वनि का परिवर्तन होना, जैसे- घोटक से घोड़ा, दधि से दही। ध्वनि परिवर्तन मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं। प्रथम स्वयंभू परिवर्तन जो भाषा के प्रवाह में होते हैं और कहीं भी घटित हो सकते हैं। इनके लिए किसी विशेष परिस्थिति की आवश्यकता नहीं होती। दूसरे प्रकार के ध्वनि परिवर्तन को परोद्भूत परिवर्तन कहा जाता है। ध्वनि परिवर्तन की प्रमुख दिशाएँ निम्नलिखित हैं-

1. **लोप**- लोप से आशय है जो ध्वनि शब्द में पहले से है, उसका लोप हो जाना। कभी-कभी बोलने में मुख-सुख या शीघ्रता के कारण कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है। लोप तीन प्रकार के होते हैं- स्वर लोप, व्यंजन लोप, स्वर-व्यंजन लोप।
   - **स्वर लोप**- स्वर लोप को आदि, मध्य और अंत्य की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जाता है- आदि स्वर लोप के कुछ उदाहरण इस प्रकार है - अनाज-नाज, अभ्यंतर-भीतर, एकादश-ग्यारह आदि। मध्य स्वर लोप के कुछ उदाहरण इस प्रकार है- बलदेव-बल्देव, लगभग-लग्भग। अंत्य स्वर लोप के उदाहरण है- आप, तुम, हम, सब आदि के उच्चारण में आप्, तुम्, सब्, हम् हो गये हैं, अर्थात अंतिम 'अ' स्वर का लोप हो गया है।
   - **व्यंजन लोप**- स्वर लोप की भाँति व्यंजन लोप को भी आदि, मध्य और अंत्य तीन भागों में विभाजित किया गया है। आदि व्यंजन लोप के कुछ उदाहरण है- स्थाली-थाली, मशान-मसान, स्थानक-थाना, स्कंध-कंधा आदि मध्य व्यंजन लोप के उदाहरण है- सूची-सूई, घरद्वार-घरबार, प्रिय-पिया सप्त-सात आदि, अंत्य व्यंजन लोप के कुछ उदाहरण है- Bomb- बम, command- कमांड आदि।
   - **स्वर-व्यंजन लोप**- आदि स्वर-व्यंजन लोप के उदाहरण है- नेकटाई से टाई, आदित्यवार से इतवार आदि। मध्य स्वर-व्यंजन लोप के उदाहरण है- अग्रहायण-अगहण, भाण्डागार से भण्डार, बरुजीवी से बरई आदि। अंत्य स्वर-व्यंजन लोप के उदाहरण है- माता-माँ, नीलमणि-नीलम, कुंचिका-कुंजि आदि।

2. **आगम**- आगम का अर्थ होता है किसी ऐसे ध्वनि का आ जाना जो पहले से शब्द में न हो। आगम लोप का विपरीत है। लोप की भाँति आगम के भी तीन भेद है, लेकिन मुख्यत: स्वरागम और व्यंजनागम के रूप ही देखने को मिलता है।
   - **स्वरागम**- आदि स्वरागम में शब्द के आरम्भ में कोई स्वर आ जाता है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है.- स्कूल-इस्कूल, स्टेशन-इस्टेशन, स्नान-अस्नान आदि। मध्य स्वरागम -कभी-कभी उच्चारण की सुविधा के लिए कुछ शब्दों को बीच में तोड़कर दो शब्दों में विभक्त किया जाता है, जैसे- इंद्र-इंदर, पृथ्वी-पृथिवी, जन्म-जनम आदि। अंत्य स्वरागम के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं- दवा-दवाई, पत्र-पतई आदि।
   - **व्यंजनागम**- आदि व्यंजनागम का प्रयोग बहुत कम होता है, क्योंकि व्यंजनों को आदि में लाने से शब्द के उच्चारण में सुविधा नहीं होती। आदि व्यंजनागम के कुछ उदाहरण हैं- ओष्ठ-होंठ, अस्थि-हड्डी आदि। मध्य व्यंजनागम के कुछ उदाहरण हैं- सुनर-सुंदर, शाप-श्राप, पर्ण-प्रण आदि। अंत्य व्यंजनागम के उदाहरण इस प्रकार है- कल-काल्ह, चील-चील्ह, परवा-परवाह आदि।
3. **विपर्यय**- विपर्यय से आशय है किसी शब्द में दो ध्वनियों का एक-दूसरे के स्थान पर चले जाना। जैसे - चिह्न का चिन्ह। विपर्यय कई प्रकार के हैं - स्वर विपर्यय, व्यंजन विपर्यय, एकांगी विपर्यय, आद्य शब्दांश विपर्यय। स्वर विपर्यय के दो भाग हैं- पार्खवर्ती स्वर विपर्यय और दूरवर्ती स्वर विपर्यय। पार्खवर्ती स्वर विपर्यय के उदाहरण । (अंग्रेजी), दूरवर्ती स्वर विपर्यय के उदाहरण हैं - कुछ-कछु, अनुमान-उनमान आदि। व्यंजन विपर्यय के भी दो भाग है-प्रथम पार्खवर्ती व्यंजन विपर्यय के उदाहरण हैं- ब्राह्मण-ब्राम्हण, ब्रह्म-ब्रम्ह आदि। दूरवर्ती व्यंजन विपर्यय के उदाहरण हैं- अमरुद-अरमूद, तमग-तगमा, वाराणसी-बनारस आदि। कभी-कभी एक स्वर या व्यंजन अपना स्थान छोड़कर दूसरी जगह पर चला जाता है, किंतु उसके स्थान पर कोई दूसरा नहीं आता, ऐसे विपर्यय को एकांगी विपर्यय कहा जाता है। जैसे-बिंदु-बूंद। कभी-कभी दो शब्दों के आरम्भ के अंशों में विपर्यय हो जाता है, उसे आद्य शब्दांश विपर्यय कहा जाता है, जैसे- घोड़ागाड़ी-गोड़ाघाड़ी, चूल्हा-चौका-चौल्हा-चूका आदि।
4. **समीकरण**- कभी-कभी किसी शब्द में दो पास-पास की असमान ध्वनियाँ समान हो जाती है, इसे समीकरण कहा जाता है। स्वर और व्यंजन के आधार पर इसके भी कई भेद किए जाते हैं। लेकिन व्यंजन के रूप अधिक देखने को मिलता है -

- **दूरवर्ती पुरोगामी व्यंजन समीकरण**- इसमें ध्वनियाँ पास-पास न रह कर दूर-दूर रहती है और पहली ध्वनि दूसरी को प्रभावित करती है। जैसे संस्कृत का 'भ्रष्ट' भोजपूरी में 'भरभट' हो गया है।
- **पाखवर्ती पुरोगामी व्यंजन समीकरण**- इसमें ध्वनियाँ पास-पास होती है। जैसे-चक्र-चक्क, पद्म-पद्द, लग्न-लग्ग आदि।
- **दूरवर्ती पश्चगामी व्यंजन समीकरण**- इसमें दूसरी ध्वनि पहली को प्रभावित करती है, जैसे- नील-लील।
- **पाखवर्ती पश्चगामी व्यंजन समीकरण**- पाखवर्ती पश्चगामी व्यंजन समीकरण के उदाहरण है- धर्म-धम्म, कर्म-कम्म, भक्त-भत्त आदि।

5. **विषमीकरण** - यह समीकरण का विपरीत है। इसमें दो एक जैसी ध्वनियों में एक ध्वनि किसी समान ध्वनि के प्रभाव से अपना स्वरुप छोड़कर दूसरी बन जाती है। स्वर और व्यंजन के आधार पर इसके भी दो-दो भेद हैं -
   - **पुरोगामी स्वर विषमीकरण**- पुरोगामी स्वर विषमीकरण के उदाहरण है- पुरुष-पुरिस (प्राकृत)।
   - **पश्चगामी स्वर विषमीकरण**- पश्चगामी स्वर विषमीकरण के उदाहरण हैं- मुकुट-मउर, नूपुर-नउर आदि।
   - **पुरोगामी व्यंजन विषमीकरण**- इसमें प्रथम व्यंजन ज्यों का त्यों रहता है और दूसरा परिवर्तित हो जाता है। जैसे-लांगूली-लंगूर, कंकण-कंगन आदि।
   - **पश्चगामी व्यंजन विषमीकरण**- इसमें प्रथम व्यंजन में विकार होता है। नवनीत-लयनू(भोजपूरी), साबस-चाबस (भोजपूरी) आदि।
6. **महाप्राणीकरण**- कभी-कभी अल्पप्राण ध्वनियाँ महाप्राण हो जाती है, जैसे - ग्रहण-घिरना, वाष्प-भाप, गृह-घर आदि।
7. **अल्पप्राणीकरण**- कभी-कभी महाप्राण ध्वनियाँ अल्पप्राण भी हो जाती है, जैसे- सिंधु-हिंदु, भूख-भूक, हाथ-हात आदि।
8. **घोषीकरण**- कभी-कभी कुछ अघोष ध्वनियाण घोष हो जाती है, जैसे - साक-साग, कंकण-कंगन, मकर-मगर आदि।
9. **अघोषीकरण**- अघोषीकरण में घोष ध्वनियाँ अघोष हो जाती है, जैसे- मदद-मदत, नगर-नकर, गगन-गकन आदि।
10. **उष्मीकरण**- कभी-कभी कुछ ध्वनियाँ ऊष्म में परिवर्तित हो जाती है।
11. **स्वत : अनुनासिकता**- शब्दों के विकास में अनुनासिकता दो प्रकार की आ सकती है-सकारण और अकारण। सकारण अनुनासिकता के उदाहरण हैं- भंग-भाँग, कंपन-काँपना आदि। अकारण अनुनासिकता के उदाहरण हैं- सर्प-

साँप,भ्रू-भौं। अकारण अनुनासिकता में मूल शब्द में अनुनासिकता नहीं थी किंतु परिवर्तित रूप में अनुनासिकता है। इसे ही स्वत: अनुनासिकता कहते हैं।



महत्वपूर्ण बिंदु

- भाषा की उत्पत्ति में भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण है।
- मनुष्य का शारीरिक बनावट, स्वभाव और ध्वनि-पद्धति जलवायु से प्रभावित होते हैं।
- बोली जाने वाली भाषा, उच्चारण और शब्दावली में अंतर होता है। भौगोलिक विभाजन स्थानीय भाषाओं और बोलियों को उत्पत्ति करती है।

2.5.2 शब्द परिवर्तन

भाषा का शब्द-समूह परिवर्तित होता रहता है, शब्द-समूह में परिवर्तन दो प्रकार से होता हैं- प्रथम प्राचीन शब्दों का लोप और दूसरा नवीन शब्दों का आगमन।

1. **प्राचीन शब्दों का लोप**- शब्दों के लोप होने के जितने भी कारण हैं, उन कारणों के दो पक्ष हैं- प्रथम वैयक्तिक पक्ष और दूसरा सामाजिक पक्ष। वैयक्तिक पक्ष के अन्तर्गत आनेवाले कारण बोलने वाले के मस्तिष्क में रहता है। शब्द कभी-कभी घिस जाने के कारण अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं कर पाता तो बोलने वाले उसे व्यर्थ समझ कर छोड़ देते हैं। समाज की कुछ रीतियों के समाप्त हो जाने के कारण उनसे सम्बंधित शब्द भी छूट जाते हैं, इस प्रकार होनेवाले शब्दों के लोप सामाजिक पक्ष के कारणों में आते हैं। कुछ प्रमुख लोप के कारण निम्नलिखित हैं-

   क. रीति या कर्मों का लोप - समाज में सर्वदा एक ही प्रकार के रीति-रिवाजों का प्रचलन नहीं होता। समाज में प्रचलित रीति-रिवाज, कर्मों के लुप्त हो जाने से उनसे सम्बंधित शब्द भी भाषा के शब्द-समूह से प्राय: निकल जाते हैं ।

   ख. रहन-सहन तथा खान-पान में परिवर्तन- खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा या इस प्रकार की अन्य चीजों में परिवर्तन का भी शब्द-समूह पर प्रभाव पड़ता है। परिवर्तन होने पर पुरानी चीजें नहीं रहती, अत: उनसे सम्बंधित शब्द भी लुप्त हो जाते हैं।

   ग. अश्लीलता- समाज में प्रचलित कुछ अश्लील शब्दों का प्रयोग शिक्षित तथा सभ्य वर्ग के लोग नहीं करते। फलस्वरूप प्रयोग न होने के कारण ऐसे शब्दों का लोप हो जाता है।

   घ. ध्वनि की दृष्टि से शब्दों का घिस जाना- ध्वनि-परिवर्तन होते-होते

कभी-कभी शब्द इतने घिस जाते हैं कि उन्हें शब्द-समूह से निकल जाना पड़ता है और उनके स्थान पर भाषा में फिर से उनके मूल तत्सम शब्द या अन्य शब्द ले लिये जाते हैं।

ङ. **पर्याय**- कभी-कभी देखा जाता है कि व्यक्ति एक भावना के लिए कई शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहते। शब्दों के अर्थ में यदि कुछ भी अंतर न हो तो उसमें कुछ लुप्त हो जाते हैं। जैसे-संकेत के स्थान पर इशारा प्रयोग किया जाता है, दर्पण के स्थान पर शीशा या आईना प्रयुक्त होता है।

च. **अंधविश्वास**- यह विशेषत: जंगली या अर्द्धसभ्य लोगों की भाषाओं में पाया जाता है। ऐसे लोग अंधविश्वास के कारण कुछ शब्दों का प्रयोग बिल्कुल बंद कर देते हैं।

2. **नवीन शब्दों का आगमन**- भाषा में जिस प्रकार कुछ प्राचीन शब्दों का लोप होता है, उसी प्रकार कुछ नवीन शब्दों का भी आगमन होता है। भाषा में नवीन शब्दों के आगमन के कुछ प्रमुख कारण है-

क. **सभ्यता में विकास**- सभ्यता के विकास के साथ-साथ नवीन वस्तुओं का निर्माण होता है और उनसे संबंधित नवीन शब्दों का भी निर्माण करना पड़ता है।

ख. **चेतना**- राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना के कारण भी भाषा में नवीन शब्दों का आगमन होता है। विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित विचारों की अभिव्यक्ति के लिए हजारों नए शब्दों का निर्माण किया जाता है।

ग. **भिन्न भाषा**- भाषी शब्दों या क्षेत्रों का सम्पर्क- जब दो भिन्न भाषा-भाषी राष्ट्र, प्रांत या क्षेत्र एक-दूसरे के सम्पर्क में आते हैं तो दोनों ही एक-दूसरे से कुछ न कुछ नए शब्द ग्रहण करते हैं।

घ. **दृश्यत्मकता**- कुछ चीजों के विशिष्ट रूप से दिखाई पड़ने के कारण कभी-कभी कुछ शब्द उनकी दृश्यात्मक अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए आ जाते हैं।

ङ. **ध्वन्यात्मकता**- कुछ वस्तुओं की ध्वनि के कारण भी नए शब्द उन ध्वनियों के आधार पर आ जाते हैं।

च. **साम्य और नवीनता लाने के लिए**- साम्य और नवीनता लाने के लिए कभी-कभी लोग नए शब्दों को लाते हैं और वे शब्द चल पड़ते हैं। हिंदी में साम्य के लिए पाश्चात्य के साथ नवीन शब्द पौर्वात्य आ गया है। नवीनता के लिए उपसर्ग आदि जोड़कर भी नवीन शब्द बनाए जाते हैं।

2.5.3 रूप परिवर्तन

भाषा में रूप रचना में भी परिवर्तन होता है। रूप परिवर्तन ध्वनि परिवर्तन तथा शब्द परिवर्तन की तुलना में कम होता है। रूप परिवर्तन सीमित और संकुचित होता है। कुछ प्रमुख रूप परिवर्तन के कारण निम्नलिखित हैं –

क. नियमन– भाषा में कुछ ऐसे नियम होते हैं जो अधिकांश रूपों पर लागू होते हैं, इसके विपरीत कुछ अपवाद होते हैं जो इन नियमों का उल्लंघन करते हैं। नियमित रूपों को स्मरण कर उनका प्रयोग करना सरल होता है, लेकिन नियम विरोधी रूपों को स्मरण करके उनका प्रयोग करना कठिन होता है। इस कठिनाई से बचने के लिए हर भाषा–भाषी के लोग अनियमित रूपों के स्थान पर नियमित रूपों का प्रयोग करना चाहते हैं। जैसे– मर् का मरा, चल् का चला, बैठ का बैठा नियमित रूप है, किंतु 'कर' का किया अपवाद है, फलस्वरूप बहुत से लोग इसका नियमन कर 'कर' से 'करा' का प्रयोग करते हैं या 'कर जाते हैं' या 'कर देते हैं' का प्रयोग करते हैं।

ख. ध्वनि परिवर्तन– ध्वनि परिवर्तन के कारण भी रूप परिवर्तन होता है। ध्वनि परिवर्तन के कारण जब विभक्तियाँ परिवर्तित होते–होते लुप्त हो जाती हैं तो उनके स्थान पर नई भाषिक इकाईयों का प्रयोग करना पड़ता है, जिनके कारण नए रूप बन जाते हैं।

ग. स्पष्टता– भाषा का प्रयोक्ता अपनी अभिव्यक्ति को अधिक से अधिक स्पष्ट करना चाहता है, ताकि उसकी बात को ठीक से समझी जा सके। इसीलिए जब भी किसी रूप में स्पष्टता का अभाव होता है तो नये रूपों का प्रयोग शुरू हो जाता है।

घ. बल– बल देने के प्रयास में भी भाषा का प्रयोग नए रूपों में होने लगता है। जैसे–'अनेक' के स्थान पर 'अनेकों', 'खाकर' के स्थान पर 'खाकर के' आदि।

ङ. नवीनता– कभी–कभी नवीनता लाने के लिए भी रूप परिवर्तन किया जाता है। जैसे–प्रभावशाली के स्थान पर प्रभावी, स्वीकार किया के स्थान पर स्वीकारा आदि। कुछ रूपों के लोप के कारण भी नए रूप उनका स्थान लेते हैं।

च. अज्ञानता– कुछ अस्पष्टता अज्ञानता के कारण होती है, अत: ऐसी अस्पष्टताओं को दूर करने के लिए भी नए रूप लाए जाते हैं।

2.5.4 वाक्य परिवर्तन

जिस प्रकार भाषा में रूप, ध्वनि, शब्द आदि में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार वाकय–रचना भी परिवर्तित होती रहती है। किसी भाषा की वाक्य–रचना हमेशा एक–

सी नहीं रहती। उसमें परिवर्तन होते रहते हैं। मूल भाषा की तुलना में उससे निकली भाषा की वाक्य-रचना में भी परिवर्तन होता है। वाक्य-रचना में परिवर्तन की दिशाएँ निम्नलिखित हैं-

क. वचन सम्बंधी परिवर्तन- भाषाओं के विकास में वाक्य-रचना में वचन सम्बंधी परिवर्तन प्राय: हो जाते हैं। संस्कृत में द्विवचन भी था, अत: दो के लिए अलग कारकीय रूप होते थे और उसके साथ क्रिया के द्विवचन के रूप प्रयुक्त होते थे, हिंदी में आते-आते द्विवचन का लोप हो गया तो 'दो' की संख्या बहुवचन कारकीय रूप में लगाकर द्विवचन का भाव व्यक्त किया जाने लगा।

ख. लिंग सम्बंधी परिवर्तन- संस्कृत में कर्ता या कर्म के लिंग के अनुसार क्रिया परिवर्तित नहीं होती थी, लेकिन हिंदी भाषा में परिवर्तित होती है-
राम: गच्छति=राम जाता है।
सीता: गच्छति=सीता जाती है।

ग. पुरुष सम्बंधी परिवर्तन- वाक्य रचना में पुरुष सम्बंधी परिवर्तन भी देखा जाता है। जैसे -पहले प्रयोग किया जाता था- राम ने कहा कि मैं जाऊगाँ, लेकिन अब कहा जाता है कि राम ने कहा कि वह जाएगा।

घ. लोप- पूर्ववर्ती प्रयोगों में कुछ लुप्त हो जाने की वजह से वाक्य अपेक्षाकृत छोटे हो जाते हैं, जैसे-पूर्ववर्ती प्रयोग-राम नहीं आता है।
वर्तमान प्रयोग-राम नहीं आता।

ङ. आगम- अतिरिक्त शब्दों के आ जाने से भी वाक्य बड़े हो जाते हैं, जैसे-
पूर्ववर्ती प्रयोग-जो लड़का आया था, चला गया।
वर्तमान प्रयोग-वह लड़का जो आया था, चला गया।

च. पदक्रम में परिवर्तन- पदक्रम में परिवर्तन होने से भी वाक्य रचना प्रभावित होती है। विभक्ति लोप, नए प्रयोग आदि के कारण पदक्रम परिवर्तित होता है। जैसे-घर आज जाऊँगा-आज घर जाऊँगा या आज जाऊँगा घर।

छ. अन्य भाषा का प्रभाव- किसी अन्य भाषा के प्रभाव से भाषा की वाक्य-रचना प्राय: प्रभावित होती है, किंतु ऐसा तभी होता है जब प्रभावित करनेवाली भाषा प्रभावित भाषा के बोलने वालों के लिए अत्यावश्यक होकर उनके शिक्षा अथवा व्यवहार का महत्वपूर्ण अंग हो, जैसे- 'कि' का प्रयोग हिंदी में फारसी भाषा का प्रभाव है -'मैं चाहता हूँ कि वह चला जाए'।

ज. बोलने वालों की मानसिक स्थित में परिवर्तन- युद्धकालीन, शांतिकालीन या प्रसन्न व्यक्ति और दुखी व्यक्ति की वाक्य-रचना अलग-अलग होती है। वस्तुत: वाक्य-रचना वक्ता की मानसिक स्थिति पर भी निर्भरशील होती है।

::

झ. **नवीनता**- नवीनता के लिए कभी-कभी नये प्रयोग चल पड़ते हैं। उनसे भी वाक्य-रचना पद्धति में परिवर्तन आते हैं। जैसे- हिंदी भाषा में मात्र शब्द का प्रयोग संज्ञा के बाद होता रहा है, अब नवीनता के लिए संज्ञा के पहले इसका प्रयोग होने लगा है। जैसे- पूर्ववर्ती प्रयोग- मुझे दस रुपये मात्र चाहिए। नवीन प्रयोग- मुझे मात्र दस रुपये चाहिए।

2.5.5 अर्थ परिवर्तन

प्रत्येक शब्द का अर्थ होता है, किंतु यह अर्थ सर्वदा एक नहीं रहता। अर्थ में भी परिवर्तन होता है। जैसे - संस्कृत में 'आकाशवाणी' का अर्थ 'देववाणी' है, लेकिन हिंदी में 'आकाशवाणी' का अर्थ परिवर्तन होकर 'रेडियो' हो गया। अर्थ परिवर्तन किन-किन दिशाओं में होता है, इस विषय पर सर्वप्रथम फ्रांसीसी भाषाविज्ञानवेत्ता 'ब्रील' ने विचार किया था। उन्होंने अर्थ परिवर्तन की तीन दिशाओं के बारे में कहा है- अर्थ-विस्तार, अर्थ संकोच और अर्थादेश।

क. **अर्थ-विस्तार**- जब किसी भाषिक इकाई का अर्थ पहले की तुलना में विस्तृत हो जाए तो उसे अर्थ-विस्तार कहते हैं। अर्थ-विस्तार का अर्थ है अर्थ का सीमित क्षेत्र से निकलकर विस्तृत होना। जैसे- संस्कृत शब्द 'तैल' का अर्थ है 'तिल का तेल'। हिंदी आदि आधुनिक भाषाओं का तेल शब्द इसी तैल से विकसित हुआ है और इसका अर्थ विस्तृत हो गया है। वर्तमान तैल शब्द का प्रयोग सभी चीजों के तेल के लिए होता है। 'अधर' का अर्थ है नीचे का ओष्ठ लेकिन अब दोनों ओष्ठों के लिए 'अधर' शब्द प्रयुक्त होता है। 'महाराज' का अर्थ है राजा, लेकिन अब खाना बनाने वाले ब्राह्मण को भी महाराज कहा जाता है।

ख. **अर्थ-संकोच**- जब किसी भाषिक इकाई का अर्थ पहले की तुलना में संकुचित हो जाए तो उसे अर्थ-संकोच कहते हैं। यह अर्थ-विस्तार का विपरीत है। इसमें विस्तृत अर्थ, संकुचित हो जाती है। जैसे-पहले 'मृग' शब्द का प्रयोग सभी पशुओं के लिए होता था, लेकिन अब 'मृग' का अर्थ है 'हिरण', 'विद्यार्थी' मूलतः वे सभी लोग हैं, जो विद्या के अर्थी हैं चाहे वे स्कूल में पढ़ते हो या न हो, लेकिन अब विद्यार्थी शब्द का प्रयोग सिर्फ छात्र-छात्राओं के लिए होता है। अर्थ संकोच में अर्थ सामान्य से परिवर्तित होकर विशिष्ट हो जाता है। अर्थ-संकोच भाषा की अभिव्यंजना शक्ति की सम्पन्नता का द्योतक है।

ग. **अर्थादेश**- जब किसी शब्द का अर्थ परिवर्तित होकर कुछ से कुछ हो जाए तो उसे अर्थादेश कहते है। जैसे -जंघा घुटने के नीचे के भाग को कहा जाता था, अब घुटने के ऊपरी भाग को जंघा कहते हैं। दुहिता शब्द का अर्थ था दूध दुहने

वाली। लेकिन अब दुहिता शब्द केवल पुत्री के लिए प्रयोग किया जाता है।

अर्थ परिवर्तन बल का अपसरण, वातावरण में परिवर्तन, नम्रता प्रदर्शन, शब्द का एक भाषा से दूसरी भाषा में जाना, शब्द का नए अर्थ में प्रयोग, अशुभ के लिए शुभ भाषा का प्रयोग, अंधविश्वास, सादृश्य, शब्दों का अधिक प्रयोग, व्यक्तिगत योग्यता, शब्दों में अर्थ का अनिश्चिता, अन्य भाषा का प्रभाव, आलांकारिकता आदि कारणों से भी होता है।



2.6 सारांश

भाषा एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं एवं अनुभूतियों को व्यक्त कर पाते हैं। भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से बना है, जिसका अर्थ है- बोलना या कहना। अर्थात भाषा वह है जिसे बोला जाए। भाषा वक्ता के विचारों को श्रोता तक पहुँचाती है। भाषा चिरपरिवर्तनशील है। भाषा के परिवर्तन के कारणों को दो भागों में विभाजित किया जाता है- आंतरिक कारण और बाह्य कारण। भाषा परिवर्तन के अनेक दिशाएँ भी है। भाषा के पाँच अंग है और भाषा का परिवर्तन इन पाँचों अंगों में ही देखा जाता है। इतिहास, क्षेत्र, प्रयोग, निर्माण, मानकता और मिश्रण के आधार पर भाषा के विविध रूप मिलता हैं। उदाहरणस्वरूप इतिहास के आधार पर भाषा के चार रूप मिलते हैं- मूलभाषा, प्राचीनभाषा, मध्यकालीन भाषा, आधुनिक भाषा। भूगोल या क्षेत्र के आधार पर व्यक्ति बोली, स्थानीय बोली, उपबोली, उपभाषा आदि भाषा के रूप पाए जाते हैं। प्रयोग के आधार पर साहित्यिक भाषा, बोलचाल की भाषा, जातीय भाषा, व्यावसायिक भाषा, दफ्तरी भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, गुप्तभाषा, जीवित भाषा, मृतभाषा आदि भाषा के रूप पाए जाते हैं। निर्माण के आधार पर भाषा के दो भेद हैं- सहज भाषा और कृत्रिम भाषा। मानकता या शुद्धता के आधार पर मानक या परिनिष्ठित भाषा, अमानक भाषा, अपभाषा आदि भेद पाए जाते हैं। मिश्रण के आधार पर भाषा के भेद हैं - पिजिन और क्रियोल।



2.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : भाषा के पाँच रूप हैं, जो इस प्रकार है- ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य और अर्थ इत्यादि। भाषा के इन पांच अंगों की व्याख्या ऊपर दी गयी है।

प्रश्न 2 का उत्तर : साहित्यिक भाषा किसी भाषा का वह रूप (रजिस्टर) है, जिसे औपचारिक, अकादमिक या विशेष रूप से विनम्र लहजे में लिखते समय प्रयोग किया जाता है। यह किसी भी भाषा का मानकीकृत रूप हो सकता है। विस्तारपूर्वक जानने के लिए ऊपर पढ़ें।



2.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. डॉ शम्भुनाथ द्विवेदी, भाषाविज्ञान और शैलीविज्ञान, हिंदी बुक सेंटर, नयी दिल्ली।
6. बद्रीनाथ कपूर, वाक्य-संरचना और विश्लेषण: नए प्रतिमान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।



2.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. बोली किसे कहते हैं?
2. भाषा के कितने अंग है?
3. भारत की राजभाषा क्या हैं?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1. भाषा के विविध रूपों की चर्चा कीजिए?
2. भाषा परिवर्तन के आंतरिक कारणों पर प्रकाश डालिए?
3. भाषा परिवर्तन के बाह्य कारण क्या है स्पष्ट कीजिए?
4. मानक और अमानक भाषा में अंतर स्पष्ट कीजिए?
5. भाषा परिवर्तन की दिशाओं की चर्चा कीजिए?

*** ***** ***

इकाई 3 : भाषा संरचना

इकाई की रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 भाषा संरचना का स्वरुप

3.4 भाषा वैज्ञानिकों की भाषा-संरचना संबंधी मान्यताएँ

3.5 भाषा संरचना की विशेषताएँ

3.6 सारांश

3.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

3.8 अधिक जानने के लिए पढ़े

3.9 अभ्यास प्रश्न

3.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप -

- भाषा संरचना की अवधारणाओं से परिचित हो सकेंगे।
- भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों को जान पाएंगे।
- भाषा संरचना की समझ से प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण अनुप्रयोगों को बढ़ाने का सुझाव दे सकेंगे।
- भाषा संरचना के महत्व, साहित्य पर इसका प्रभाव और विविध भाषा कार्यों को समझ सकेंगे।
- जटिल भाषा संरचनाओं का विश्लेषण करके, जटिलताओं को तोड़ने और समझने के लिए सुझाव दे पाऐंगे।

3.2 प्रस्तावना

भाषा यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की संरचनात्मक व्यवस्था है। इस भाषा व्यवस्था की अपनी विशेष प्रकार की संरचना होती है। इस संरचना के अनेक स्तर होते हैं, जैसे- ध्वनि स्तर, शब्द स्तर, वाक्य स्तर, प्रोक्ति स्तर, रूप स्तर आदि। इन सभी स्तरों पर भाषा की अलग-अलग इकाईयाँ होती हैं। भाषा संरचना में इन सभी इकाईयों की अलग-अलग भूमिका होती है।



महत्वपूर्ण बिंदु

चॉमस्की को आधुनिक 'भाषा विकास' का जनक भी कहा जाता हैं। नॉम चॉमस्की द्वारा इस सिद्धांत का प्रतिपादन वर्ष 1959 में किया गया था। उनके इस सिद्धांत के अनुसार वह मानते हैं कि बालक में भाषा या व्याकरण को सीखने की क्षमता जन्मजात होती हैं, परंतु उस भाषा को सीखने की क्षमता को क्रियान्वयन रूप वातावरण द्वारा दिया जाता है।

3.3 भाषा संरचना का स्वरूप

जब कोई वस्तु एक से अधिक इकाईयों से कुछ नियमों के माध्यम से निर्मित होती है तो उन नियमों और घटकों की खोज 'संरचना' के रूप में की जाती है। भाषा एक बहुस्तरीय व्यवस्था है। भाषा के सभी स्तरों पर एक से अधिक इकाईयों का योग होता है। भाषा संरचना के मूलभूत स्तर इस प्रकार है-

- शब्द संरचना
- पद संरचना
- पदबंध संरचना
- वाक्य संरचना

भाषा संरचना के अतिरिक्त स्तर इस प्रकार हैं-

- ध्वनि संरचना
- अर्थ संरचना
- प्रोक्ति संरचना

1. **शब्द संरचना**- शब्द संरचना का आशय है नए शब्दों का निर्माण, शब्दों की बनावट और शब्द गठन। भाषा में शब्द रचना उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास के आधार पर किया जाता है। उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास का विवरण निम्नलिखित हैं-

(क) उपसर्ग- उपसर्ग उस भाषिक इकाई को कहते हैं जिसका भाषा-विशेष में स्वतंत्र प्रयोग न होता हो, किंतु जिसे विभिन्न प्रकार के शब्दों के आरम्भ में जोड़कर शब्दों की रचना की जाती हो। भाषा में तीन प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है।

- **तत्सम उपसर्ग**- जो संस्कृत से ज्यों का त्यों भाषा में लिए गए हैं। जैसे-अनु-अनुक्षण, अन-अनमेल, अप-अपव्यय, अव-अवगुण, प्रति-प्रतिकुल आदि।
- **तद्भव उपसर्ग**- जो संस्कृत के उपसर्गों या शब्दों से ध्वनि की दृष्टि से कुछ परिवर्तित होकर विकसित हुए हैं। जैसे- औ-औरत, क-कदाचार, दु-दुनिया, नि-निडर, पर-परसर्ग, स-सहित आदि।

- **विदेशी उपसर्ग**- जो उपसर्ग विदेशी भाषाओं से आए हो। जैसे- अल-अलविदा, दर-दरवार, ब-बखूबी, बा-बाअदब आदि।

(ख) प्रत्यय- प्रत्यय उस भाषिक इकाई को कहते हैं जिसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से न हो और जिसे किसी और भाषिक इकाई के अंत में जोड़कर शब्द रचना की जाती हो। संस्कृत में दो प्रकार के प्रत्यय हैं- कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय। कृत प्रत्यय वह है जो धातु के साथ जोड़े जाते थे। तद्धित प्रत्यय वह है जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण में जोड़े जाते थे। प्रत्यय चार प्रकार के हैं- तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी।

- **तत्सम प्रत्यय**- तत्सम प्रत्यय संस्कृत के समान है। तत्सम प्रत्यय के उदाहरण हैं- ता-सुंदरता, ई-घोड़ी, आलु-दयालु आदि।
- **तद्भव प्रत्यय**- तद्भव प्रत्यय संस्कृत से विकसित हुए है। तद्भव प्रत्यय के उदाहरण हैं- आई-पढ़ाई, आहट-घबराहट, आलू-झगड़ालू आदि।
- **देशज प्रत्यय**- देशज प्रत्यय अज्ञात व्युत्पत्तिपरक होते हैं। देशज प्रत्यय के उदाहरण हैं- अक्कड़-घुमक्कड़, आड़ी-खिलाड़ी आदि।
- **विदेशी प्रत्यय**- ये विदेशी भाषाओं से लिए गए प्रत्यय है। विदेशी प्रत्यय के उदाहरण है- आना-घराना, इयत-आदमियत, मंद-दौलतमंद आदि।

(ग) समास- समास दो शब्दों से मिलकर बना है- सम + आस= समास। 'सम' का अर्थ है 'पास' और 'आस' का अर्थ है 'रखना'। समास उस प्रक्रिया को कहा जाता है जिसमें दो या अधिक शब्द मिलाकर उनके बीच के सम्बंधसूचक आदि शब्दों का लोप करके नया शब्द बनाया जाता है। जैसे- दही में पड़ा हुआ बड़ा = दहीबड़ा। समास में दो पद होते हैं, जिन्हें क्रमश: पूर्वपद तथा उत्तरपद कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में 'दही' पूर्वपद है और 'बड़ा' उत्तरपद है। समास के चार भेद हैं-

A. अव्ययीभाव समास
B. तत्पुरुष समास
C. द्वंद्व समास
D. बहुब्रीहि समास

- **अव्ययीभाव समास**- इस समास में दो शब्दों से मिलकर जो शब्द बनाया जाता है, वह अव्यय का काम करता है, इसीलिए इसे अव्ययीभाव कहा जाता है। जैसे- प्रति+दिन=प्रतिदिन, यथा+शक्ति=यथाशक्ति आदि।
- **तत्पुरुष समास**- इस समास में पहला शब्द प्राय: संज्ञा या विशेषण तथा दूसरा सर्वदा संज्ञा होता है। जैसे-त्रिभुवन में त्रि या तीन संख्यावाचक विशेषण है और भुवन संज्ञा। तत्पुरुष समास के तीन भेद किए जाते हैं- द्विगु, कर्मधारय और व्यधिकरण तत्पुरुष समास।
- **द्विगु तत्पुरुष समास**- यदि पहला शब्द संख्यावाचक विशेषण हो और समस्त

पद-समूह का बोध कराए तो उस समास को द्विगु समास कहते हैं। जैसे - नवग्रह (नव या नौ संख्यावाचक विशेषण है और ग्रह संज्ञा)।

- **कर्मधारय तत्पुरुष समास**- जिसमें विशेषण-विशेष्य या उपमेय-उपमान हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे- नीलकमल, चरण-कमल आदि।
- **व्यधिकरण तत्पुरुष समास**- इसमें पहला शब्द संज्ञा होता है और दूसरा शब्द प्रमुख होता है तथा समास करने पर दोनों शब्दों के बीच के कारक चिह्न या विभक्ति लोप हो जाता है। जैसे - ग्रंथकर्ता, गिरहकट आदि। व्यधिकरण तत्पुरुष समास के छः भेद किए जाते हैं- कर्मतत्पुरुष, करण तत्पुरुष, सम्प्रदान तत्पुरुष, अपादान तत्पुरुष, सम्बंध तत्पुरुष और अधिकरण तत्पुरुष।

2. **पद संरचना**- जब कोई सार्थक शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तो उसे पद कहा जाता है। पद मुख्यतः पाँच प्रकार के होते हैं- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय।

क. संज्ञा- किसी भी व्यक्ति, वस्तु, गुण, द्रव्य, नाम, जाति, स्थान आदि के नामवाचक शब्द को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के पाँच भेद हैं-

1. **जातिवाचक संज्ञा**- जिस शब्द से एक ही जाति के अनेक प्राणियों, वस्तुओं का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-आदमी, नगर,भवन, घोड़ा आदि।
2. **भाववाचक संज्ञा**- जिस संज्ञा शब्द से किसी के गुण, दोष, दशा, स्वभाव, भाव आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे-सुंदरता, मिठास, गर्मी, सर्दी आदि।
3. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**- जिस शब्द से किसी एक विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान आदि का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-दिल्ली, राम, आगरा आदि।
4. **समूहवाचक संज्ञा**- जो संज्ञा शब्द किसी समूह या समुदाय का बोध कराते हैं, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-विद्यार्थियों का समूह।
5. **द्रव्यवाचक संज्ञा**- जो संज्ञा शब्द किसी द्रव्य, पदार्थ या धातु क बोध कराते हैं, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे-पानी, लोहा, तेल आदि।

ख- सर्वनाम- संज्ञा के स्थान पर उपयोग किए जानेवाले शब्दों को ही सर्वनाम कहा जाता है। सर्वनाम के छः भेद हैं-पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम।

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम**- जो सर्वनाम बोलनेवाला, सुननेवाला तथा किसी अन्य के लिए प्रयुक्त किया जाता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- तुम लोग कहाँ गए थे?
2. **निश्चयवाचक सर्वनाम**- ये सर्वनाम किसी संज्ञा के निश्चयात्मकता को व्यक्त करते हैं। जैसे- यह गाड़ी खराब है।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**- ये सर्वनाम संज्ञा की अनिश्चयात्मकता को व्यक्त करते हैं। जैसे-कोई दरवाजे पर है।
4. **प्रश्नवाचक सर्वनाम**- ये सर्वनाम किसी वस्तु या व्यक्ति के बारे में प्रश्नवाचकता को व्यक्त करते हैं। जैसे-सुनील कहाँ गया था ?
5. **निजवाचक सर्वनाम**- जो सर्वनाम उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष या अन्य पुरुष के सम्बंध में अपनेपन का बोध कराते हैं, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-यह मेरा अपना काम है।
6. **सम्बंधवाचक सर्वनाम**- इस सर्वनाम का प्रयोग प्राय: मिश्र वाक्यों में होता है। जैसे-जो कोशिश करते हैं, वे कामयाब होते हैं।

ग- विशेषण- जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता को दर्शाता है, उसे विशेषण कहा जाता है। जैसे श्याम बहुत अच्छा लड़का है। विशेषण के चार भेद हैं- गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, सर्वनामिक विशेषण।

1. **गुणवाचक विशेषण**- ऐसे विशेषण जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग आदि के विषय में बताते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे- फुल बहुत सुंदर होते हैं।
2. **संख्यावाचक विशेषण**- ऐसे विशेषण शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहा जाता है, जिनसे किसी संज्ञा या सर्वनाम के संख्या का पता चलता है। जैसे- कक्षा में 60 विद्यार्थी उपस्थित हैं। इसके भी दो भेद किए जाते हैं- निश्चित संख्यावाचक विशेषण और अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण।
3. **परिमाणवाचक विशेषण**- ऐसे विशेषण शब्द जिनसे किसी संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा या नाप-तोल का पता चलता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे- यहाँ दो लीटर दूध है, रस्सी दस मीटर की है। परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद पाए जाते हैं- निश्चित परिमाणवाचक और अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण।
4. **सर्वनामिक विशेषण**- ऐसे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा शब्द से पहले आते हैं और किसी विशेषण शब्द की तरह संज्ञा की विशेषता बताते हैं उन्हें सर्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे- यह किसी का घर है।

घ- क्रिया-जिन जिन शब्दों के माध्यम से किसी वाक्य में कोई कार्य करने या होने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया के विभिन्न रूपों में जो तत्व समान होता है, उसे धातु कहते हैं, जैसे- काना, खाया, खाऊँ, खाओ, खाएगा में खा समान रूप से हैं, अत: इनमें खा धातु है। सामान्यत: क्रिया के दो भेद हैं- सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया।

1. **सकर्मक क्रिया**- वे क्रियाएँ जिनका प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्ता पर न पड़ कर कर्म पर पड़ता है। जैसे- खा, पढ़, लिख आदि।
2. **अकर्मक क्रिया**- वाक्य में जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की अपेक्षा नहीं होती,

उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे - दौड़, रो, चल, हँस आदि।

ङ- अव्यय- अव्यय उन शब्दों को कहा जाता है जिनका लिंग, वचन, विभक्ति आदि के अनुसार कोई भी परिवर्तन नहीं होता है। जैसे- कब, कहाँ, कैसे, किसने, इधर, केवल आदि।

1. **क्रियाविशेषण अव्यय**- जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता का पता चलता है, उन्हें क्रिया विशेषण अव्यय कहा जाता है। जैसे- अब, कब, किधर, उधर, यहाँ आदि।
2. **सम्बंधबोधक अव्यय**- जिन अव्यय शब्द संज्ञा के बाद आने पर दूसरे शब्दों से उसका सम्बंध बताते हैं, उन्हें सम्बंधबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे- के अनुसार, तक, के लिए, कारण, नीचे, बाहर आदि।
3. **विस्मयादिबोधक अव्यय**- जिन शब्दों से हर्ष, शोक, विस्मय, ग्लानी, लज्जा, घृणा, दुख, आश्चर्य आदि के भाव का बोध होता है, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे- हाय! हाय! यह क्या हो गया?, वाह! हम जीत गए।
4. **समुच्चयबोधक अव्यय**- जो शब्द दो शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे- यद्यपि, चूँकि, परंतु, किंतु, और, अथवा, तथा आदि।
5. **निपात अव्यय**- जो वाक्य में नवीनता या चमत्कार उत्पन्न करते हैं, उन्हें निपात अव्यय कहते हैं। जैसे- यह काम राम को ही करना होगा। इस वाक्य में 'ही' निपात अव्यय है।

3. **पदबंध संरचना :** वाक्य पदों से बना होता है। जब एक से अधिक पद एक में बंधे हो तथा वे सभी मिलकर या बँधकर एक व्याकरणिक इकाई का काम करे, तो उस बंधी इकाई को पदबंध कहते हैं। जैसे- सुरेश के बँगले के चारों ओर पेड़-पौधे हैं, इस वाक्य में 'सुरेश के बँगले के चारों ओर' में पदों का समूह है अर्थात यह पदबंध है। पदबंध आठ प्रकार के होते हैं- संज्ञा पदबंध, सर्वनाम पदबंध, विशेषण पदबंध, क्रिया पदबंध, क्रियाविशेषण पदबंध, संबंधबोधक पदबंध, समुच्चयबोधक पदबंध, विस्मयादिबोधक पदबंध।

   क. संज्ञा पदबंध - जो पदबंध किसी संज्ञा का काम करे, उसे संज्ञा पदबंध कहा जाता है। जैसे- ऊँचे-ऊँचे महलों में रहनेवाले धनी-मानी व्यक्ति गरीबों का दुख-दर्द क्या जानें? यहाँ 'व्यक्ति' संज्ञा है और उसके पूर्व के सारे शब्द किसी न किसी रूप में व्यक्ति की विशेषता से संबंधित है।

   ख. सर्वनाम पदबंध - जो पदबंध सर्वनाम का काम करे, उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं। जैसे- मुझ जैसे काम करनेवाले को भी टल्लेबाज कहते हैं। यहाँ 'मुझ जैसे काम करनेवाले को' सर्वनाम है तथा 'काम करनेवाले' उसकी विशेषता बतानेवाला विशेषण।

ग. **विशेषण पदबंध** – जो पदबंध प्रत्यक्षत: किसी संज्ञा की अथवा किसी सर्वनाम के माध्यम से परोक्षत: किसी संज्ञा की विशेषता बतलाता है, उसे विशेषण पदबंध कहते हैं। जैसे- परिश्रम न करनेवाले लड़के अच्छे अंक नहीं पा सकते। यहाँ 'परिश्रम न करनेवाले लड़के' विशेषण पदबंध है।

घ. **क्रिया पदबंध** – एक से अधिक पदों की क्रिया को क्रिया पदबंध कहा जाता है। क्रिया पदबंध में पहला पद तो मुख्य क्रिया का अर्थात क्रिया पदबंध का केंद्र होता है तथा बाद वाले पद किसी न किसी रूप में उसी की सहायता करते हैं। जैसे- लड़का दौड़ रहा है। इस वाक्य में 'दौड़ रहा है' क्रिया पदबंध है।

ङ **क्रिया विशेषण पदबंध** – जो पदबंध क्रिया विशेषण का काम करे, उसे क्रिया विशेषण पदबंध कहते हैं। जैसे- हरीश श्याम से ज्यादा तेज दौड़ता है। इस वाक्य में श्याम से ज्यादा तेज दौड़ता है क्रिया विशेषण है।

4. **वाक्य-संरचना :** वाक्य पदों के समूह की उस इकाई को कहते हैं जो व्याकरणिक दृष्टि से पूर्ण हो तथा जिसमें एक क्रिया अवश्य हो। वाक्य के दो अंग होते हैं- उद्देश्य और विधेय।

   1. **उद्देश्य**- वाक्य के उस अंश को उद्देश्य कहा जाता है, जिसके बारे में वाक्य के शेष अंश में कुछ कहा गया हो। जैसे- लड़का गया, छात्र पास हो गए। इन दो वाक्यों में लड़का और छात्र के विषय में कुछ कहा गया है, अत: लड़का और छात्र उद्देश्य है।
   2. **विधेय**- वाक्य का वह अंश विधेय है, जो वाक्य के उद्देश्य के बारे में सूचना देता है। जैसे- लड़का गया, छात्र पास हो गए। इन दोनों वाक्यों में 'गया' और 'पास हो गए' विधेय है।

5. **ध्वनि संरचना**- ध्वनि भाषा की सबसे छोटी इकाई है, इनसे शब्द अथवा पद बनते हैं और फिर शब्दों से पदबंध और वाक्य। किसी भी ध्वनि का अपना कोई अर्थ नहीं होता, किंतु एक या एक से अधिक ध्वनियाँ मिलकर अर्थपूर्ण इकाइयों अर्थात शब्दों का निर्माण करती हैं।

6. **अर्थ संरचना**- अर्थ संरचना भाषा द्वारा प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त और उसमें एनकोड की गई अर्थ प्रणाली का गठन करती है। दूसरे शब्दों में, अर्थ संरचना वह रूप है जो वैचारिक संरचना भाषा में अभिव्यक्ति के लिए लेती है।

7. **प्रोक्ति संरचना**- तर्कपूर्ण क्रमयुक्त और आपस में आंतरिक रूप से सुसंबद्ध, एकाधिक वाक्यों की ऐसी व्यवस्थित इकाई को प्रोक्ति कहते हैं, जो संदर्भ विशेष में अर्थद्योयन की दृष्टि से पूर्न हो। प्रोक्ति के अनेक भेद किए जाते हैं- जैसे – प्रोक्ति क्या है इस आधार पर उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, खंडकाव्य, महाकाव्य, मुक्तक, गीत, निबंध आदि भेद हो सकते हैं, प्रोक्ति के वाक्य आपस में किस साधन के द्वारा जोड़े गए हैं, इस आधार पर

समुच्चयी संसक्ति युक्त सर्वनामी संसक्ति युक्त, लोपी संसक्ति युक्त, विरामी संसक्ति युक्त, संदर्भी संसक्ति युक्त आदि भेद हो सकते हैं, व्यक्तियों के आधार पर संलाप, एकालाप आदि कथन के आधार पर प्रत्यक्ष कथन और अप्रत्यक्ष कथन आदि, कथन की प्रकृति के आधार पर विवरणात्मक, व्याख्यात्मक, मूल्यांकनपरक, मिश्र आदि, कथन शैली के आधार पर रूढ़िगत, औपचारिक, बहुत औपचारिक, अनौपचारिक और अंतरंग आदि भेद किए जाते हैं।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. शब्द संरचना से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 2. व्याकरण के सर्वनाम एवं विशेषण की व्याखान कीजिये?

प्रश्न 3. वाक्य संरचना से आप क्या समझते हैं?

3.4 भाषा वैज्ञानिकों की भाषा-संरचना संबंधी मान्यताएँ

भाषा वैज्ञानिकों द्वारा भाषा संरचना पर नहीं अपितु भाषा की अनेक परिभाषाएँ दी गयी हैं- जो इस प्रकार है-

दार्शनिक प्लेटो ने विचार और भाषा के सम्बंध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा ही अंतर है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा कहते हैं।

स्वीट के अनुसार - ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना भाषा है।

वेंद्रिए के अनुसार- भाषा एक तरह का संकेत है। संकेत से आशय उन प्रतीकों से हैं जिनके द्वारा मानव अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है। ये प्रतीक कई प्रकार के होते हैं, जैसे- नेत्र ग्राह्य, कर्ण ग्राह्य, और स्पर्श ग्राह्य। वस्तुतः भाषा की दृष्टि से कर्ण ग्राह्य प्रतीक ही सर्वश्रेष्ठ है।

3.5 भाषा संरचना की विशेषताएँ

1. भाषा संरचना एक भाषा में संगठित, व्यवस्थित नियमों को संदर्भित करता है जिससे प्रभावी संचार सम्भव हो पाता है।
2. भाषा संरचना को समझने से विभिन्न सामाजिक स्थितियों में भाषा का उचित और सुसंगत रूप से उपयोग किया जा सकता है।
3. भाषा संरचना के माध्यम से जटिल विचारों का विकास और विचारों की सहज अभिव्यक्ति सम्भव होता है।
4. एक भाषा में संरचना महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह शब्दों और वाक्यांशों को सार्थक वाक्यों में व्यवस्थित करती है।

5. भाषा संरचना से वाक्य स्पष्ट होता है और प्रभावी संचार सम्भव हो पाता है।



3.6 सारांश

पाठ का उद्देश्य इस पाठ के अध्ययन के उपरांत आप भाषा संरचना की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे। भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों को भी पहचान पाएंगे। भाषा वैज्ञानिकों की भाषा-संरचना संबंधी मान्यताएँ, भाषा संरचना की विशेषताएँ को जान पाएंगे।



3.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : भाषा विज्ञान और व्याकरण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें नए शब्दों को बनाने की प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है। इन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए विस्तार रूप से ऊपर इसकी चर्चा की गयी है।

प्रश्न 2 का उत्तर : अगर शब्द किसी संज्ञा के स्थान पर शब्द का प्रयोग जैसे मेरा, मैं, तुम, आपका, उस, वह आदि शब्द है, तो वह शब्द सर्वनाम है। अगर शब्द किसी वस्तु, स्थान, पशु, पक्षी आदि की विशेषता बताता है, अर्थात वह कैसा है - लंबा है, सुंदर है, डरावना है आदि, तो वह शब्द विशेषण है। जिसकी चर्चा ऊपर की गयी है।

प्रश्न 3 का उत्तर : वाक्य संरचना एक वाक्य में सभी भागों का क्रम है: विषय, विधेय, वस्तु, वाक्यांश, विराम चिह्न, इत्यादि। इन सब का उल्लेख ऊपर दिया गया है।



3.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



3.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. भाषा संरचना क्या है ?
2. प्रत्यय किसे कहते हैं ?
3. संज्ञा किसे कहते हैं ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1. भाषा संरचना के मूल स्तरों की चर्चा कीजिए।
3. संज्ञा के प्रमुख भेदों का उल्लेख कीजिए।
4. ध्वनि संरचना से क्या तात्पर्य है ?
5. सर्वनाम और विशेषण के भेदों का उल्लेख कीजिए ।
6. प्रोक्ति संरचना से क्या तात्पर्य है ?

*** ***** ***

इकाई 4 : भाषाविज्ञान की वैज्ञानिकता

इकाई की रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 'भाषाविज्ञान' कला है या विज्ञान ?

4.4 भाषाविज्ञान की वैज्ञानिकता

4.5 सारांश

4.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

4.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

4.8 अभ्यास प्रश्न

4.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- भाषाविज्ञान कला है या फिर विज्ञान जान सकेंगे।
- भाषाविज्ञान की वैज्ञानिकता को समझ पाएंगे।
- भाषाविज्ञान की वैज्ञानिक सार्थकता तात्पर्य के बारे में आपको ज्ञान होगा।

4.2 कला और विज्ञान का संबंध

भाषाविज्ञान कला है या विज्ञान उसे जानने से पहले यह जानना आवश्यक है की कला एवं विज्ञान से तात्पर्य क्या हैं? कला साधारणत: सूक्ष्म सृजनकारी कल्पनाओं व मंगलकारी संवेदनाओं से युक्त सौन्दर्य भाव-प्रेरणा का निर्लिप्त अन्तर्प्रवाह है। कला की अभिव्यक्ति ही शिल्प के रूप में प्रकट व रुपान्तरित होती है। जबकि विज्ञान किसी घटनादि के सही और स्पष्ट कारणों का निरन्तर शोध परिणामों की एक व्यापक प्रक्रिया हैं जो निष्कर्ष के निश्चित बिन्दु तय करता है। विज्ञान का मूल रूप से सर्वदा 'सत्य का प्रकाशन' है, लेकिन कला का मूल रूप से सत्य का अनावरण नहीं, अपितु सृजन-सौन्दर्य का आवेष्टन है।

दोनों के संबंधों पर चर्चा करने से मालूम पड़ता है कि किसी सृजनशीलता अथवा आविष्कार के पृष्ठभूमि में दोनों का विशेष महत्व होता है। क्योंकि आवश्यकता के बिना 'आविष्कार की प्रेरणा' (कला) नहीं मिल सकती; और इसे स्थूल व मूर्त्त होने के लिए विज्ञान के प्रक्रिया व प्रविधि की कसौटी पर खड़ा उतरना ही पड़ता हैं। उपोगिता के सिद्धान्त पर शिल्प या टेक्नोलॉजी टिकी है। दोनों के बीच कहीं एक क्षैतिज संबंध भी है, तो कहीं उदग्र संबंध भी है। अनुभव को और भी तीक्ष्ण, सूक्ष्म, गहरे और व्यापक बनाते हुए अवलोकन करने पर मालूम पड़ता हैं कि दोनों परस्पर पूरक हैं। दोनों ही परस्पर एक दूसरे के ऋणी और सहयोगी है।

4.3 'भाषाविज्ञान' कला है या विज्ञान ?

उल्लेखित बातों से आपलोग समझ गए होंगे कि कला और विज्ञान क्या हैं ? भाषाविज्ञान विज्ञान है या कला यह एक चर्चा का विषय है। कुछ विद्वान इसे विज्ञान मानते हुए मत प्रकाश करते हैं कि '' आजकल जबकि समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान आदि शास्त्रीय विषयों के लिए जहाँ विज्ञान शब्द का प्रयोग करने की परम्परा चल पड़ी है, तब शुद्ध कारण-कार्य परम्परा पर आधारित भाषा-विज्ञान को विज्ञान कहना किसी भी दृष्टि से अनुचित नहीं ठहराया जा सकता।''

मगर इसके विपरीत अनेक विद्वान भाषाविज्ञान को विशुद्ध विज्ञान नहीं मानते। उनकी धारणा के अनुसार अभी भाषाविज्ञान के सभी प्रयोग पूर्णता को प्राप्त नहीं हुए हैं और उसके निष्कर्षों को इसीलिए अंतिम निष्कर्ष नहीं कहा जा सकता। इसके साथ ही भाषाविज्ञान के सभी निष्कर्ष विज्ञान की भाँति सार्वभौमिक और सार्वकालिक भी नहीं है।

जिस प्रकार गणित शास्त्र में 2+2=4 सार्वकालिक; विकल्परहित निष्कर्ष है, जो सर्वत्र स्वीकार किया जाता है, भाषाविज्ञान के पास इस प्रकार के विकल्प-रहित निर्विवाद निष्कर्ष नहीं है। विज्ञान में तथ्यों का संकलन और विश्लेषण होता है और ध्वनि के नियम अधिकांशत: विकल्परहित ही हैं, अत: कुछ विद्वानों के अनुसार भाषा-विज्ञान को मानविकी (कला) एवं विज्ञान के मध्य में रखा जा सकता है।

दूसरी ओर भाषाविज्ञान कला भी नहीं है। उसमें व्यक्ति की सौन्दर्यानुभूति का पुट नहीं मिलता है। कला का उद्देश्य भी सौन्दर्यानुभूति कराना, या आनन्द प्रदान करना है, किसी वस्तु का तात्विक विश्लेषण करना नहीं। कला के स्वरूप की इन सभी विशेषताओं की कसौटी पर परखने से ज्ञात होता है कि भाषा-विज्ञान में भाषायों की वैज्ञानिक अध्ययन तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर ही इसका निष्कर्ष निकला जाता हैं। अत: भाषाविज्ञान कला भी नहीं है।

भाषा-विज्ञान को कला की सीमा में नहीं रखा जा सकता, यह निश्चय हो जाने पर यह प्रश्न उठता है कि क्या भाषा-विज्ञान, भौतिक-शास्त्र, रसायन-विज्ञान आदि विषयों की भाँति पूर्णत: विज्ञान है ? विचार करने पर हम देखते हैं कि विज्ञान की आज की दुत प्रगति में प्रत्येक विशेष ज्ञान अपने आगामी ज्ञान के सामने पुराना और अवैज्ञानिक सिद्ध होता जा रहा है। नित्य नवीन आविष्कारों के आज के युग में वैज्ञानिक दृष्टि नित्य सूक्ष्म से सूक्ष्मतर और नवीन से नव्यतर होती चली जा रही है। आज के विकसित ज्ञान-क्षेत्र को देखते हुए कई वैज्ञानिक मान्यताएँ पुरानी और फीकी पड़ गई है। न्यूटन का प्रकाश सिद्धान्त भी अब सन्देह की दृष्टि से देखा जाने लगा है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि नूतन ज्ञान के प्रकाश में पुरातन ज्ञान भी विज्ञान के क्षेत्र से बाहर कर दिया जाता है।

अत: विशुद्ध ज्ञान की दृष्टि से विचार करने पर भाषा-विज्ञान को हम विज्ञान के ही सीमा-क्षेत्र में पाते हैं। भाषा-विज्ञान निश्चय ही एक विज्ञान है जिसके अन्तर्गत हम भाषा का विशेष ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह सही है कि अभी तक भाषा-विज्ञान का वैज्ञानिक स्तर पर पूर्णत:

विकास नहीं हो पाया है। यही कारण है कि प्रसिद्ध ग्रिम-नियम के आगे चल कर ग्रासमान और वर्नर को उसमें सुधार करना पड़ा है। उक्त सुधारों से पूर्व ग्रिम का ध्वनि नियम निश्चित् नियम ही माना जाता था और सुधारों के बाद भी वह निश्चित् नियम ही माना जाता है। इस प्रकार नये ज्ञान के प्रकाश में पुराने सिद्धान्तों का खण्डन होने से विज्ञान का कोई विरोध नहीं है। वास्तव में यही शुद्ध विज्ञान है।

सन् 1930 के बाद जहाँ वर्णनात्मक भाषा-विज्ञान को पुन: महत्व प्राप्त हुआ, वहाँ तब से लेकर आज तक द्रुत गति में विकास हुआ है। जब से ध्वनि के क्षेत्र में यंत्रों की सहायता से नये-नये परीक्षण प्रारम्भ हुए हैं तथा प्राप्त निष्कर्ष पूरी तरह नियमित होने लगे हैं, तब से ही भाषा-विज्ञान धीरे-धीरे प्रगति करता हुआ विज्ञान की श्रेणी में माना जाने लगा है।

विज्ञान की एक बड़ी विशेषता है उसका प्रयोगात्मक। अमेरिकी विद्वान् बलूम फील्ड (सन् 1933 ई.) के बाद अमेरिकी भाषा विज्ञानियों ने ध्वनि-विज्ञान एवं रूप-विज्ञान आदि के साथ भाषा-विज्ञान की एक नवीन पद्धति के रूप में प्रायोगिक भाषा-विज्ञान का बड़ी तीव्रता के साथ विकास करता जा रहा है। इस पद्धति के अन्तर्गत भाषा-विज्ञान प्रयोगशालाओं का विषय बनता जा रहा है और उसके लिए अनेक यंत्रों का अविष्कार हो गया है। यह देख कर निश्चित रूप में इस विषय को विज्ञान ही कहा जाएगा, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

4.4 भाषाविज्ञान की वैज्ञानिकता

भाषा विज्ञानं एक पूर्ण विज्ञानं है। उसके नियम भौतिक विज्ञान और गणित की तरह निरापद हैं। जो अपवाद दिखाई देते हैं, वे केवल आरोपित हैं, अपवादभास हैं। उदहारण के लिए भाषाविज्ञान कहता है कि ''भाषा परम्परागत वस्तु है, उसका निर्माण नहीं किया जा सकता।'' एस्पिरेंतो के जन्म को इस नियम का अपवाद बताया जा सकता है। एस्पिरेंतो एक कृत्रिम भाषा थी, जिसका निर्माण डॉ. जोमान हाफ ने किया और 1887 के करीब उसे विश्व भर के भाषाविदों के सामने रखा। वे इसे विश्वभाषा बनाना चाहते थे, ताकि भाषा की दीवारें मानव-मानव के बीच व्यवधान न बनें। उनके इस प्रयास को व्यापक समर्थन मिला। एस्पिरेंतो में पुस्तकें लिखी गयी एवं पत्रिकाएँ निकाली गयी। परन्तु वह अधिक समय तक टिक नहीं पायी और आज बहुत कम लोग ही इसे जानते होंगे। कारण स्पष्ट है, भाषा परम्परागत वस्तु है। उसका निर्माण नहीं होता।

ध्वनियों का उच्चारण, ध्वनियों का एक सुनिश्चित दिशा में विकास, पदरचना में सरलता का आग्रह, अर्थपरिवर्तन के सुनिश्चित कारण आदि अनेक बातें हैं, जो भाषाविज्ञान की वैज्ञानिकता को प्रमाण करती हैं। संस्कृत व्याकरण की शुद्धता और अपवादहीनता भी भाषाविज्ञान की वैज्ञानिकता की पुष्टि करती है।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. कला और विज्ञान का तात्पर्य समझाते हुए स्पष्ट कीजिए की भाषाविज्ञान विज्ञान है कला ?



4.5 सारांश

भाषाविज्ञान विज्ञान है या कला यह अभी भी चर्चा का विषय है। मगर चर्चा का विषय होने के बावजूद भी इसे अधिकांश विद्वानों ने विज्ञान की श्रेणी में ही रखा है। असल में भाषाविज्ञान में भाषाओं का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। वर्तमान की तकनिकी की युग में इसे प्रयोगशाला तक ले जाकर पुरे विश्व के सन्दर्भ में इसकी ध्वनियों, रूपों, अर्थों आदि की प्रमाणिकता खोजी जा रही हैं। इस पर अध्ययन किया जा रहा है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है की भाषा संस्कृति–साहित्य तथा विभिन्न जातियों की उपादान हैं और इसके शुद्धता और इसका वैज्ञानिक रूप ही हमारी परम्परा को आगे ले जायेगा और भाषा का भी उत्तोरोत्तर विकास होता जायेगा।



4.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : कला का उद्देश्य भी सौन्दर्यानुभूति कराना, या आनन्द प्रदान करना है, किसी वस्तु का तात्विक विश्लेषण करना नहीं करता है। उसका दृष्टिकोण बुद्धिवादी है। भाषा – विज्ञान के निष्कर्ष किसी व्यक्ति, राष्ट्र या काल के आधार पर परिवर्तित नहीं होते हैं तथा भाषा – विज्ञान के अध्ययन का मूल आधार जो भाषा है वह मानवकृत पदार्थ नहीं है। अधिक जानने के लिए ऊपर देखें।



4.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



4.8 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्न का उत्तर दीजिये-

1. वर्णनात्मक भाषा-विज्ञान को पुनः महत्व कब प्राप्त हुई ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए-

1. भाषाविज्ञान विज्ञान है या कला- एक सार्थक उत्तर दीजिए।
2. भाषाविज्ञान की वैज्ञानिकता भाषा की किस बात पर निभर करता है- एक आलेख प्रस्तुत कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 5 : भाषाविज्ञान का क्षेत्र एवं प्रमुख अंग

इकाई की रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 भाषाविज्ञान का क्षेत्र

5.4 भाषाविज्ञान के विविध अंग

- 5.4.1 ध्वनिविज्ञान
- 5.4.2 पद-विज्ञान
- 5.4.3 वाक्यविज्ञान
- 5.4.4 अर्थविज्ञान

5.5 भाषाविज्ञान के गौण अंग

- 5.5.1 भाषा की उत्पत्ति
- 5.5.2 भाषाओं का वर्गीकरण
- 5.5.3 कोश-विज्ञान
- 5.5.4 लिपि-विज्ञान
- 5.5.5 भाषिक-भूगोल
- 5.5.6 प्रागैतिहासिक खोज
- 5.5.7 शैली-विज्ञान
- 5.5.8 भू-भाषा-विज्ञान
- 5.5.9 समाज भाषा-विज्ञान
- 5.5.10 मनोभाषा-विज्ञान

5.6 सारांश

5.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

5.8 अधिक जानने के लिए पढ़े

5.9 अभ्यास प्रश्न

5.1 उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्य की दृष्टि से देखा जाए तो हम यह कह सकते हैं कि संसार में कोई भी कार्य बिना किसी उद्देश्य के नहीं होता है। अत: प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पीछे निहित उद्देश्य यह हैं कि आप-

- भाषा का हमारे जीवन में महत्व क्या है उसके बारे में जान पाएंगे।

- भाषाविज्ञान की परिभाषा को समझ सकेंगे।
- भाषाविज्ञान के क्षेत्र के बारे में आपको पता चलेगा।
- भाषाविज्ञान के प्रमुख एवं गौण अंग के बारे में ज्ञान प्राप्त होगा।

5.2 प्रस्तावना

भाषाविज्ञान के द्वारा भाषा का अध्ययन किया जाता है, किन्तु यहाँ यह प्रश्न उठता है कि भाषा क्या है। भाषा एक माध्यम है। एक मनुष्य जो कुछ कहता है उसे दूसरा व्यक्ति सुनता है और इस प्रकार दोनों व्यक्ति आपस में अपने भावों एवं विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। अत: भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों का आदान-प्रदान एक दूसरे के साथ करते हुए अपना कार्य सरल तरीके से कर पाते हैं। भाषा का प्रयोग दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच में होता है। उसमें बोलने वाला वक्ता कहलाता है और सुनने वाला श्रोता। इस बात-चीत को संवाद भी कहा जाता है। भाषा ही वह एक जीवन-ज्योति है, जो एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ संबंध स्थापित करती है। मानव अपने मन के विचारों के कारण ही समाज से संपर्क स्थापित कर पाते हैं। मानव का यह संपर्क भाषा के माध्यम से ही हो पाता है। यदि मनुष्य के पास भाषा रुपी अमोघ अस्त्र न होता तो वह भी पशु-पक्षियों के समान अपने भावों को स्पष्ट रूप में प्रकट करने में असमर्थ होते। विश्व के प्रत्येक देश में कोई न कोई भाषा बोली जाती है और वही उनके विचार-विनिमय का माध्यम है। भाषा मनुष्य के लिए वरदान के समान है जो इस सृष्टि में केवल मनुष्य को ही प्राप्त है। इससे स्पष्ट है कि व्यवहारिक जीवन में भाषा की कितनी उपयोगिता है। भाषा के बिना मानव का जीवन अधूरा है। भाषा के महत्व को स्वीकार करते ही भाषा संबंधी अनेक जिज्ञासाएँ शुरू होती हैं। उदाहरण स्वरूप देखा जाए तो भाषा क्या है, भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई, भाषा कैसे बनती है, भाषा का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है आदि विभिन्न प्रकार के प्रश्न हमारे हृदय में प्रस्फुटित होता है। इन प्रश्नों का समाधान करने के लिए वर्षों से मनुष्य प्रयासरत रहा है। इस प्रयास के दौरान कई प्रकार की गुत्थियाँ सुलझ गई हैं और कुछ को सुलझाने का प्रयास अब भी जारी है। इस प्रकार सहस्त्र वर्षों के पश्चात आज भाषा-विज्ञान एक विज्ञान के रुप में प्रतिष्ठित हो सका है।

सामान्य अर्थों में देखा जाए तो भाषाविज्ञान का सामान्य अर्थ होता है, भाषा का विज्ञान और विज्ञान का अर्थ होता है विशिष्ट ज्ञान। अर्थात भाषाविज्ञान के माध्यम से हम भाषा का व्यवस्थित रूप में अध्ययन कर पाते हैं। भाषा-विज्ञान भाषा-संबंधी सभी प्रश्नों और समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं या करने का प्रयास करते हैं। भाषाविज्ञान का संबंध किसी एक भाषा से न होकर विश्व की समस्त भाषाओं से होता है। अत: वह एक भाषा से संबंधित विषयों का ही नहीं, अपितु विश्व की समस्त भाषाओं का सामूहिक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

भाषा-विज्ञान भाषा के उच्चारण, प्रयोग और उपयोग की शिक्षा देता है। भाषा के विभिन्न अंगों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार विज्ञान प्रत्येक वस्तु के

अंग-प्रत्यंग एवं सूक्ष्मतम अवयव का विवेचन और विश्लेषण करता है, ठीक उसी प्रकार भाषा-विज्ञान वर्ण, पद और वाक्य के सूक्ष्मतम अवयवों का विवेचन एवं विश्लेषण करता है।

5.3 भाषा-विज्ञान का क्षेत्र

अन्य विज्ञानों के समान भाषाविज्ञान का क्षेत्र भी अत्यन्त विस्तृत है। भाषाविज्ञान का संबंध किसी एक भाषा से न होकर मानवमात्र की भाषा से होता है। विश्व की समस्त भाषाएँ भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में आती हैं। भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में केवल साहित्यिक भाषाओं का ही अध्ययन नहीं किया जाता अपितु असभ्य, अर्धसभ्य एवं ग्रामीण लोगों की बोलियों का भी विशेष सावधानीपूर्वक अध्ययन किया जाता है। यहाँ यह समझना जरूरी होता है कि एक भाषाशास्त्री के लिए साहित्य की भाषा के अलावा बोलचाल की भाषा और ग्रामीण बोलियाँ अधिक महत्व रखती हैं क्योंकि उनसे भाषा की प्रवृति के मौलिक तत्त्वों का उचित निष्कर्ष निकालता संभव होता है। भाषा का संबंध मानव से होने के कारण भाषा-विज्ञान का संबंध भी मानव मात्र से ही होता है।

भाषा-विज्ञान वर्तमान हो या अतीत दोनों प्रकार की भाषाओं का अध्ययन अत्यंत सावधानीपूर्वक करता है। मानव की प्रवत्तियों का जितना सूक्ष्म से सूक्ष्मतम अध्ययन भाषा-विज्ञान प्रस्तुत करता है, उतना अन्य विज्ञान नहीं कर सकता। भाषा-विज्ञान एक ओर व्याकरण का कार्य करता है तो दूसरी ओर मनोविज्ञान का। जहाँ एक ओर यह सामान्य नियमों का निर्देश करता है तो दूसरी ओर उसके दार्शनिक पक्ष को भी स्पष्ट करता है। दार्शनिक पक्ष की व्याख्या करते समय उसे अन्य अनेक विज्ञानों का सहारा लेना पड़ता है। इस प्रकार देखा जाये तो भाषा-विज्ञान का क्षेत्र केवल व्याकरण और दर्शन तक सीमित न होकर विज्ञान और शास्त्रों के अंगों तक व्याप्त है।



महत्वपुर्ण बिंदु

विश्व की प्रथम भाषा- सुमेरियन प्राचीन मेसोपोटामिया में बोली जाती थी और इसे इतिहास की सबसे पुरानी लेखन प्रणालियों में से एक माना जाता है, क्यूनिफॉर्म लिपि, जो 5,000 साल से भी ज़्यादा पुरानी है। यह आज तक लिखने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मिट्टी की पट्टियों की बदौलत बची हुई है।

5.4 भाषा-विज्ञान के विविध अंग

भाषा-विज्ञान में भाषा का सर्वांगीन अध्ययन प्रस्तुत होता है। अर्थात उसमें भाषा के सभी अंगों का अध्ययन किया जाता है। भाषा शब्द के द्वारा उसके मुख्य रुप से चार अंग उभर

कर हमारे सामने आते हैं- 1 ध्वनि (Sound) , 2 पद या शब्द (Form), वाक्य (Sentence), 4 अर्थ (Meanning)। भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। उसका ही सर्वप्रथम उच्चारण होता है। कई ध्वनियों के मेल से शब्द और कई शब्दों के मेल से पद बनता है। अनेक पदों से वाक्य की रचना होती है और वाक्य से अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। अत: आगे अब भाषा-विज्ञान के प्रमुख अंगों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जायेगा, वे इस प्रकार हैं- ध्वनि-विज्ञान, पद-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान और अर्थ-विज्ञान।

5.4.1 ध्वनि-विज्ञान

ध्वनि-विज्ञान में भाषा के मूल तत्त्व ध्वनि का व्यापक रूप में अध्ययन किया जाता है। इसमें मूल रूप से ध्वनि क्या है? ध्वनियाँ कितनी है? इनका वर्गीकरण किस प्रकार किया जाता है? ये ध्वनियाँ कैसे और कहाँ से उत्पन्न होती हैं? किस प्रकार ध्वनियों का संप्रेषण होता है? ध्वनियों के भेद का क्या कारण है? एकाधिक ध्वनियों के संयोग से क्या परिवर्तन होते हैं? ध्वनियों में तीव्रता और मंदता क्यों आती है? ध्वनि नियम क्या हैं? आदि विविध प्रश्नों का समाधान करने का प्रयास किया जाता है।

5.4.2 पद-विज्ञान

अनेक ध्वनियों के मेल से पद या शब्द बनता है। पद-विज्ञान को रूप-विज्ञान, रूप-विचार और पद-विचार भी कहा जाता है। पद-विज्ञान के तहत पद या रूप क्या है? पद कैसै बनता है? पद के घटक क्या है? पदों का विभाजन किस आधार पर होता है? लिंग, विभक्ति, वचन, पुरुष, काल, प्रकृति, प्रत्यय, उपसर्ग, आदि तत्त्व क्या है? इनकी क्या उपयागिता होती है? शब्द और पद में क्या अंतर होता है? पद निर्माण कितने प्रकार का होता है? इत्यादि विषयों पर पद-विज्ञान में विवेचन किया जाता है।

5.4.3 वाक्य-विज्ञान

जिस प्रकार विभिन्न ध्वनियों के मेल से पद बनता है, उसी प्रकार विभिन्न पदों या रूपों के मेल से वाक्य बनता है। वाक्य-विज्ञान में वाक्य की रचना किस प्रकार होती है? वाक्य में पदों का अन्वय किस प्रकार होता है? अन्वय का आधार क्या है? कर्ता, क्रिया, कर्म आदि का निवेश किस स्थान पर होता है? वाक्य के कितने भेद होते हैं? आदि विषयों का विवेचन किया जाता है। वाक्य-विज्ञान को वाक्य-विचार भी कहा जाता है। वाक्य-विज्ञान के भी तीन प्रकार होते हैं-

1. वर्णनात्मक वाक्य-विज्ञान

2. ऐतिहासिक वाक्य-विज्ञान
3. तुलनात्मक वाक्य-विज्ञान

1. **वर्णनात्मक वाक्य**-विज्ञान में वाक्य की रचना का सामान्य विवरण प्रस्तुत किया जाता है।
2. **ऐतिहासिक वाक्य**-विज्ञान में वाक्य की रचना का इतिहास दिया जाता है।
3. **तुलनात्मक वाक्य**-विज्ञान में दो या अनेक भाषाओं के वाक्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है।

5.4.4 अर्थ-विज्ञान

जिस प्रकार मानव शरीर का सार भाग आत्मा होता है, उसी प्रकार भाषारूपी शरीर का आत्मा अर्थ होता है। अर्थ-विज्ञान को अर्थ विचार भी कहते हैं। इसमें अर्थ किसे कहते हैं? शब्द और अर्थ का क्या संबंध है? अर्थ का निर्धारण कैसे हुआ? अर्थ परिवर्तन क्यों और कैसे होता है? अर्थ परिवर्तन की क्या दिशाएँ हैं? अर्थ परिवर्तन के क्या कारण है? आदि बातों पर विचार किया जाता है। इसके भी समकालिक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक तीनों रुपों में अध्ययन होता है। इसमें पर्यायवाची शब्द, नानार्थक शब्द, विलोम शब्द आदि का भी विवेचन किया जाता है।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. पद विज्ञान और वाक्य विज्ञान की परिभाषाएं दें?

प्रश्न 2. कोष विज्ञान से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 3. अर्थ विज्ञान की व्याख्या करें।

5.5 भाषा-विज्ञान के गौण अंग

यद्यपि भाषाविज्ञान के मुख्य रूप से चार अंग ही होते हैं, किन्तु भाषा-विज्ञान में इनके अतिरिक्त भी अन्य कई विषयों पर भी विवेचन किया जाता है। उन्हें इनका गौण अंग माना जाता है। इनमें विशेष उल्लेखनीय ये निम्नलिखित अंग हैं-

5.5.1 भाषा की उत्पत्ति

भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई? इस विषय में भाषाशास्त्रियों का क्या मत है? भाषा का विकास कैसे हुआ? आदि विषयों पर विवेचन किया जाता है।

5.5.2 भाषाओं का वर्गीकरण

संसार की विभिन्न भाषाओं को रुप या आकृति के आधार पर तथा भौगोलिक आधार पर अलग-अलग वर्गों में विभक्त किया जाता है। अत: इसमें यह निश्चित किया जाता है कि कौन-कौन सी भाषाएँ कौन से वर्ग में आती हैं। उनकी समानताओं और विषमताओं का भी इसमें अध्ययन किया जाता है।

5.5.3 कोश-विज्ञान

इस विज्ञान में कोश रचना का प्रकार बतलाया जाता है। शब्दों की व्युत्पत्ति क्या है? शब्दों का अर्थ कैसे निर्धारित किया जाता है? प्रत्येक शब्दों का किन अर्थों में प्रयोग होता है? आदि का विवेचन किया जाता है। कोश-विज्ञान में निर्वचन-शास्त्र का पूरा उपयोग किया जाता है, अत: व्युत्पत्ति शास्त्र को कोश-विज्ञान के अन्तर्गत माना जाता है।

5.5.4 लिपि-विज्ञान

इस विज्ञान में लिपि की उत्पत्ति, विकास, और उसकी उपयोगिता आदि पर विचार किया जाता है। लिपि के आधार पर ही किसी भाषा का अध्ययन किया जाता है।

5.5.5 भाषिक-भूगोल

इसमें भौगोलिक दृष्टि से भाषा का अध्ययन किया जाता है। विश्व के किन-किन भागों में कौन-सी भाषा बोली जाती है? किस भाषा का कितना व्यापक क्षेत्र है? उसकी कितनी बोलियाँ और उप बोलियाँ हैं? इसका अध्ययन किया जाता है।

5.5.6 प्रागैतिहासिक खोज

इसमें भाषा-विज्ञान के आधार पर प्रागैतिहासिक काल की सभ्यता और संस्कृति का अध्ययन किया जाता है।

5.5.7 शैली-विज्ञान

भाषा-विज्ञान की यह नवीन किन्तु महत्वपूर्ण शाखा है। इसमें अध्ययन किया जाता है कि किसी भाषा के लेखक या कवि आदि भाषा के किन शब्दों को मुख्य रूप से अपनाते हैं। उनकी शैली की क्या विशेषताएँ हैं? इस विज्ञान के द्वारा लेखक, कवि और वक्ता का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है।

5.5.8 भू-भाषा-विज्ञान

इसमें विश्व की भाषाओं का विभाजन तथा उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक प्रभाव का संग्रह किया जाता है। राजभाषा एवं जनभाषा की समस्याओं का भी इसमें अध्ययन किया जाता है।

5.5.9 समाज भाषा-विज्ञान

इसमें भाषा और समाज का संबंध तथा समाज के विभिन्न स्तरों पर प्रयुक्त भाषा की ध्वनि, रुप, वाक्य और अर्थ आदि की विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।

5.5.10 मनोभाषा-विज्ञान

इसमें भाषा और विचार का संबंध, भाषा का मानस पटल पर प्रभाव, भाषा और अनुभूति आदि के मनोवैज्ञानिक पक्ष का अध्ययन किया जाता है।



5.6 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात हम यह कह सकते हैं कि भाषा एक व्यवस्था है और उस व्यवस्था का व्यवस्थित ज्ञान भाषा-विज्ञान कहलाता है। भाषाविज्ञान के अर्थ, अध्ययन क्षेत्र, प्रयोजन एवं अंगों को अनेक विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। भाषा-विज्ञान के विभिन्न अंगों में ध्वनि-विज्ञान, रुप-विज्ञान, शैली-विज्ञान आदि शामिल हैं। भाषा के महत्वपूर्ण अंगों के अतिरिक्त ज्ञान की अन्य शाखाओं से भी इसका गहरा संबंध है। इस प्रकार भाषाविज्ञान एक गहन विषय है।



5.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : किसी भाषा में जिन सिद्धान्तों एवं प्रक्रियाओं के द्वारा वाक्य बनते हैं, उनके अध्ययन को भाषा विज्ञान में वाक्यविन्यास, 'वाक्यविज्ञान' या सिन्टैक्स (syntax) कहते हैं। भाषाविज्ञान में रूपिम की संरचनात्मक इकाई के आधार पर शब्द-रूप (अर्थात् पद) के अध्ययन को पदविज्ञान या रूपविज्ञान (मॉर्फोलोजी) कहते हैं। अधिक जानने के लिए ऊपर देखें।

प्रश्न 2 का उत्तर : कोशविज्ञान (Lexicology) भाषाविज्ञान की वह शाखा है जिसमें शब्दों का अध्ययन किया जाता है जिसकी चर्चा विस्तारपूर्वक ऊपर की गयी है।

प्रश्न 3 का उत्तर : भाषाविज्ञान की वह शाखा जिसमें शब्दों के अर्थ का अध्ययन किया जाता है, अर्थविज्ञान कहलाता है। ज्यादा जानकारी के लिए ऊपर देखें।



5.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



5.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. ध्वनि-विज्ञान का अर्थ स्पष्ट कीजिये ?
2. भू-भाषा-विज्ञान किसे कहते हैं ?
3. लिपि-विज्ञान किसे कहते हैं ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1. भाषाविज्ञान के क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।
2. भाषाविज्ञान का परिभाषा देते हुए इसके प्रमुख अंगों पर प्रकाश डालिए।
3. भाषाविज्ञान के गौण अंगों पर विस्तृत रुप से चर्चा कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 6 :भाषाविज्ञान की शाखाएँ

इकाई की रूपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 समाजभाषाविज्ञान

6.4 अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान

6.5 कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान

6.6 मनोभाषाविज्ञान

6.7 ऐतिहासिक भाषाविज्ञान

6.8 तुलनात्मक भाषाविज्ञान

6.9 सारांश

6.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

6.11 अधिक जानने के लिए पढ़े

6.12 अभ्यास प्रश्न

6.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- भाषाविज्ञान की विभिन्न शाखाओं की भूमिका को समझ सकेंगे।
- वास्तव जीवन में भाषाविज्ञान के इन शाखाओं का महत्व के बारे में जान पाएंगे।
- और ये शाखाएँ कैसे प्रभाव डालते हैं उसे भी जानेंगे।

6. 2 प्रस्तावना

भाषाविज्ञान का क्षेत्र विभिन्न शखाओं तथा उप-शाखाओं में विभाजित हैं, जो भाषा की उत्पत्ति और विकास से लेकर हमारे मस्तिष्क द्वारा ध्वनि को संसोधित करने के तरीके से इसके प्रभाव तक सब कुछ करता है। पहले की इकाई में आप लोग भाषाविज्ञान के विभिन्न उपविषयों को पढ़ते आये हैं। लेकिन, वास्तविक जीवन परिदृश्यों में भाषाविज्ञान के वास्तविक अनुप्रयोग को देखते हुए, इसके अतिरिक्त सात उपक्षेत्रों – या शाखाओं पर विचार किया गया हैं-

- **समाजभाषाविज्ञान**- भाषा और समाज के बीच संबंधों का अध्ययन।
- **अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान**- भाषा से संबंधित जीवन समस्याओं की पहचान करने और उनके समाधान लागू करने का अध्ययन।
- **कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान**- कम्प्यूटेशनल परिप्रेक्ष्य से लिखित और बोली जाने वाली

भाषा को समझने का अध्ययन।

- **मनोभाषाविज्ञान**- भाषा और वाणी के मानसिक पहलुओं का अध्ययन।
- **शैलीविज्ञान**- उनकी तानवाला शैली के संबंध में भाषा का अध्ययन और व्याख्या।
- **ऐतिहासिक भाषाविज्ञान**- भाषाविज्ञान के इतिहास का अध्ययन और भाषाएँ कैसे बदलती हैं और वे एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं।
- **तुलनात्मक भाषाविज्ञान**- दो या दो से अधिक भाषाओं के बीच ऐतिहासिक संबंधों का अध्ययन और उनमें मौजूद समानताओं का निर्धारण करना। नीचे, प्रत्येक का विस्तृत परिचय दिया गया है -

6.3 समाजभाषाविज्ञान

भाषा समाज पर किस प्रकार प्रभावित करती है, इससे संबंधित क्षेत्र के रूप में, समाजशास्त्री यह जांच करते हैं कि आयु, नस्ल, लिंग या सामाजिक वर्ग जैसे उदाहरण कारक भाषा के उपयोग और व्याख्या को कैसे निर्धारित करते हैं। इसे भाषा के समाजशास्त्र के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो समाज पर भाषा के प्रभाव को देखता है।

6.4 अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान

अनुप्रयुक्त (व्यावहारिक) भाषाविज्ञान इस बात से संबंधित है कि भाषा को रोजमर्रा की जिंदगी की समस्याओं पर कैसे लागू किया जाता है। सरल उदाहरण जहां अनुप्रयुक्त (व्यावहारिक) भाषाविज्ञान का अध्ययन और समाधान के भीतर उपयोग किया जा सकता है, उनमें साइबर-धमकाने और ट्रोलिंग या उन लोगों के साथ संवाद करने के वैकल्पिक तरीके ढूंढना शामिल है जो बहुसंख्यक आबादी की तरह बोलने या सुनने में उपयोग नहीं कर सकते हैं, उदाहरण के लिए सांकेतिक भाषा। एक व्यावहारिक भाषाई संभवत: भाषा शिक्षा, अनुवाद, या भाषा नीति जैसे क्षेत्रों में काम करेगी। उदाहरण के लिए, एक व्यावहारिक भाषाविद् स्कूल में भाषा सिखाने के प्रभावी और कुशल तरीकों का पता लगाने के लिए पहली और दूसरी भाषा अधिग्रहण पर भी शोध कर सकता है।

6.5 कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान

कम्प्यूटेशनल भाषाविद् प्रोग्रामिंग का उपयोग भाषाई संरचना को बदलने या प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण जैसे व्यावहारिक अनुप्रयोगों के लिए कर सकते हैं। इसे साकार किए बिना, आप जितना सोचते हैं उससे कहीं अधिक कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान के उदाहरणों के साथ बातचीत कर सकते हैं। अध्ययन का यह क्षेत्र भाषाओं को इस तरह से स्पष्ट करते हुए जांच करता है कि कंप्यूटर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषा और वाक्य रचना के सिद्धांतों और गुणों को समझ सकें।

6.6 मनोभाषाविज्ञान

मनोभाषाविज्ञान भाषाविज्ञान के मानसिक पहलुओं को देखता है; भाषा उत्पन्न करने और समझने के लिए हमें संज्ञानात्मक क्षमताओं का ज्ञान आवश्यक है। इसमें शब्दों और वाक्यों के पीछे की मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन और जांच शामिल है और संचार करते समय उन्हें कैसे तैनात किया जाता है। मनोभाषाविज्ञान संज्ञानात्मक विज्ञान की एक शाखा है, जो भाषाविज्ञान के अन्य क्षेत्रों के साथ मिलकर काम करती है, खासकर जब विकासशील बच्चों द्वारा भाषा सीखने के तरीके की बात आती है।

6.7 ऐतिहासिक भाषाविज्ञान

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान भाषाओं के इतिहास का अध्ययन करता है; वे समय के साथ कैसे बदल गए हैं और वे एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं। इसके बाद यह आगे की देखता है कि भाषाएँ समय के साथ कैसे और क्यों बदलती हैं; अक्सर उन्हें पिछले स्वरूप में वापस लाया जाता है। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान भी तुलनात्मक भाषाविज्ञान के क्षेत्र के समान ही है।

6.8 तुलनात्मक भाषाविज्ञान

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में इस बात की जांच किया जाता है कि भाषाओं के बीच कहां शब्द 'उधार' लिए गए हैं, लेकिन कहां शब्द एक एकल, अक्सर प्राचीन, भाषा से संबंधित हो सकते हैं और उनके उपयोग और अर्थ कैसे और किस रूप में विकसित हुए हैं। इसका तात्पर्य विभिन्न भाषाओं की 'तुलना' करने से है।



अपनी प्रगति जांचे

प्रश्न 1. समाजभाषाविज्ञान से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 2. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान से क्या तात्पर्य है?



6.9 सारांश

भाषाविज्ञान को भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन में सर्वोत्तम रूप से वर्णित किया जा सकता है। हालाँकि, भाषा एक जटिल विषय है, यह न केवल इस बारे में है कि हम कैसे पढ़ते, लिखते या बोलते हैं, बल्कि यह भी है कि हमारे कार्य और वातावरण हमारी भाषा को कैसे प्रभावित कर सकते हैं, साथ ही हमारे कौशल या शिक्षा भी। इस इकाई से, हम आशा करते हैं कि हमने आपको भाषाविज्ञान की कुछ पारंपरिक अवधारणाओं से परिचित कराया है। हम वैध रूप से 'भाषा' का

अध्ययन कर सकते हैं जैसा कि हम इसे जानते हैं, क्योंकि जानवरों के रूप में हमारे पास इसकी सहज समझ है, जो इसका उपयोग कर सकते हैं।



6.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : समाजभाषाविज्ञान भाषाविज्ञान के व्यापक क्षेत्र में अध्ययन की एक शाखा है जो इस बात से संबंधित है कि समाज में भाषा कैसे कार्य करती है।

प्रश्न 2 का उत्तर : ऐतिहासिक भाषाविज्ञान इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि समय के साथ भाषाएँ कैसे बदलती हैं। तुलनात्मक भाषाविज्ञान उनकी समानताओं और अंतरों पर ध्यान केंद्रित करता है।



6.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



6.12 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये –

1. कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान का अर्थ स्पष्ट कीजिये ?
2. मनोभाषाविज्ञान किसे कहते हैं ?
3. शैलीविज्ञान किसे कहते हैं ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए –

1. भाषाविज्ञान के शाखाओं का परिचय दीजिए।
2. तुलनात्मक भाषाविज्ञान से आप क्या समझते हैं ? भाषाविज्ञान में तुलनात्मक भाषाविज्ञान की क्या भूमिका है ?

*** ***** ***

इकाई 7 : भाषाविज्ञान के अध्ययन की विभिन्न पद्धतियाँ

इकाई की रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 वर्णनात्मक पद्धति

7.4 ऐतिहासिक पद्धति या कालक्रमिक पद्धति

7.5 तुलनात्मक

7.6 संरचनात्मक (गठनात्मक)पद्धति

7.7 भाषाविज्ञान का प्रयोगात्मक पद्धति

7.8 सारांश

7.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

7.10 अधिक जानने के लिए पढ़े

7.11 अभ्यास प्रश्न

7.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- भाषाविज्ञान के अध्ययन की विभिन्न पद्धतियाँ को सीखेंगे।
- भाषाविज्ञान में इन पद्धतियों का महत्व को जान सकेंगे।
- इन पद्धतियों में किन–किन विषय को शामिल किया गया हैं, उनको जान पाएंगे।

7.2 प्रस्तावना

किसी भी विषय को हम श्रृंखलित रूप से जानने के लिए इसका वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक हैं। भाषाविज्ञान के अध्यन की वैज्ञानिकता से भाषाविज्ञान को एक निर्दिष्ट आकार मिलता है। अध्ययन की इसी प्रक्रिया की व्याकरणगत रूप एक भाषा के लिए सबसे महत्वपूर्ण है– क्योंकि सब उसी को अपनाकर एक निश्चित प्रक्रिया के साथ इसे आगे लेकर जाता है।



महत्वपूर्ण बिंदु

पाणिनि (300 ई:पू:) को संस्कृत भाषा के सबसे बड़े वैयाकरण के विद्वान माना जाता है। इनके प्रसिद्ध व्याकरण का नाम 'अष्टाध्यायी' है, जिसमें आठ अध्याय और लगभग चार सहस्र सूत्र हैं। संस्कृत भाषा को व्याकरण सम्मत रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय माना जाता है।

भाषाविज्ञान भाषा कारण-कार्यपरक युक्तिपूर्ण विवेचन-विश्लेषण के लिए कुछ निश्चित प्रक्रियाओं में बंध कर चलता है। इन्हीं प्रक्रियाओं के आधार पर भाषाविज्ञान का अध्ययन किया जाता है। भाषाविज्ञान के अध्ययन की पांच पद्धतियाँ प्रचलित हैं। जो निम्न प्रकार हैं-

- वर्णनात्मक पद्धति
- ऐतिहासिक पद्धति
- तुलनात्मक पद्धति
- संरचनात्मक (गठनात्मक) पद्धति और
- प्रयोगात्मक पद्धति ।

नीचे इस पर विस्तृत रूप से आलोचना प्रस्तुत किया गया हैं-

7.3 वर्णनात्मक पद्धति

वर्णात्मक पद्धति द्वारा किसी एक भाषा का, किसी एक काल में ध्वनि, रूप, शब्द, अर्थ, वाक्य रचना के आधार पर इसके स्वरूपों पर विश्लेषण किया जाता है। इसके लिए इसमें उन सिद्धांतों पर प्रकाश डाला जाता, जिनके आधार पर भाषा-विशेष की रचनागत विशेषताओं को स्पष्ट किया जा सके। गौरतलब है कि इस पद्धति में एक साथ विभिन्न कालों की भाषा को समावेश नहीं किया जा सकता, क्योंकि हर काल की भाषा के विश्लेषण के लिए पृथक् पृथक् सिद्धांतों का प्रयोजन है। इसे विश्लेषनात्मक भाषाविज्ञान भी कहते हैं।

पाणिनि को संसार के सबसे बड़े भाषाविज्ञानीयों में से एक माना जाता हैं, जिन्होंने वर्णनात्मक रूप में भाषा का विशद एवं व्यापक अध्ययन किया हैं। कात्यायन एवं पतंजलि भी इसी कोटि में आते हैं। ग्रीक विद्वानों में थ्रैक्स, डिस्कोलस तथा इरोडियन ने भी इस क्षेत्र में उल्लेख्य कार्य किया था। पाणिनि से प्रभावित होकर ब्लूमफील्ड (अमरीका) ने सन् 1932 ई. में 'लैंग्वेज' नामक अपना ग्रन्थ प्रकाशित करवाकर वर्णनात्मक भाषाविज्ञान के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इधर पश्चिमी देशों में से विशेषकर अमरीका में वर्णनात्मक भाषाविज्ञान का उम्मीद से ज्यादा विकास माना गया है।

7.4 ऐतिहासिक पद्धति या कालक्रमिक पद्धति

किसी एक भाषा में विभिन्न कालों के विवरण जब मिला दिए जाते हैं, तब उसे ऐतिहासिक अध्ययन कहते हैं। इस प्रकार इसमें किसी भी भाषा के इतिहास का अध्ययन किया जाता है तथा सिद्धांत की दृष्टि से उस भाषा के परिवर्तन संबंधी नियमों, सिद्धांतों तथा कारणों आदि का निर्धारण किया जाता है। वर्णनात्मक पद्धति के साथ इस पद्धति का मूल अंतर यह है कि वर्णनात्मक पद्धति जहाँ एककालिक है, वहाँ ऐतिहासिक पद्धति द्विकालिक।

संस्कृत भाषा की प्राचीनता ने ऐतिहासिक पद्धति की ओर भाषाविज्ञानियों का ध्यान

आकृष्ट किया। 'फिलॉलोजी' का मुख्य प्रतिपाद्य प्राचीन ग्रन्थों की भाषाओं का तुलनातमक अध्ययन ही था। मुख्यत: संस्कृत, जर्मन, ग्रीक, लैटिन जैसी भाषाओं पर ही विद्वानों का ध्यान केंद्रित रहा। फ्रेडरिक औगुस्ट वुल्फने सन् 1777 ई. में ही ऐतिहासिक पद्धति की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया था।

वस्तुत: किसी भी भाषा के विकासात्मक रूप को समझने के लिए ऐतिहासिक पद्धति का सहारा लेना ही पड़ेगा। पुरानी हिन्दी अथवा मध्यकालीन हिन्दी और आधुनिक हिन्दी में क्या परिवर्तन हुआ है, इसे ऐतिहासिक पद्धति द्वारा ही स्पष्ट किया जा सकता है।

7.5 तुलनात्मक पद्धति

तुलनात्मक पद्धति द्वारा दो या दो से अधिक भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। इसे मिश्रित पद्धति भी कह सकते हैं, क्योंकि इसमें विवरणात्मक पद्धति तथा ऐतिहासिक पद्धति दोनों का आधार लिया जाता है। यह अध्ययन तुलना किए जाने वाली भाषाओं की ध्वनियों, पदों, शब्दों, अर्थों, वाक्यों आदि के आधार पर किया जाता है। विवरण के लिए किसी एक काल को निश्चित करना होता है और तुलना के लिए कम-से-कम दो भाषाओं की अपेक्षा होती है।

तुलनात्मक पद्धति किन्हीं दो भाषाओं पर लागू हो सकती है। जैसे, भारतीय भाषाओं - भोजपुरी आदि में भी परस्पर तुलना की जाती है या फिर हिंदी-अंग्रेजी, असमीया-हिंदी, हिंदी-फारसी का भी तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। अर्थात् इसमें क्षेत्रगत सीमा नहीं है।

विलियम जोन्स, फ्रांस बॉप्प,मैक्समूलर, कर्टिअस, औगुस्ट श्लाइखर आदि विद्वानों ने तुलनात्मक भाषाविज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।

7.6 संरचनात्मक (गठनात्मक) पद्धति

संरचनात्मक भाषाविज्ञान भाषा की 'संरचना' को विवेच्य मानता है। इसका लक्ष्य किसी भाषा की निजी व्यवस्थागत विशिष्टताओं को विश्लेषित करना है। संरचनात्मक भाषाविज्ञान भाषा के शब्दार्थ की विवेचना की अपेक्षा उसकी व्यवस्था और संरचना के नियमों को नियमबद्ध करने पर अपना सारा ध्यान केन्द्रित रखता है। संरचनात्मक पद्धति वर्णनात्मक पद्धति की अगली कड़ी है। अमरीका में इस पद्धति का विशेष प्रभाव है। इसमें यांत्रिक उपकरणों को अधिक महत्त्व दिया जाता है, जिससे अनुवाद करने में विशेष सुविधा होती है। जैलिग हैरिस ने 'मेथेड्स इन स्ट्रक्रल लिंग्युस्टिक्स' नामक पुस्तक लिखकर इस पद्धति को विकसित किया।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. भाषा विज्ञान के वर्णनात्मक पद्धति से क्या तात्पर्य है ?

7.7 भाषाविज्ञान का प्रयोगात्मक पद्धति

विज्ञान की अन्य शाखाओं के समान भाषाविज्ञान के भी प्रयोगात्मक पक्ष हैं, जिनके लिये प्रयोग की प्रणालियों और प्रयोगशाला की अपेक्षा होती है। भिन्न-भिन्न यांत्रिक प्रयोगों के द्वारा उच्चारणात्मक स्वनविज्ञान (articulatory Phonetics), भौतिक स्वनविज्ञान (acoustic Phonetics) और श्रवणात्मक स्वनविज्ञान (auditory Phonetics) का अध्ययन किया जाता है। इसे प्रायोगिक स्वनविज्ञान, यांत्रिक स्वनविज्ञान या प्रयोगशाला स्वनविज्ञान भी कहते हैं। इसमें दर्पण जैसे सामान्य उपकरण से लेकर जटिलतम वैद्युत उपकरणों का प्रयोग हो रहा है। परिणामस्वरूप भाषाविज्ञान के क्षेत्र में गणितज्ञों, भौतिकशास्त्रियों और इंजीनियारों का पूर्ण सहयोग अपेक्षित हो गया है। कृत्रिम तालु और कृत्रिम तालु प्रोजेक्टर की सहायता से व्यक्ति विशेष के द्वारा उच्चारित स्वनों के उच्चारण स्थान की परीक्षा की जाती है। कायमोग्राफ स्वानों का घोषणत्व और प्राणत्व निर्धारण करने अनुनासिकता और कालमात्रा जानने के लिये उपयोगी है। लैरिंगो स्कोप से स्वरयंत्र (काकल) की स्थिति का अध्ययन किया जाता है। एंडोस्कोप लैरिंगोस्कोप का ही सुधार रूप है। ऑसिलोग्राफ की तरंगें स्वनों के भौतिक स्वरूप को पर्दे पर या फिल्म पर अत्यंत स्पष्टता से अंकित कर देती है। यही काम स्पेक्टोग्राफ या सोनोग्राफ द्वारा अधिक सफलता से किया जाता है। स्पेक्टोग्राफ जो चित्र प्रस्तुत करता है उन्हें पैटर्न प्लेबैक द्वारा फिर से सुना जा सकता है। स्पीचस्ट्रेचर की सहायता से रिकार्ड की हुई सामग्री को धीमी गति से सुना जा सकता है। इनके अतिरिक्त और भी छोटे बड़े यंत्र हैं, जिनसे भाषावैज्ञानिक अध्ययन में पर्याप्त सहायता ली जा रही है।

फ्रांसीसी भाषावैज्ञानिकों में रूइयो ने स्वनविज्ञान के प्रयोगों के विषय में (princeiles phonetique experiment, Paris, 1924) एक ग्रंथ लिखा। लंदन में प्रो. फर्थ ने विशेष तालुयंत्र का विकास किया। स्वरों के मापन के लिये जैसे स्वरत्रिकोण या चतुष्कोण की रेखाएँ निर्धारित की गई हैं, वैसे ही इन्होंने व्यंजनों के मापन के लिये आधार रेखाओं का निरूपण किया, जिनके द्वारा उच्चारण स्थानों का ठीक ठीक वर्णन किया जा सकता है। डेनियल जांस और इडा कैरोलीन वार्ड ने भी अंग्रेजी स्वनविज्ञान पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। फ्रांसीसी, जर्मन और रूसी भाषाओं के स्वनविज्ञान पर काम करने वालों में क्रमश: आर्मस्ट्रॉंग, बिथेल और बोयानस मुख्य हैं। सैद्धांतिक और प्रायोगिक स्वनविज्ञान पर समान रूप से काम करनेवाले व्यक्तियों में निम्नलिखित मुख्य हैं: स्टेटसन (मोटर फोनेटिक्स 1928), नेगस (द मैकेनिज्म ऑव दि लेरिंग्स,1919) पॉटर, ग्रीन और कॉप (विजिबुल स्पीच), मार्टिन जूस (अकूस्टिक फोनेटिक्स, 1948), हेफनर

(जनरल फोनेटिक्स 1948), मौल (फंडामेंटल्स ऑव फोनेटिक्स, 1963) आदि।

इधर एक नया यांत्रिक प्रयास आरंभ हुआ है, जिसका संबंध शब्दावली, अर्थतत्व तथा व्याकरणिक रूपों से है। यांत्रिक अनुवाद के लिए वैद्युत कम्प्यूटरों का उपयोग वैज्ञानिक युग की एक विशेष देन है। यह अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान का अत्यंत रोचक और उपादेय विषय है।



7.8 सारांश

वस्तुत: भाषाविज्ञान किसी भाषा के भाषावैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित है। भाषा का वैज्ञानिक विश्लेषण विभिन्न रूपों में किया जाता है- वर्णनात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक, संरचनात्मक तथा प्रयोगात्मक आदि। उल्लेखित ये सभी पद्धतियाँ भाषा के अपने-अपने क्षेत्र में भाषा का अध्ययन करके भाषाविज्ञान को सशक्त बनाती है।



7.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : इस पद्धति द्वारा किसी एक भाषा का किसी एक काल की संरचनात्मक विशेषताओं का विवेचन-विश्लेषण किया जाता है। इसके अलवा भी ऊपर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।



7.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र , विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



7.11 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. वर्णनात्मक पद्धति से आप क्या समझते हैं?

2. ब्लूमफील्ड (अमरीका) ने सन् 1932 ई. में कौन सी पुस्तक प्रकाशित की है?
3. फ्रांसीसी भाषावैज्ञानिक रूइयो ने कौन सी पुस्तक लिखी है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1. भाषाविज्ञान के अध्ययन की प्रमुख दिशाओं का परिचय दीजिए।
2. भाषाविज्ञान के प्रमुख अंगों का उल्लेख करते हुए प्रयोगात्मक पद्धति पर आलोचना कीजिए।
3. ऐतिहासिक पद्धति और तुलनात्मक पद्धति पर टिप्पणी लिखिए।

*** ***** ***

इकाई 8 : भाषाविज्ञान के साथ विभिन्न मानवीय विज्ञानों का संबंध

इकाई की रूपरेखा

8.1 उद्देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 मनोविज्ञान

8.4 इतिहास

8.5 भूगोल

8.6 समाजविज्ञान

8.7 व्याकरण

8.8 दर्शनशास्त्र

8.9 सारांश

8.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

8.11 अधिक जानने के लिए पढ़े

8.12 अभ्यास प्रश्न

8.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- भाषाविज्ञान के साथ विभिन्न मनवविज्ञानों के संबंध को जानेंगे।
- भाषाविज्ञान के अध्ययन में इन विज्ञानों की भूमिकाओं को समझ सकेंगे।
- इसकी आवश्यकताओं को भी जान पाएंगे।

8.2 प्रस्तावना

भाषा मानव जीवन की समस्त गतिविधियों का मूलाधार है। भाषा से ही हम परस्पर एक दूसरे के विचारों को व्यक्त करते हैं अथवा एक दूसरे के भावों से अवगत होते हैं। अपनी इच्छा वह अभिलाषा को व्यक्त करते समय लोगों के व्यवहार से भी हम प्रभावित होते हैं। तथा दूसरों को प्रभावित करने की कौशिश करते हैं। भाषा ही हमें ज्ञान विज्ञान के अनुसंधानों में सहायता प्रदान करती है तथा जीवन के पथ पर अग्रसर होकर प्रकृति के विविध रहस्य का उद्घाटन करने में सहायता करती है। जब भाषा हमारे जीवन जगत ज्ञान विज्ञान आदि के सभी क्षेत्रों में अपना अधिकार रखती है। तब भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाले भाषाविज्ञान का सामान्य ज्ञान विज्ञान की अन्य शाखा एंव प्रशाखाओं के प्रतिपादक विविध शास्त्रों से होना स्वाभाविक ही प्रतीत होता है। वैसे भी भाषा ज्ञान विज्ञान की सभी शाखाओं से सहायता प्राप्त करके अपने क्षेत्रों

में प्रभावी होता है और विविध शास्त्रों से उपयोगी सामग्री लेकर भाषा की वैज्ञानिक व्याख्या करता है। इसके अतिरिक्त जब सभी शब्द अपने-अपने ज्ञान विज्ञान द्वारा जीवन और जगत के रहस्यों का अनुसंधान से सर्वेक्षण करते हुए अपने अपने विषयों का प्रतिपादन करते हैं। तब सभी शास्त्रों का पारस्परिक संबंध भी अपरिहार्य है। यही कारण है कि भाषाविज्ञान के साथ मानव जीवन के विविध विज्ञानों से निकट एवं घनिष्ठ संबंध का होना। उनमें से कुछ संबंधों का विवेचन नीचे उपलब्ध है।



महत्वपूर्ण बिंदु

हिब्रू भाषा के कुछ विद्वानों ने बहुत-सी भाषाओं के वे शब्द इकट्ठे किए जो हिब्रू से मिलते जुलते थे और इस आधार पर यह सिद्ध किया कि हिब्रू ही संसार की सभी भाषाओं की जननी है।

8.3 मनोविज्ञान

भाषा का संबंध विचारों या भावों से है अर्थात् भाषा विचारों या भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। व्यक्ति पर्यावरण अथवा परिस्थिति से प्रभावित होता है और उस प्रभाव की अभिव्यक्ति प्रतिक्रिया के रूप में होती है। वह प्रतिक्रिया मानसिक, शारीरिक अथवा वाचिक हो सकती है। जैसे, अप्रिय बात देखने या सुनने पर हमारा मन क्षुब्ध और खिन्न हो जाता है। जो हमारी मानसिक प्रतिक्रिया का परिणाम है। कहीं हमारे पैर पर यदि आग का एक कण आ गिरे तो हम अविलम्ब पैर हटा लेते हैं। तात्पर्य यह है कि जब तक कोई विचार या भाव मन में नहीं उठे तब तक भाषा का उच्चारण हो ही नहीं सकता। अत: विचार या भाव का सम्बन्ध मन (मस्तिष्क) से है, जिसका अध्ययन मनोविज्ञान से है।

8.4 इतिहास

इतिहास और भाषाविज्ञान एक-दूसरे के लिए बहुत उपयोगी और सहायक हैं। इतिहास के निर्माण में भाषाविज्ञान से बहुत सहायता मिलती है। प्राचीन अभिलेख, शिलालेख, सिक्के आदि के पढ़ने पर ऐसे तथ्य सामने आते हैं, जो इतिहास निर्माण का आधार प्रस्तुत करते हैं या इतिहास की टूटी कड़ियाँ जोड़ने में सहायक होते हैं। उदाहरणार्थ, उत्तरी सीरिया में प्राप्त 'हित्ती' की कीलाक्षर लेखपट्टियों को पढ़ने के बाद यह निश्चय हो गया कि 'हित्ती' भारत-यूरोपीय परिवार की भाषा है।

8.5 भूगोल

जिस प्रकार इतिहास से भाषाविज्ञान का निकट सम्बन्ध है, उसी प्रकार भूगोल से भी।

संसार की हजारों भाषाओं का सीमा-निर्धारण भूगोल की सहायता से ही किया जा सकता है। यदि भूगोल का ज्ञान न हो तो किसी भाषा की सीमा कहाँ तक मानेंगे, यह कहना कठिन है। जहाँ भाषाओं की सीमाएँ थोड़ी दूर पर बदलती हैं, वहाँ तो यह कार्य और कठिन हो जाता है। सीमावर्ती भाषाओं में दो-दो, तीन-तीन भाषाओं के लक्षण दिखने लगते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें किसके अंतर्गत रखें, यह निर्णय करने के लिए भौगोलिक भाषावैज्ञानिक साधनों को काम में लाया जाता है।

8.6 समाजविज्ञान

समाजविज्ञान में समाज का अध्ययन होता है, अर्थात् सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य के आचार, विचार, व्यवहार आदि का विश्लेषण किया जाता है। व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध, व्यक्ति पर समाज का प्रभाव, समाज के निर्माण में व्यक्ति का प्रभाव आदि विषयों की चर्चा समाजविज्ञान में होता है। भाषा भी सामाजिक संपत्ति है। वह समाज में ही उत्पन्न और समाज में ही विकसित होती है। मनुष्य के आचार-विचार आदि में भाषा का कभी प्रत्यक्ष और कभी अप्रत्यक्ष प्रभाव रहता है। इस तरह भाषाविज्ञान समाजविज्ञान के बहुत समीप आ जाता है। जैसे, ब्राह्मण किसी दिन पंडित हुआ करते थे और क्षत्रिय किसी दिन ठाकुर। आज दोनों ज्ञान और अधिकार से वंचित हो गये हैं, फिर भी पुराने नाम खोजे जा रहे हैं। साधारणत: शिष्टाचार से लेकर क्रांतिकारी परिवर्तन तक भाषा के द्वारा ही संपन्न होता है।

8.7 व्याकरण

किसी भी भाषा का शुद्ध उच्चारण शुद्ध प्रयोग एवं शुद्ध लेखन के लिए व्याकरण आवश्यक है। व्याकरण भाषा का मूलाधार ही नहीं होता अपितु मेरुदंड भी होता है। इसलिए व्याकरण और भाषाविज्ञान संबंध काफ़ी गहरा है।

भाषाविज्ञान और व्याकरण बहुत क्षेत्र में अलग हैं। जहाँ व्याकरण किसी एक भाषा तक ही सीमित रहता है और जबकि भाषाविज्ञान विभिन्न भाषाओं का भी तुलनात्मक विवेचन करता है। व्याकरण किसी एक भाषा के सिद्ध एवं निष्पन्न रूपों की ही मीमंसा करता है। जबकि भाषाविज्ञान सिद्ध एवं असिद्ध सभी प्रकार की मीमांसा एवं विवेचना करता है। मगर इन अंतरों के बावजूद व्याकरण भाषाविज्ञान के लिए बहुत ही उपयोगी है। क्योंकि व्याकरण साधारणत: दो प्रकार के होते हैं- वर्णात्मक और व्याख्यात्मक। जब किसी भाषा के शब्द रूपों का प्रकृति प्रत्यय के आधार पर वर्गीकरण एवं विश्लेषण करता हुआ विभिन्न नियमों का निर्धारण करता है तो उसे वर्णनात्मक व्याकरण कहते है। उदहारण के तौर पर- पलीनिकृत, अष्टाध्याय, संस्कृति शब्द को श्रेष्ठ वर्णात्मक व्याकरण एवं व्याख्यात्मक व्याख्या है। दूसरी ओर व्याख्यात्मक व्याकरण में किसी भाषा की दार्शनिक व्याख्या की जाती है। जैसे- महर्षि, पंतजलिकृत: महाभाषा, संस्कृत

भाषा का सर्वश्रेष्ठ व्याख्यात्मक व्याकरण आदि। उल्लेखित दोनों व्याकरण वर्णात्मक भाषाविज्ञान में एक उपासक और उप अध्याय होता है। क्योंकि उसके ऐतिहासिक तुलनात्मक एवं साहित्य विवेचन को आधार बनाकर भाषाविज्ञान अपने अनुसार प्रयोग होता है और यह पता चलता है कि अमुक शब्द का मूल शब्द क्या था किन-किन परिस्थितियों में उसमें विकास हुआ हैं। किस तरह से आगे विकसित होता हुआ वर्तमान रूप प्राप्त हुआ है। व्याकरण ही भाषाविज्ञान विविध ध्वनियों रूपों शब्दों वाक्यों से परिचित करता है व्याकरण ही भाषाविज्ञान की प्रकृति एवं उसके प्रयोग से भाषाविज्ञान को अवगत कराता है और व्याकरण ही भाषाविज्ञान को यह बताता है कि अमुख भाषा में कितनी ध्वनियां प्रचलित है। कितने वाणी का प्रयोग होता है। उनके उच्चारणों की विधि क्या है? उनमें से कौन सी सार्थक (अर्थ) ध्वनि है और कौन सी ध्वनियाँ निरर्थक शब्दों के वर्तमान रूप कौन से हैं। तथा उसके प्रयोगों में क्या विशेषता है? इस प्रकार भाषाविज्ञान को अपना कार्य संपादक करने के लिए सर्वाधिक अच्छा माना हुआ व्याकरण ही प्रस्तुत करता है। और व्याकरण ही भाषाविज्ञान को अन्वेषण की दिशा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त भाषाविज्ञान को ध्वनि विज्ञान, पद विज्ञान, शब्द विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, सर्वाधिक सामग्री व्याकरण से ही प्राप्त होती है। यही कारण है कि भाषाविज्ञान और व्याकरण एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध रखते है।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. भाषा विज्ञान के इतिहास और भूगोल की चर्चा करें?

प्रश्न 2. व्याकरण से क्या आशय है?

8.8 दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्र इस बात से संबंधित है कि सत्य और वास्तविकता क्या हैं और हम उन्हें कैसे जानते हैं, जिसमें अन्य विद्वानों द्वारा मतों को जानने की समस्याएँ भी शामिल होती हैं। भाषाविज्ञान भाषा की संरचनाओं से संबंध रखता है, हम उन्हें कैसे सीखते हैं, वे कैसे भिन्न होते हैं और हम उन्हें कैसे उत्पन्न करते हैं। दर्शन और भाषाविज्ञान के बीच संबंध जटिल और बहुआयामी है। भाषाविज्ञान, भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन है। इसका दर्शनशास्त्र से गहरा संबंध है, विशेष रूप से भाषा के दर्शन और मन के दर्शन के क्षेत्रों में अगर ध्यान दिया जाए तो इसमें काफ़ी समानता नजर आती हैं। लंबे समय से भाषा की प्रकृति, इसकी संरचना, विचार आदि से भाषाविज्ञान का संबंध और संचार की भूमिका में दार्शनिकों की रुचि रही है।

भाषाविज्ञान अनुभवजन्य आँकड़े और सैद्धांतिक रूपरेखा प्रदान करता है, जो इन विषयों में दार्शनिक पूछताछ को सूचित कर सकता है। बदले में, दर्शन वैचारिक उपकरण और महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो भाषाई विश्लेषण को समृद्ध करता है और भाषा के अध्ययन में मूलभूत मुद्दों को स्पष्ट करने में मदद मिलता है। कुल मिलाकर, दर्शन और भाषाविज्ञान

के अंतर्संबंध ने फलदायी अंत:विषय संवाद को जन्म दिया है और दोनों क्षेत्रों में प्रगति में योगदान दिया है।



8.9 सारांश

भाषाविज्ञान का विभिन्न मानवीय-विज्ञानों का संबंध एक श्वास्वत बात है। मानव जीवन में भाषाविज्ञान के साथ तथा साहित्य की विभिन्न विज्ञानों से संबंध एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। भाषाई मनोवैज्ञानिक उन संस्कृतियों के सन्दर्भ में मानव भाषाओं की प्रकृति का अध्ययन करता है। विभिन्न क्षेत्र के विद्वान भाषा की सामाजिक और सांस्कृतिक नींव को समझते हुए उसकी प्रकृति में भाषाओं के स्वरूपों पर आलोचना करता हैं। जिस भाषा का साहित्य तथा मानव जीवन से संबंध नहीं होता हैं, उसके भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का अवकाश भी कम है और समाज से वो भाषाएँ एक दिन लुप्त भी हो जाते हैं।



8.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : ऐतिहासिक भाषाविज्ञान भाषाओं के विकास और परिवर्तन का अध्ययन करता है। इसमें भाषाओं की उत्पत्ति, विशिष्ट समय में हुई परिवर्तन और उनके आपसी संबंधों का अध्ययन होता है। भाषा-भूगोल (language geography) मानव भूगोल की एक प्रमुख शाखा है। इस शाखा के अन्तर्गत किसी भाषा या क्षेत्रीय बोली में पाई जाने वाली क्षेत्रीय एवं भौगोलिक विभिन्नताओं का अध्ययन किया जाता हैं।

प्रश्न 2 का उत्तर : किसी भी भाषा के अंग प्रत्यंग का विश्लेषण तथा विवेचन व्याकरण कहलाता है। व्याकरण वह विद्या है जिसके द्वारा किसी भाषा को शुद्ध बोला, पढ़ा और शुद्ध लिखा जाता है।



8.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



8.11 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य किसका विश्लेषण करता है?
2. संस्कृत व्याकरण के रचियता किसको माना जाता है?
3. भाषाविज्ञान किसका वैज्ञानिक अध्ययन हैं?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1. भाषाविज्ञान के साथ विभिन्न विज्ञानों का संबध स्पष्ट कीजिए।
2. भाषाविज्ञान के अर्थ को समझाते हुए इसके साथ मनोविज्ञान का संबंध स्पष्ट कीजिए।
3. इतिहास और दर्शन के साथ भाषाविज्ञान का क्या संबंध है?

*** ***** ***

इकाई 9 : स्वनविज्ञान-1

इकाई की रूपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 इतिहास

9.4 स्वनविज्ञान का स्वरूप एवं इसकी शाखाएँ

9.5 सारांश

9.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

9.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

9.8 अभ्यास प्रश्न

9.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- स्वन के अर्थ और स्वरूप से परिचित होंगे।
- स्वनविज्ञान के विभिन्न शाखाओं से जान पाएंगे।
- स्वनविज्ञान के इतिहास से भी परिचय प्राप्त करेंगे।

9.2 प्रस्तावना

स्वनविज्ञान (ध्वनिविज्ञान) भाषाविज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत मानव द्वारा बोली जाने वाली ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है। यह बोली जाने वाली ध्वनियों के भौतिक गुण, उनके शारीरिक उत्पादन, श्रवण ग्रहण और तंत्रिका-शारीरिक बोध की प्रक्रियाओं से संबंधित है।



महत्वपूर्ण बिंदु

2,000 साल से भी ज़्यादा पहले लिखी गई अष्टाध्यायी या 'आठ अध्याय', चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में विद्वान पाणिनी द्वारा लिखी गई एक प्राचीन पुस्तक है। यह एक भाषाई पाठ है, जिसने संस्कृत को लिखने और बोलने के तरीके के लिए मानक तय किए हैं।

9.3 इतिहास

स्वनविज्ञान का अध्ययन प्राचीन भारतमे लगभग 2000 वर्ष पहले से किया गया, जिसका प्रमाण हमें पाणिनि द्वारा 500 ई. पू में रचित उनके संस्कृत के व्याकरण संबंधी ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' में मिलता है, जिसमे व्यंजनों के उच्चारण के स्थान तथा उच्चारण की विधि का विस्तार से वर्णन किया गया है। आज की अधिकतर भारतीय लिपियों मे व्यंजनों का स्थान पाणिनि के वर्गीकरण पर आधारित है।

आधुनिक काल में स्वनिकों का अध्ययन जोशुआ स्टील (1779) तथा अलेक्जेण्डर बेल (1867) आदि के प्रयासों से आरम्भ हुआ था।

9.4 स्वनविज्ञान का स्वरूप और इसकी शाखाएँ

भाषा की लघुत्तम इकाई 'स्वन' है। इसे ध्वनि नाम भी दिया जाता है। ध्वनि के अभाव में भाषा की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। भाषाविज्ञान में स्वन के अध्ययन संदर्भ को 'स्वनविज्ञान' की संज्ञा दी जाती है। ध्वनि शब्द ध्वन् धातु में इण् (इ) प्रत्यय के योग से बना है। भाषाविज्ञान के गंभीर अध्ययन में ध्वनिविज्ञान एक महत्वपूर्ण शाखा बन गई है। इसके लिए ध्वनिशास्त्र, ध्वन्यालोचन, स्वनविज्ञान, स्वनिति आदि नाम दिए गए हैं। अंग्रेजी में उसके लिए 'फोनेटिक्स' (Phonetics) और फोनोलॉजी (phonology) शब्दों का प्रयोग होता है। इन दोनों शब्दों की निर्मिति ग्रीक के 'फोन' (phone) से है।

स्वन (ध्वनि) के अध्ययन में तीन पक्ष सामने आते हैं-

1. उत्पादक
2. संवाहक
3. संग्राहक

स्वन उत्पन्न करनेवाले व्यक्ति या वक्ता को स्वन उत्पादक की संज्ञा देते है। संग्राहक या ग्रहणकर्ता श्रोता होता है, जो ध्वनि को ग्रहण करता है। संवाहक या संवहन करनेवाला माध्यम जो मुख्यत: वायु की तरंगों के रूप में होता है। स्वन प्रक्रिया में तीनों अंगों की अनिवार्यता स्वत: सिद्ध है। जब मुख के विभिन्न अंगों में से किन्हीं दो या दों से अधिक अव्यवयों के सहयोग से ध्वनि उन्पन्न होगी तभी स्वन (ध्वनि) का अस्तित्व सम्भव है। ध्वनि-उत्पादक अवयवों की भूमिका के अभाव में स्वन का अस्तित्व असंभव है।

ध्वनि-उत्पादक अवयवों की उपयोगी भूमिका के बाद यदि संवाहक या संवहन माध्यम का अभाव होगा, तो स्वन का आभास असम्भव है। माना एक व्यक्ति एक वायु-अवरोधी (air-tight) कक्ष में बैठ कर ध्वनि करता है, तो वायु तरंग कक्ष से बाहर नहीं आ पाती और बाहर का व्यक्ति ध्वनि-ग्रहण नहीं कर सकता है। इस प्रकार स्वन प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाती है।

तृतीय अंग संग्राहक या श्रोता के अभाव में ध्वनि-उत्पादन का अस्तित्व स्वत: ही शून्य

हो जाता है। इस प्रकार स्वन प्रक्रिया में वक्ता (उत्पादक), माध्यम (संग्राहक) तीनों का होना अनिवार्य होता है।

ध्वनि के सार्थक और निरर्थक दो स्वरूप हैं। भाषाविज्ञान में केवल सार्थक ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है। ध्वनि उत्पादन प्रक्रिया में वायु मुख या नाक दोनों ही भागों से निकलती है। इस प्रकार ध्वनि को अनुनासिक तथा निरनुनासिक दो वर्गो में विभक्त कर सकते हैं। ध्वनियों के उच्चारण में वायु मुख-विवर के साथ नासिका-विवर से भी निकलती है। उसे अनुनासिक ध्वनि कहते हैं। जिन ध्वनियों के उच्चारण में वायु केवल मुख-विवर से निकले उसे निरनुनासिक या मौखिक ध्वनि कहते हैं। ध्वनि की तीव्रता और मंदता के आधार पर उसे नाद, श्वास नली तथा जपित, तीन वर्गो में विभक्त कर सकते हैं। जब ध्वनि उत्पादन में स्वर तंत्रियाँ एक दूसरे से मिली होती हैं, तो वायु उन्हें धक्का देकर बीच से बाहर आती है, ऐसी ध्वनि को नाद ध्वनि कहते हैं, यथा- ग्, घ्, ज् आदि। इसे सघोष ध्वनि भी कहते हैं। जब स्वर तंत्रियाँ एक दूसरे से दूर होती हैं तो निश्वास की वायु बिना घर्षण के सरलता से बाहर आती है। ऐसी ध्वनि को 'श्वास' या अघोष कहते हैं; यथा क्, त् प् आदि। जब बहुत मंद ध्वनि होती है तो दोनों स्वर तंत्रियों के किसी कोने से वायु बाहर आती है। ऐसी ध्वनि को जपित ध्वनि कहते हैं।

भाषा-अध्ययन में स्वनविज्ञान का विशेष महत्त्व है क्योंकि अन्य वृहत्तर इकाइयों का ज्ञान इसके ही आधार पर होता है। इसके ही अन्तर्गत विभिन्न ध्वनि उत्पादक अवयवों का अध्ययन किया जाता है। स्वनों के शुद्ध ज्ञान के पश्चात शुद्ध लेखन को सबल आधार मिल जाता है। उच्चारण में होने वाले विविध संदर्भों के परिवर्तनों का ज्ञान भी सम्भव होता है।

स्वनविज्ञान में विभिन्न ध्वनियों के अध्ययन के साथ उनके उत्पादन की प्रक्रिया का विस्तृत विश्लेषण किया जाता है। इसी अध्ययन क्रम में ध्वनि उत्पादक विभिन्न अंगों की रचना और उनकी भूमिका का भी अध्ययन किया जाता है। ध्वनिगुण और उसकी सार्थकता का निरूपण भी किया जाता है। स्वन के साथ 'स्वनिम' का भी विवेचन-विश्लेषण किया जाता है। भाषा की उच्चारणात्मक लघुत्तम इकाई अक्षर के स्वरूप और उनके वर्गीकरण पर भी विचार किया जाता है। समय, परिस्थिति और प्रयोगानुसार विभिन्न ध्वनियों में परिवर्तन होता रहता है। ध्वनि-परिवर्तन के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों ने कुछ ध्वनि नियम निर्धारित किए हैं। इन नियमों के अध्ययन के साथ ध्वनि-परिवर्तन की दिशाओं और ध्वनि-परिवर्तन के कारणों पर विचार किया जाता है।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. स्वनविज्ञान की शाखाओं का उल्लेख करें?

प्रश्न 2. स्वनिक परिवर्तन के कारणों की व्याख्या कीजिये?

ध्वनि परिवर्तन के मूलत: ऐतिहासिक और भौगोलिक दो कारण हैं। 'अग्नि' से 'आग' शब्द का बनना ध्वनि परिवर्तन कहा जाएगा। तत्सम शब्दों में धीरे-धीरे ध्वनि परिवर्तन से ही तद्भव शब्दों का निर्माण हुआ है। इसी प्रकार अन्य भाषाओं के संपर्क से भी भाषा में ध्वनि परिवर्तन होता है। किसी भाषा का जब भौगोलिक विस्तार होता है तो वह अपने मूल बोली के स्वरूप को छोड़ने लगती है। वह ऐतिहासिक क्रम से कालांतर में इतनी बदल जाती है कि उसका स्वरूप उसके मूल भौगोलिक या स्थानीय रूप से बिल्कुल भिन्न हो जाता है। उदाहरण के लिए- हिन्दी का भौगोलिक विस्तार होने पर वह अपने मूल स्थानीय खड़ी बोली के रूप से बाहर निकल कर राजस्थानी, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, मैथिली तक से संबद्ध होकर भाषा के रूप में परिवर्तित हो गई।

ध्वनि परिवर्तन के अनेक कारणों में से एक उच्चारण में सुविधा या प्रयत्न-लाघव को प्रमुख माना जाता है। प्राय: बहुत से शब्दों के उच्चारण के समय उनमें आने वाली कठिन ध्वनियों को सुविधा के लिए आसान ध्वनि में बदल कर उच्चरित करने की प्रवृत्ति मिलती है। जैसे- संयुक्त व्यंजन के उच्चारण में कठिनाई होने पर आसानी से शब्द का उच्चारण करने के लिए उसके एक व्यंजन का लोप कर दिया जाता है, उदाहरण के लिए, 'द्वि' का 'दो', या 'स्नेह' का 'नेह' उच्चारण। इसके अतिरिक्त आसान ध्वनियों के प्रयोग या ध्वनियों के क्रम में परिवर्तन के द्वारा भी उच्चारण को सुविधाजनक बनाया जाता है। जैसे 'ब्राह्मण' का 'ब्राम्हण' उच्चारण। इसी प्रकार अपने आस-पास की ध्वनियों के कारण भी कोई ध्वनि प्रयोग में आते-आते परिवर्तित हो जाती है। जैसे- यदि किसी अघोष व्यंजन के आसपास कोई घोष व्यंजन हो तो वह घोष हो जाता है। जैसे 'कंकण' का 'कंगन' या 'शाक' का 'साग'।

इसी प्रकार, किसी दूसरे शब्द से समानता के कारण कुछ शब्दों की ध्वनियाँ उन्हीं के समान बोले जाने के कारण परिवर्तित हो जाती हैं। जैसे- संस्कृत का 'एकदश' शब्द 'द्वादश' के सादृश्य पर 'एकादश' के रूप में बोले जाने लगे।

इन ऐतिहासिक परिवर्तनों के अतिरिक्त भाषाओं के आपसी संपर्क के कारण भी ध्वनि परिवर्तन होते हैं। एक भाषा के कुछ शब्द जब दूसरी भाषा में अपनाए जाते हैं तो उनमें ध्वनि परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए 'मुंबई' मराठी का तत्सम रूप है। जिसका हिंदी में परिवर्तित तद्भव रूप 'बंबई' और अंग्रेजी में 'बांबे' है। यह ध्वनि परिवर्तन भाषा भेद या भौगोलिक परिवर्तन के कारण हुआ है। भौगोलिक विस्तार के कारण भी ध्वनि परिवर्तन होता है। क्षेत्र बदलने से भाषा में बदलाव आता है। जिस भाषा का भौगोलिक विस्तार होता है, उसकी ध्वनियों के उच्चारण में देश-भेद से भी अनेक परिवर्तन होते हैं।



9.5 सारांश

भाषा को गतिशील और परिवर्तनशील माना जाता है। प्रत्येक भाषा में आंतरिक परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। यह परिवर्तन या बदलाव सभी भाषिक स्तरों जैसे- ध्वन्यात्मक, रूपात्मक, अर्थात्मक आदि पर जारी रहता है। इन सभी परिवर्तनों में ध्वनि परिवर्तन मुख्य रूप से सबसे अधिक क्रियाशील रहता है। अपितु यह कहा जा सकता हैं, वर्तमान युग में स्वनविज्ञान का महत्व किसी भाषा के समस्त प्रकार के अध्ययनों के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। और या परिवर्तन कई कारणों से हो सकता है। जिसका अध्ययन इस इकाई में किया गया है।



9.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : स्वनविज्ञान की तीन शाखाएँ होती हैं- उच्चारणमूलक स्वनविज्ञान (Articulatory phonetics), सांचारिक या संवहनमूलक स्वनविज्ञान (Acoustic phonetics).



9.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3 आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणस।



9.8 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. स्वन (ध्वनि) के अध्ययन में तीन पक्ष कौन- कौन सा है?
2. ध्वनि परिवर्तन के दों कारण कौन-कौन से हैं?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1. स्वनिमविज्ञान के स्वरूप का विवेचन कीजिए।
2. स्वनिमविज्ञान के इतिहास को दर्शाते हुए इसके विभिन्न शाखाओं पर आलोचना कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 10 : स्वनविज्ञान-2

इकाई की रूपरेखा

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 स्वनिम विज्ञान की अवधारण

10.4 स्वनिम के भेद

10.5 स्वनिम परिवर्तन के कारण

10.6 सारांश

10.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

10.8 अधिक जानने के लिए पढ़े

10.9 अभ्यास प्रश्न

10.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप -

- स्वनिमविज्ञान की अवाधारानाओं को जान पाएंगे।
- स्वनिमविज्ञान को लेकर विद्वानों की धारणाओं के बारे में पता चलेगा।
- स्वनिमविज्ञान के भेद को जान सकेंगे।

10.2 प्रस्तावना

ध्वनि (स्वनिम) विज्ञान की जिस शाखा में किसी भाषा विशेष के स्वनिमों (ध्वनिग्रामों) का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है, उसे ही स्वनिम विज्ञान या ध्वनि विज्ञान कहते हैं। शब्द अंग्रेजी भाषा के 'फोनिक' का नवीनतम हिंदी अनुवाद है। इसके लिए अब तक 'ध्वनि-ग्राम' का प्रयोग होता रहा है, किंतु भारत सरकार के पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग में 'फोनिक' का हिंदी अनुवाद स्वनिम कर दिया है।

10.3 स्वनिमविज्ञान की अवधारणा

स्वनिमविज्ञान को किसी भी भाषा की सार्थक ध्वनियों की व्यवस्था का अध्ययन माना जा सकता है। स्वनिमविज्ञान अपनी मूल इकाई के रूप में स्वनिम (Phoneme) की संकल्पना करता है, साथ ही स्वन (Phone) तथा संस्वन, सहस्वन या उपस्वन (Allophone), उनके वितरण व अनुक्रम आदि का अध्ययन करता है। स्वनिमवैज्ञानिक विश्लेषण में ध्वनिशास्त्री मानव मुख से निकलने वाली अनंत वाक् ध्वनियों को इस प्रकार कुछ सीमित ध्वनियों में

व्यवस्थित करता है कि वे परस्पर अर्थभेदकता को अभिव्यक्त करने लगती हैं। अगर हम इस बात पर गौर करें तो समझ पाएंगे कि स्वनविज्ञान या ध्वनिविज्ञान (Phonetics) का अध्ययन करने वाले के लिए जहाँ मानव मुख से निकलने वाली प्रत्येक ध्वनि महत्वपूर्ण है वहीं स्वनिमविज्ञान (Phonemics) का अध्ययन करने वाले के लिए केवल उन्हीं ध्वनियों का महत्व है जो कि भाषा में प्रयुक्त होने पर एक-दूसरे से अर्थ भेद प्रकट कर सके। स्वनिमविज्ञानी के लिए अन्य ध्वनियों का कोई महत्व नहीं है। इस रूप में कहा जा सकता है कि स्वनिमविज्ञानी का कार्य वहाँ से आरंभ होता है जहाँ पर कि स्वनविज्ञानी का कार्य समाप्त होता है।

10.4 स्वनिम के भेद

स्वनिम दो प्रकार के होते हैं- खंड्य और खंड्येतर।

खंड्य स्वनिम वे ध्वनियाँ हैं, जिनका पृथक एवं स्वतंत्र उच्चारण संभव है। इनका स्वतंत्र अस्तित्व होता है। खंड्य स्वनिम में स्वर और व्यंजन ध्वनियाँ आती हैं। जो निम्न प्रकार हैं-

स्वर- अ, आ, इ, ई, ए, ऐ, ओ, औ, उ, ऊ।

व्यंजन- क ख ग घ ङ च छ ज झ

ट ठ ड ढ ण

त ठ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

स श ष ह ।

खंड्येतर स्वनिम स्वतंत्र रूप में नहीं आत हैं। वे खंड स्वनिमों पर आधारित होते हैं।

10.5 स्वनिम परिवर्तन के कारण

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में,' स्वनिमिक परिवर्तन कोई भी ध्वनि परिवर्तन है जो किसी भाषा में स्वनिमों के वितरण को बदल देता है। दूसरे शब्दों में, एक भाषा अपने स्वनिमों के बीच विरुद्धों (opposition) की एक नई प्रणाली विकसित कर लेती है। पुराने व्यतिरेक (contrasts) गायब हो सकते हैं, कुछ एक नए उभर सकते हैं, या वे बस पुनर्व्यवस्थित हो सकते हैं। ध्वनि परिवर्तन भाषा की स्वनिमिक संरचनाओं (Phonological structures) में परिवर्तन के लिए एक प्रेरक हो सकता है। ठीक इसी तरह, स्वनिमिक परिवर्तन ध्वनि परिवर्तन की प्रक्रिया को भी प्रभावित कर सकता है। स्वन परिवर्तन (Phonetic) बनाम स्वनिक परिवर्तन (Phonological)।

स्वनिम सूची या स्वनिमिक तालमेल में किसी भी संशोधन के बिना भी ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो सकता है। यह परिवर्तन विशुद्ध रूप से सहस्वनिक या उपस्वनिक होता है। यह दो बदलावों में से किसी एक रूप में घटित हो सकता है। या तो स्वनिम एक नए सहस्वन में बदल

जाता है (जिसका अर्थ है कि ध्वन्यात्मक रूप बदल जाता है) या स्वनिम के सहस्वन का वितरण परिवर्तित हो जाता है।

ध्वनि परिवर्तन चाहे लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया का परिणाम हो या कम समय की प्रक्रिया का, कभी भी बिना कारण नहीं होता है। ध्वनि परिवर्तन के पीछे कोई न कोई भाषिक या भाषिकेतर कारण अवश्य होता है। विभिन्न भाषाओं के ध्वन्यात्मक परिवर्तनों का विश्लेषण करने पर देखा गया है कि ये कारण मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं- आदेशात्मक (substitutive) तथा विकासात्मक (evolutive)।

1. आदेशात्मक कारण

आदेशात्मक कारणों के दो रूप होते हैं - उच्चारणगत तथा श्रवणगत। प्रथम का संबंध वक्ता के साथ होता है तो दूसरे का श्रोता के साथ। चूँकि वाग्व्यवहार का संबंध हमेशा ही उच्चारण तथा सुनने की क्रियाओं के साथ होता है, इसलिए इन दोनों ही छोर पर इसमें विकार या परिवर्तन की संभावना बनी रहती है। अकेला आदमी होगा तो वाग्व्यवहार की कोई संभावना न होने से उसमें विकार की संभावना भी व्यक्त नहीं की जा सकती। इन दो जगहों पर होने वाले परिवर्तनों के मूल कारणों पर विचार करें तो आदेशात्मक कारणों के अनेक रूप हो सकते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख उल्लेखनीय कारण यहाँ बताए जा रहे हैं। इनमें से भी कुछ को कालांतर में कम महत्वपूर्ण माना गया या लगभग अमान्य ही कर दिया गया।

2. वाग्यंत्रों की विविधता

यह लगभग मानी हुई बात है कि किन्हीं भी दो व्यक्तियों की वाग्यंत्र समान नहीं हो सकते। यही कारण है कि उनके उच्चारणों में भी अंतर आ जाना स्वाभाविक है। कई बार यह अंतर वाक् दोष के कारण भी हो सकता है किन्तु यह मानना उचित नहीं कि इसी से भाषा में ध्वनि-परिवर्तन हो जाया करते हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति में ऐसी शक्ति नहीं हो सकती कि वह अपने संपूर्ण भाषाई समाज पर अपने उच्चारण को आरोपित कर दे, न ही कोई ऐसी शक्ति है, जो कि किसी ध्वन्यात्मक परिवर्तन का सामान्यीकरण कर सके।

3. प्रयत्न लाघव

प्रयत्न लाघव का अर्थ है ध्वनि उत्पादन या उच्चारण के प्रयत्न को लघु कर देना। इसे उच्चारण की सुविधा या मुखसुख भी कह दिया जाता है। इसे लगभग सभी भाषाओं में ध्वनि-परिवर्तन का प्रमुख कारण समझा जाता है। उच्चारण की सुविधा या थोड़े शब्दों से अभीष्ट अर्थ का बोध कराने के इच्छुक लोग प्राय: शब्दों को सरल या संक्षिप्त करके बोला करते हैं। सुविधाजनक होने के कारण बड़ी जल्दी इस प्रकार की प्रवृत्तियों का अनुकरण भी किया जाने लगता है। इसका परिणाम यह होता है कि मूल ध्वनियों के स्थान पर सरल एवं संक्षिप्त ध्वनि-समूह प्रयोग में आने लगते हैं। अंग्रेज़ी में विशेष रूप से यह परंपरा प्रचलित है। जैसे- कोरोना वायरस डिजीज-19 के लिए कोविड-19, टेलीविजन के लिए टी.वी., रेफ्रिजरेटर के लिए फ्रिज या एयरोप्लेन के लिए प्लेन आदि। हिंदी में 'अब ही' का 'अभी', 'तब ही' का 'तभी' या 'कब

ही' का 'कभी' इसी प्रवृत्ति का परिचायक हैं। आधुनिक ही नहीं प्राचीन भाषाओं में भी लाघव की प्रवृत्ति देखी जाती है। जैसे- संस्कृत में इंद्र का पर्यायवाची शक्र 'शतक्रतु' (सौ यज्ञों को करने वाला) का लघु रूप है। इसी प्रकार शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्द 'सुदी' और 'बदी' शुक्ल दिवस या शुदि और बहुल दिवस या बदि का ही लघु रूप है। कभी-कभी उच्चारण सुविधा के लिए नई ध्वनि जोड़ भी लेते हैं, इसलिए कुछ लोग स्कूल को इस्कूल और स्टेशन को इस्टेशन कहते हैं।

प्रयत्न लाघव के संबंध में एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि संस्कृत तथा प्राकृत के ध्वनि परिवर्तन के मूल में यह प्रवृत्ति सबसे अधिक कार्यशील दिखाई देती है। अघोष व्यंजनों का लोप तथा संयुक्त व्यंजनों का सरलीकरण या समीकरण इसी प्रवृत्ति के अधीन हुआ है। मुखसुख का ही परिणाम है कि हिंदी में बज्राङ्ग का बजरंग, ब्राह्मण का बाभन, ब्रह्म का ब्रम्ह, चिह्न का चिन्ह या चक्र का चक्कर हो गया।

4. अज्ञान और अपूर्ण अनुकरण

भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है किन्तु यह अनुकरण हमेशा पूर्ण नहीं होता और इसलिए अपूर्ण अनुकरण ध्वनि परिवर्तन को जन्म देता रहता है। कभी-कभी श्रवणेंद्रियों की विफलता या दोनों भाषाओं में ध्वनि के प्रक्रियात्मक विभेदों के कारण श्रोता किन्हीं ध्वनियों को उनके मूल रूप से कुछ भिन्न रूप में सुनता है, फिर उन्हें उसी रूप में प्रयुक्त करने लगता है। जैसे- यूनीवर्सिटी का एनभरसिटी, गवर्नमेंट का गोरमिंट, सर्टिफिकेट का साटीफिकेट, आचार्य का अचार्ज आदि। जैसे बच्चे भी सुनते तो है रुपया किंतु अनुकरण से कह पाता है नुपया या लुपया। अनुकरण की अपूर्णता प्राय: अज्ञान पर आधारित रहती हैं, अर्थात जिन्हें शब्दों का ठीक-ठाक ज्ञान नहीं रहता वे ही पूर्ण या सही अनुकरण नहीं कर पाते।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. स्वनिम के भेद की चर्चा करें?

प्रश्न 2. स्वानिम परिवर्तन के कारणों की व्याख्या कीजिये?

5. भावातिरेक

भावुकता के कारण भी शब्दों में पर्याप्त ध्वनि परिवर्तन देखा जाता है। स्नेह की अधिकता या भावावेश में वाग्ध्वनियाँ सहज ही प्रभावित हो जाता हैं। इसके कारण सामान्य ध्वनि क्रम में व्यतिरेक उत्पन्न जाता है। जब हम किसी विशेष भाव के कारण किसी शब्द के ध्वनियों में परिवर्तन करते हैं तो भी ध्वनि परिवर्तन होता है। विशेषत: लोक प्रचलित व्यक्तिवाचक नाम तो अधिकांशत: इसी ध्वनि परिवर्तन के परिणाम है। हिंदी में बधू या बहू का बहुरिया, कृष्ण का कान्हा, कन्हैया या कन्हाई, चाची का चचिया, बेटी का बिटिया, राम का रमुआ आदि इसी प्रवृत्ति को दर्शाते हैं।

6. विदेशी प्रभाव

जब कोई भाषा-भाषी समुदाय किसी दूसरी भाषा के सम्पर्क में आता है और उस विदेशी भाषा में यदि कुछ ऐसी ध्वनियाँ रहती हैं, जो उनकी अपनी भाषा में नहीं रहती, तो प्राय: वह उस भाषा के अपना लिये गये शब्दों में उस भाषा की ध्वनियों के स्थान पर अपनी भाषा की उनसे मिलती-जुलती या निकटतम ध्वनियों का प्रयोग करता है। इस प्रक्रिया में भी ध्वनि परिवर्तन हो जाता है। जैसे - अंग्रेजी का ट तथा ड ध्वनि वर्त्स है जबकि हिन्दी की ट तथा ड ध्वनि मूर्द्धन्य, इस कारण रिपोर्ट शब्द को बोलते वक्त हिन्दी और अंग्रेजी भाषा भाषियों में अंतर होता है। कोलकाता का कैलकटा हो जाना इसी प्रवृत्ति को दर्शाता है।



महत्वपूर्ण बिंदु

हिन्दी पर संस्कृत, पश्तो, फारसी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, स्पैनिश, रूसी, अंग्रेजी और अन्य विदेशी तथा स्वदेशी भाषाओं का प्रभाव पड़ा है। ध्वनि, उपसर्ग, प्रत्यय आदि के प्रभाव एवं प्रयोग से भाषा समृद्ध होती है, लेकिन सबसे अधिक शब्द समूह का प्रयोग होता है।

7. भ्रामक व्युत्पत्ति

कई बार किसी दूसरी भाषा के किसी शब्द को भ्रम से श्रोता अपनी भाषा के किसी समकक्ष ध्वनि वाले शब्द के साथ जोड़ देता है। आशय यह कि जब लोग किसी अपरिचित शब्द के संसर्ग में आते हैं और यदि उससे मिलता-जुलता कोई शब्द उनकी भाषा में पहले से रहता है तो उस अपरिचित शब्द के स्थान पर उस परिचित शब्द का ही उच्चारण करने लगते हैं और इस प्रकार ध्वनि परिवर्तन हो जाता है। भ्रामक या लौकिक व्युत्पत्ति, अज्ञान और अपूर्णता से भी कभी-कभी प्रभावित होती है। अरबी का इंतिकाल शब्द इसी कारण हिन्दी का अंतकाल हो गया। इसी तरह अंग्रेज़ी का 'आर्म्ड चेयर' हिंदी में 'आराम कुर्सी' हो गया।

8. विकासात्मक कारण

ध्वनियों के विकासात्मक परिवर्तन के मूल में भी अनेक आन्तरिक एवं बाह्य कारणों का योग हुआ करता है। इनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार माने जाते हैं।

9. बलाघात

बलाघात भाषा का प्राण होता है। प्राय: सभी भाषाओं की ध्वनियों के विकास के मूल में यह मुख्य कारण हुआ करता है। प्राचीन ध्वनियों के ह्रास, नवीन ध्वनियों के विकास तथा ध्वनियों में होने वाले विभिन्न प्रकार के ध्वन्यात्मक परिवर्तन का कारण यही बलाघात प्रक्रिया है। संस्कृत के स्वराघात अथवा संगीतात्मक आघात का जब बलाघात में विकास हुआ तो अनेक मूल ध्वनियाँ या तो विकृत हो गई या उनका लोप हो गया। उपाध्याय का ओझा या झा, कण्टक का काँटा तथा नयन का नैन बन गया। चूँकि किसी ध्वनि पर बल देने में श्वास का अधिक भाग उसी के उच्चारण में व्यय करना पड़ता है, इसलिए होता यह है कि आस-पास की ध्वनियाँ कमजोर

पड़ जाती हैं और धीरे-धीरे उनका लोप हो जाता है। अभ्यंतर के 'भ्यं' पर बल पड़ने के कारण ही 'अ' लुप्त हो गया और भीतर शब्द बन गया। इसी तरह बाजार से बजार, आकाश से अकास'आदि परिवर्तन हुए।

10. सादृश्य

सादृश्य से तात्पर्य है किसी शब्द का ध्वन्यात्मक परिवर्तन उस भाषा की सामान्य ध्वन्यात्मक प्रवृत्ति के अनुरूप न होकर किसी अन्य शब्द के ध्वन्यात्मक रूप को सम्मुख रखकर तदनुरूप कर दिया जाता है। भाषाओं में अथवा ध्वनियों के विकास में इसका महत्वपूर्ण स्थान होता है। कुछ शब्द किसी दूसरे के सादृश्य के कारण अपनी ध्वनियों का परिवर्तन कर लेते हैं। जैसे- पैंतिस के सादृश्य पर सैंतिस में कई बार अनुनासिकता (सैंतिस) आ जाती है। इसी तरह स्वर्ग के सादृश्य पर नरक का नर्क हो गया। द्वादश के सादृश्य में एकदश का एकादश होना भी इसी परिपाटी पर आधारित है। ध्यातव्य है कि सादृश्य कारण न होकर कार्य है।

11. अतिसजगता या आत्म-प्रदर्शन

कई लोग इतने शुद्धतावादी होते हैं कि वे अपने उच्चारण के प्रति बहुत ज्यादा ही सतर्क हो जाते हैं, फलस्वरूप किसी सही शब्द के ध्वनियों को भी वह अपने सतर्कता के कारण बदल देते हैं। जैसे- कई लोग अरबी के शब्द जैसे ख़बर, ज़लील आदि का उच्चारण ठीक-ठीक नहीं कर पाते पर शुद्धतावादी आत्म-प्रदर्शन के लिए इनका तो सही उच्चारण करेंगे ही बल्कि वे वहाँ भी नुक्ता का प्रयोग कर देंगे जहाँ वे होते भी नहीं और इसके कारण भी ध्वनि परिवर्तन देखने को मिलता है। धूमपान का धूम्रपान (वास्तविक अर्थ धूम्रपान), शाप का श्राप, अचार का आचार आदि होना भी असहजता'का परिणाम माना जाएगा।

12. अंधविश्वास

देशी या विदेशी किसी भी प्रकार का शब्द जिनके विषय में हमें निश्चित ज्ञान नहीं है और जिनका उच्चारण हम हमेशा से अशुद्ध ही करते आये हैं, उनकें कारण भी ध्वनि परिवर्तन देखने को मिलता है। इनमें कई शब्द आते हैं जिनका सही रूप में हम उच्चारण कम से कम करना चाहते हैं और साथ ही कई बार तो अंधविश्वास के कारण लोग गलत शब्द को ही सही मान कर उसका उच्चारण करते हैं। जैसे गोभी को कोबी कहना।



10.6 सारांश

स्वनिमविज्ञान भाषाविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें भाषा की सबसे छोटी व्यवस्थापरक इकाई 'स्वनिम' का अध्ययन-विश्लेषण किया जाता है। भाषा में दो प्रकार के स्वनिम पाए जाते हैं- खंडात्मक और अधिखंडात्मक। खंडात्म मक स्वनिम 'स्वर' और 'व्यंजन' के रूप में होते हैं। अधिखंडात्मक स्वनिमों को शब्द या वाक्य से अलग स्वतंत्र रूप से दर्शाया नहीं जा सकता।

आज डिजिटाइजेशन के समय में स्वनिक और स्वनिमिक अध्ययन तकनीकी माध्यमों की मुख्य आवश्यकता है।



10.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : स्वनिमों में दो वर्ग किए गए हैं - खंडात्मक और अधिखंडात्मक। मुख्यत: दो भेद किए गए हैं - स्वर और व्यंजन सभी स्वर और व्यंजन खंडात्मक स्वनिम हैं और अधिक जानने के लिए कृपया ऊपर देखें।

प्रश्न 2 का उत्तर : ध्वनि परिवर्तन चाहे लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया का परिणाम हो या कम समय की प्रक्रिया का, कभी भी बिना कारण नहीं होता है। ध्वनि परिवर्तन के पीछे कोई न कोई भाषिक या भाषिकेतर कारण अवश्य होता है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर ऊपर विस्तारपूर्वक चर्चा की गयी है।



10.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



10.9 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. स्वनिम दो प्रकार कौन-कौन से हैं?
2. प्रयत्न लाघव से आप क्या समझते हैं?
3. भावातिरेक का एक उदहारण दीजिये?

(ख) निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लिखिए -

1. स्वनिम विज्ञान से आप क्या समझते हैं? स्वनिम विज्ञान के ऊपर आपकी क्या राय है?
2. स्वनिमों के भेदों को उल्लेख करते हुए बलाघात पर एक टिपण्णी प्रस्तुत कीजिये।
3. स्वनिम परिवर्तक के कारणों को उल्लेख कीजिये।

*** ***** ***

इकाई 11 : रूप विज्ञान

इकाई की रूपरेखा

11.1 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 रूप या पद विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा

11.4 रूपविज्ञान के प्रकार

11.5 रूप परिवर्तन के कारण

11.6 रूप परिवर्तन की दिशाएँ

11.7 सारांश

11.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

11.9 अधिक जानने के लिए पढ़े

11.10 अभ्यास प्रश्न

11.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- रुपविज्ञान के अवधारणाओ के बारें में समझेंगे।
- रूप परिवर्तन के कारणों के बारें में जानेंगे।
- रूपगविज्ञान के प्रकारों के बारे में पता चलेंगा।

11. 2 प्रस्तावना

सभी भाषा में कुछ सीमित अर्थहीन इकाई का प्रयोग किया जाता है, जिनके द्वारा असंख्य अर्थपूर्ण इकाइयों की रचना की जाती है। इन सीमित अर्थहीन इकाइयों को हम साधारण भाषा में ध्वनि कहते हैं, जिसे भाषाविज्ञान में 'स्वन' नाम दिया गया है। जब ये किसी भाषा विशेष की ध्वनि व्यवस्था को गठित करते हैं, तो स्वनिम कहलाते हैं। इनमें पहला स्तर 'रूप' का है। इसके बाद क्रमश: शब्द, पद, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य और प्रोक्ति आते हैं। 'रूप' की संकलनात्मक इकाई रुपिम है। रूप, रुपिम और इनसे जुड़ी इकाइयों तथा प्रक्रियाओं का अध्ययन रूपविज्ञान में किया जाता है, जिसका अध्ययन इस इकाई में किया गया है।

11.3 रूप या पद विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा

दो इकाइयों शब्द और वाक्य का : परंपरागत भाषाविज्ञान में व्याकरणात्मक वर्णन में मुख्यत वर्णन किया जाता है। शब्द को ही व्याकरणिक स्तर की लघुतम सार्थक इकाई के रूप में

मान्यता प्राप्त रही, परंतु आज इससे अधिक न्यूनतम इकाई रूपिम पर भी विचार किया जा रहा है। रूपिम को 'रूपग्राम' भी कहा जाता है। इसमें किसी भाषा के रूपों का अध्ययन- विश्लेषण करके उनके अर्थ एवं वितरण के आधार पर रूपग्राम का निर्धारण किया जाता है। रूप या पद वाक्य की सार्थक अध्याय है।

भाषाविज्ञान की एक अन्यतम शाखा है- 'रुपविज्ञान'। जिसके अध्ययन की मुख्य बिंदु है- 'रूपिम' है। रूपविज्ञान को अंग्रेजी में 'मार्फलाजी' (Morphology) शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो 'Morph' और 'logy' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'मार्फ' (Morph) के लिए हिंदी में 'रूप' शब्द का प्रयोग होता है और 'लाजी' (logy) का अर्थ है - विज्ञान। विभिन्न भाषाविज्ञानियों ने रुपविज्ञान को अनेक प्रकार से परिभाषित किया है।

नीचे कुछ भाषाविदों की परिभाषाओं का उल्लेख किया गया हैं-

नाइडा के अनुसार, 'रूपविज्ञान रूपिम तथा शब्द निर्माण में उसकी व्यवस्था का अध्ययन करता है'।

कैरोल के अनुसार, 'रूपविज्ञान उस पद्धति अथवा प्रणाली का अध्ययन है जिसके अनुसार शब्द निर्माण किया जाता है और निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि रूपविज्ञान का संबंध रूपिमों की पहचान, शब्द निर्माण में उनके क्रम, उनमें होनेवाले परिवर्तन तथा विविध व्याकरणिक संरचनाओं में पाई जाने वाली व्यवस्था का अध्ययन है।'

'ब्लाक तथा ट्रेगर का मत है कि रूपविज्ञान शब्द गठन का विवेचन करता है।'

(अग्रवाल, चमनलाल. (1981). हिंदी-रूपविज्ञान)

इस प्रकार हम कह सकते है कि रूपविज्ञान, भाषाविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें रूपिमों के अर्थ, स्वरूप, अनुक्रम, उनकी प्रतीति और प्रकार्य आदि के आधार पर उनके भेदों का किसी भाषा विशेष की संरचना के संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।

11.4 रूपविज्ञान के प्रकार

अध्ययन की दिशा के आधार पर-

रूपविज्ञान के अध्ययन की दिशा के आधार पर रूपविज्ञान को तीन प्रकार में विभक्त किया जाता हैं-

- वर्णनात्मक रूप विज्ञान : इसमें किसी भाषा या बोली के किसी एक समय की शब्द और पद रचना का अध्ययन होता है।
- ऐतिहासिक रूपविज्ञान : इसमें भाषा या बोली के विभिन्न कालों की शब्द और पद रचना का अध्ययन कर उसमें रूपविज्ञान का इतिहास या विकास प्रस्तुत किया जाता है।
- तुलनात्मक रूपविज्ञान : इसमें दो या अधिक भाषाओं की शब्द और पदरचना का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

रूपिम योग की प्रक्रिया के आधार पर-

रूपिम योग की प्रक्रिया के आधार पर इसके दो भेद किए जाते हैं-

- व्युत्पादक रूपविज्ञान (Derivational Morphology) : इसमें मुक्त रूपिम या शब्द में व्युत्पादक रूपिमों को जोड़कर नए शब्द बनाने की प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है।
- रूपसाधक रुपविज्ञान (Inflectional Morphology) : इसमें शब्दों में रूपसाधक रूपिमों को जोड़कर पद बनाने की प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. रूप विज्ञान की परिभाषा एवं प्रकार को स्पष्ट करें ?

11.5 रूप परिवर्तन के कारण

जब किसी शब्द का एक रूप किसी कारण दूसरे रूप में परिवर्तित होता है, तो उसे रूप परिवर्तन कहते हैं। भाषा परिवर्तनशील है और उसकी रूप रचना में परिवर्तन होता रहता है, यद्यपि ध्वनि परिवर्तन की तुलना में यह कम होता है। कभी कभी ये दोनों इतने समान या समीप हो जाते हैं कि इनको अलग कर पाना कठिन भी हो जाता है। रूप परिवर्तन होने पर नए रूपों के साथ पुराने रूप भी चलते रहते हैं।

रूप परिवर्तन के कारण:

भाषा में रूप परिवर्तन होने के कई कारण हैं। किसी भाषा में रूप परिवर्तन के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं -

i. नवीनता की अभिरुचि
ii. सरलीकरण
iii. स्पष्टता
iv. अज्ञान
v. आवश्यकता
vi. ध्वनि- परिवर्तन
vii. सादृश्य
viii. संक्षेपीकरण

11.6 रूप परिवर्तन की दिशाएँ

रूप परिवर्तन मुख्य रूप से निम्नलिखित दिशाओं में मिलता है-

1. अतिरिक्त प्रत्यय

ii. पुराने संबंध तत्वों का लोप

iii. गलत प्रत्यय प्रयोग

iv. नए प्रत्यय प्रयोग

v. मूल में परिवर्तन

इस प्रकार उपर्यूक्त सभी भाषाओं में होने वाले रूप परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ उल्लेखित हैं। जिनका अध्ययन भाषाविज्ञान की शाखा रूप विज्ञान के अंतर्गत किया जाता है।



11.7 सारांश

अंत में हम कह सकते हैं कि रूपविज्ञान भाषाविज्ञान की एक केन्द्रीय शाखा है जिसमें लघुतम अर्थवान इकाइयों का विश्लेषण रूप, रूपिम और उपरूप के रूप में किया जाता है। साथ ही व्युत्पादन और रूपसाधन की प्रक्रियाओं के माध्यम से शब्द निर्माण और पद निर्माण की व्याख्या की जाती है। रूप विज्ञान भाषाविज्ञान की एक स्वतंत्र शाखा होने के साथ साथ स्वनिम विज्ञान और वाक्यविज्ञान से भी जुड़ा हुआ है।



11.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : रूपविज्ञान' भाषाविज्ञान की एक शाखा है, जिसके अध्ययन की केंद्रीय इकाई 'रूपिम' है। अंग्रेजी में रूपविज्ञान के लिए 'मार्फोलॉजी' (Morphology) शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो 'Morph' और 'logy' दो शब्दों से मिलकर बना है। वर्णात्मक, ऐतिहासिक तुलनात्मक इत्यादि की चर्चा विस्तारपूर्वक ऊपर की गयी है।



11.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



11.10 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. रूपिम योग की प्रक्रिया के आधार पर इसके दो भेदों के नाम बताएं ?
2. रूप परिवर्तन मुख्य रूप से निम्नलिखित दिशाओं का नाम बताएं ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1. रूपविज्ञान क्या है, विस्तार से चर्चा कीजिये।
2. रूप परिवर्तन का दिशा एवं कारणों के बारें उल्लेख कीजिए।
3. रूपविज्ञान के विभिन्न प्रकार के बारें में चर्चा कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 12 : वाक्य विज्ञान

इकाई की रूपरेखा

12.1 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 वाक्य की अवधारणा

12.4 वाक्य की आवश्यकताएँ

12.5 वाक्य के अंग

12.6 वाक्य के भेद

- 12.6.1 क्रिया के आधार पर
- 12.6.2 रचना के आधार पर
- 12.6.3 अर्थ के आधार पर

12.7 वाक्य परिवर्तन के कारण

12.8 सारांश

12.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

12.10 अधिक जानने के लिए पढ़े

12.11 अभ्यास प्रश्न

12.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- वाक्य की अवधारणाओं को जानेंगे।
- वाक्य के अनिवार्य तत्वों एवं भेदों से परिचित होंगे।
- वाक्य परिवर्तन के कारणों को समझेंगे।

12.2 प्रस्तावना

वाक्य भाषा का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम वाक्य ही होता है। अत: वाक्य भाषा की लघुतम पूर्ण इकाई है। वाक्य का तात्पर्य, वाक्य की परिभाषा, भाषा में वाक्य का स्थान, वाक्य के भेद, वाक्य परिवर्तन के कारण, वाक्य में पदक्रम आदि महत्वपूर्ण विषयों का विचार वाक्यविज्ञान में किया जाता है।

12.3 वाक्य की अवधारणा

वाक्य भाषा की इकाई है। हमारा सोचना, समझना, बोलना सब कुछ 'वाक्य' में ही

होता है। ऐसी स्थिति में वाक्य पदों या शब्दों का समूह है। भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्यशास्त्र में वाक्य को भिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है। वाक्य की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

ईसा से पूर्व भारत में पतंजलि और यूरोप में डिथॉनिसियस थ्रैक्स ने वाक्य की परिभाषा इस प्रकार दी है- ''पूर्ण अर्थ की प्रतीत कराने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।''

ब्लूमफील्ड के अनुसार ''वाक्य एक स्वतंत्र रूप है, जो किसी भी व्याकरणात्मक रचना के कारण किसी भी बृहत्तर भाषात्मक में अंत: निविष्ट नहीं होता।''

जान लियोन के अनुसार, ''वाक्य व्याकरण-वर्णन की सबसे बड़ी इकाई है।''

भोलानाथ तिवारी के अनुसार, ''वाक्य भाषा की वह सहज इकाई है, जिसमें एक या अधिक शब्द(पद) होते हैं तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण, व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण होती है, साथ ही उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कम-से-कम एक समापिका क्रिया अवश्य होती है।''

इन परिभाषाओं के आधार पर वाक्य के बारे में निम्नलिखित बातें कही जा सकती हैं-

(क) वाक्य भाषा की सहज इकाई है।

(ख) वाक्य में एक शब्द (पद) भी हो सकता है और एक से अधिक शब्द भी हो सकता है।

(ग) वाक्य में अर्थ की पूर्णता हो सकती है और अर्थ की पूर्णता नहीं भी हो सकती है।

(घ) वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से पूर्ण होता है।

(ङ) व्याकरणिक पूर्णता कभी-कभी संदर्भ पर निर्भर करती है।

(च) वाक्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कम-से-कम एक समापिका क्रिया का भाव अवश्य होता है।

12.4 वाक्य की आवश्यकताएँ

भारतीय आचार्यों ने वाक्य के लिए पाँच आवश्यकताएँ निर्धारित की है।

(क) सार्थकता :- इसका अर्थ यह है कि वाक्य में प्रयुक्त होने वाले शब्द सार्थक होने चाहिए। सार्थकता भाषा की ही मूलभूत अनिवार्यता है।

(ख) योग्यता :- इसका अर्थ यह है कि शब्दों में भाव या विचार को प्रकट करने की योग्यता होनी चाहिए। योग्यता के बिना वाक्य की स्थिति असंभव है। पदों की परस्पर संगति आवश्यक है।

(ग) आकांक्षा :- इसका अर्थ है इच्छा। अर्थात् 'जानने की इच्छा' या 'अर्थ की अपूर्णता'। वाक्य में इतनी शक्ति होनी चाहिए कि वह पूरा अर्थ दे। उसे सुनकर भाव पूरा करने के लिए कुछ जानने की आकांक्षा न रहे।

(घ) सन्निधि :- इसका अर्थ है समीपता। वाक्य के शब्द समीप होने चाहिए। एक पद से दूसरे पद के बीच में आवश्यकता से अधिक समय देने पर उन पदों का क्रम टूट जाएगा।

(ङ) **अन्विति :-** इसका अर्थ है व्याकरणिक एकरूपता। वाक्य में वचन, कारक, लिंग आदि की दृष्टि से समानरूपता होनी चाहिए।

12.5 वाक्य के अंग

वाक्य के दो अंग होते हैं :

(क) उद्देश्य :- वाक्य का वह अंश जिसके बारे में बाकी वाक्य में कुछ कहा गया हो, उसे उद्देश्य कहा जाता है। जैसे- राम घर जाता है। इस वाक्य में राम उद्देश्य है। अर्थात् वाक्य में जिसके संबंध में कहा जाता है, वही उद्देश्य है।

(ख) विधेय :- वाक्य का वह अंश जो उद्देश्य के बारे में सूचना दे उसे विधेय कहा जाता है। जैसे : राम घर जाता है। इस वाक्य में घर और जाता है विधेय है। विधेय के अंतर्गत वाक्य में शामिल क्रिया, क्रिया का विस्तारक, कर्म, कर्म का विस्तारक साथ ही पूरक तथा पूरक का विस्तारक शामिल होता है।

12.6 वाक्य के भेद

वाक्य के भेद मुख्य रूप से निम्नलिखित आधारों पर किए जाते हैं -

12.6.1 क्रिया के आधार पर

12.6.2 रचना के आधार पर

12.6.3 अर्थ के आधार पर

12.6.1 क्रिया के आधार पर

भाषा में क्रिया का स्थान प्रमुख है। क्रिया प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में वाक्य में अवश्य रहती है। क्रिया के होने या न होने के आधार पर वाक्य दो प्रकार के हो सकते हैं-

(क) क्रियायुक्त वाक्य :- जिसमें क्रिया हो उसे क्रियायुक्त वाक्य कहते हैं। संसार के अधिकतर भाषाओं के अधिकतर वाक्य क्रियायुक्त होते हैं। जैसे- हिंदी में 'वह किताब पढ़ता है।'

(ख) क्रियाहीन वाक्य :- जिसमें क्रिया न हो उसे क्रियाहीन वाक्य कहते हैं। संस्कृत, रूसी आदि भाषाओं के वाक्यों में क्रिया लगाने की आवश्यकता नहीं होती है।

12.6.2 रचना के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य चार प्रकार के होते हैं-

(क) सरल वाक्य :- जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहा जाता है। जैसे: लड़का घर गया। इस वाक्य में 'लड़का' उद्देश्य और 'घर गया' विधेय है।

(ख) उपवाक्य :- जब दो या दो से अधिक वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बना देते हैं तो उस एक वाक्य में जो वाक्य मिले होते हैं, उन्हें उपवाक्य कहते हैं। उपवाक्य दो प्रकार के होते हैं- आश्रित उपवाक्य और प्रधान उपवाक्य।

(ग) मिश्र वाक्य :- जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्र वाक्य कहा जाता है। जैसे : 'मैंने उस लड़के को देखा जो कल सड़क पर गिर गया था।'

(घ) संयुक्त वाक्य :- जिस वाक्य में कोई भी उपवाक्य प्रधान अथवा आश्रित न हो, उसे संयुक्त वाक्य कहा जाता है। जैसे : लड़का खेल रहा है और लड़की पढ़ रही है।

12.6.3 अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार वाक्य के कई भेद हो सकते हैं। कुछ प्रमुख भेद इस प्रकार हैं-

(क) विधिवाचक :- जिन वाक्यों से किसी कार्य के करने का बोध होता है, उन्हें विधिवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे- रमन पढ़ चुका है।

(ख) आज्ञावाचक :- जिन वाक्यों से किसी प्रकार की आज्ञा का बोध होता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे : यहाँ बैठो।

(ग) निषेधवाचक :- जिन वाक्यों से किसी बात के न होने का बोध हो, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे : मैं घर नहीं गया।

(घ) प्रश्नवाचक :- जिन वाक्यों से किसी प्रकार के प्रश्न पूछे जाने का बोध हो, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे : वह कहाँ जा रही है?

(ङ) विस्मयवाचक :- जिन वाक्यों से किसी प्रकार के विस्मय या आश्चर्य, हर्ष या दु:ख का बोध हो, उन्हें विस्मयवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे : अरे यह क्या किया!

(च) संदेहवाचक :- जिन वाक्यों से किसी प्रकार के संदेह का बोध हो, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे : वह कहीं गया होगा।

(छ) इच्छावाचक :- जिन वाक्यों से किसी प्रकार की विशिष्ट कामना का बोध हो, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे : ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. वाक्य की परिभाषा बताते हुए उसके अंगों की चर्चा करें।

प्रश्न 2. वाक्य कितने प्रकार के हैं?

12.7 वाक्य परिवर्तन के कारण

किसी भाषा की वाक्य रचना में परिवर्तन के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं-

(क) अन्य भाषा का प्रभाव :- किसी अन्य भाषा के प्रभाव से वाक्य रचना प्रभावित होती है। हिंदी वाक्य रचना पर अंग्रेज़ी का प्रभाव नित्य ही देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए- 'कि' का प्रयोग हिंदी पर फारसी प्रभाव है।

(ख) ध्वनि-परिवर्तन से विभक्तियों और प्रत्ययों का घिस जाना :- ध्वनि विकास में विभक्तियों या प्रत्यय घिस जाती है तब अर्थ की स्पष्टता के लिए सहायक शब्द जोड़ने पड़ते हैं।

(ग) बल प्रदर्शन :- विशेष बल देने के कारण शब्द क्रम प्रभावित होता है और वाक्य रचना बदल जाती है। जैसे- 'मैं घर जा रहा हूँ' एक सामान्य वाक्य है। किंतु 'जाता हूँ मैं घर' में जाने की क्रिया पर बल दिया गया है।

(घ) स्पष्टता :- स्पष्टता के कारण भी वाक्य गठन में परिवर्तन हो जाता है। जैसे- 'कृपया कल आइएगा।' इसमें 'आइएगा' अपने आप आदरसूचक है। अत: कृपया की आवश्यकता नहीं थी।

(ङ) नवीनता :- नवीनता की प्रवृत्ति के कारण भी वाक्य-गठन में परिवर्तन हो जाता है। जैसे:- रात भर की बात = बात रात भर की

(च) बोलने वाले की मानसिकता :- बोलने वाले की मानसिकता के कारण भी वाक्य रचना बदलती है। क्रांति अथवा युद्धकाल में लघुतम वाक्यों का प्रयोग अधिक मिलता है।

(छ) अनुकरण-अज्ञानता :- अनुकरण और अज्ञानता के कारण भी वाक्य-गठन में परिवर्तन होता है।



12.8 सारांश

- भाषा की सहज इकाई है वाक्य।
- वाक्य भाषा की वह सहज इकाई है, जिसमें एक या अधिक शब्द(पद) होते हैं तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण, व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण

होती है, साथ ही उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कम-से-कम एक समापिका क्रिया अवश्य होती है।

- वाक्य में सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, सन्निधि और अन्विति का होना आवश्यक है।
- वाक्य के उद्देश्य और विधेय दो अंग होते हैं।
- क्रिया, रचना, अर्थ के आधार पर वाक्य के कई भेद होते हैं।
- क्रिया के आधार पर वाक्य के भेद हैं- क्रियायुक्त वाक्य और क्रियाहीन वाक्य।
- रचना के आधार पर वाक्य के भेद हैं- सरल वाक्य, उपवाक्य, मिश्र वाक्य, संयुक्त वाक्य।
- अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद हैं- विधिवाचक, आज्ञावाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयवाचक, संदेहवाचक, इच्छावाचक।
- अन्य भाषा का प्रभाव, ध्वनि-परिवर्तन से विभक्तियों और प्रत्ययों का घिस जाना, बल प्रदर्शन, स्पष्टता, नवीनता, बोलने वाले की मानसिकता, अनुकरण-अज्ञानता आदि वाक्य परिवर्तन के कारण हैं।



12.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : वाक्य का मतलब शब्दों का ऐसा समूह होता है जो पूर्ण अर्थ देता है। यह बड़े अक्षर से शुरू होता है और पूर्ण विराम पर समाप्त होता है। इसमें हमेशा एक परिमित क्रिया होती है। एक वाक्य में दो मुख्य भाग होते हैं- Subject (उद्देश्य) और Predicate (विधेय)। अधिक जानकारी के लिए ऊपर पढ़ें।

प्रश्न 2 का उत्तर : रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं, सरल या साधारण वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य। अधिक जानकारी के लिए ऊपर पढ़े।



5.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



12.11 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. भारतीय आचार्यों ने वाक्य के लिए पाँच आवश्यकताएँ निर्धारित की है उनके नाम बताएं ?
2. जान लियोन्स के अनुसार वाक्य किसकी बड़ी इकाई है ?
3. सरल वाक्य से आप क्या समझते हैं ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1. वाक्य के प्रमुख अंग क्या-क्या है ?
2. वाक्य की आवश्यकताओं पर प्रकाश डालिए।
3. रचना के आधार पर वाक्य के भेदों का परिचय दीजिए।
4. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेदों का परिचय दीजिए।
5. वाक्य परिवर्तन के प्रमुख कारणों का आकलन कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 13 : अर्थविज्ञान

इकाई की रूपरेखा

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 अर्थ विकास एवं अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ

13.3.1 अर्थ विस्तार

13.3.2 अर्थ संकोच

13.3.3 अर्थादेश

13.4 अर्थ परिवर्तन के कारण

13.4.1 भौगोलिक परिवेश की भिन्नता

13.4.2 सामाजिक परिवेश का परिवर्तन

13.4.3 धार्मिक परिवेश में परिवर्तन

13.4.4 राजनीतिक स्थिति का प्रभाव

13.4.5 नए भौतिक साधन

13.4.6 शब्द-प्रयोग की अधिकता

13.4.7 लक्षणा-व्यंजना का प्रयोग

13.4.8 शब्दों के तद्भव रूप

13.4.9 शब्दकोशीय पर्याय

13.4.10 सामान्य के लिए विशेष का प्रयोग

13.4.11 अन्य भाषाओं का अधूरा ज्ञान

13.4.12 अन्य कारण

13.5 सारांश

13.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

13.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

13.8 अभ्यास प्रश्न

13.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप -

- अर्थ की अवधारणाओं को समझ सकेंगे।
- अर्थविज्ञान के स्वरुप को जान पाएंगे।
- अर्थ परिवर्तन के कारणों के बारे में ज्ञान प्राप्त होंगा।

13. 2 प्रस्तावना

अर्थविज्ञान में शब्दार्थ के आंतरिक पक्ष का विवेचन, विश्लेषण किया जाता है। अर्थ क्या है? अर्थ का ज्ञान कैसे होता है? शब्द और अर्थ में क्या संबंध है? संकेतग्रह कैसे होता है? मन में बिंब-निर्माण कैसे होता है? बिंब से अर्थ-बोध की प्रक्रिया आदि भाषा के आंतरिक पक्ष हैं। अर्थविज्ञान में शब्दों के अर्थ में विकास, अर्थविकास की दिशाएँ, अर्थपरिवर्तन के कारण, एकार्थ और अनेकार्थ शब्दों के अर्थ का निर्णय, संकेतग्रह के साधन आदि अर्थविज्ञान के बाह्य पक्ष हैं। अर्थ और उसे संप्रेषित करने वाला शब्द दोनों ही भाषा के अविछिन्न अंग हैं। 'अर्थ' शब्द से अभिन्न है। किसी भी अर्थ की अभिव्यक्ति और अर्थ का बोध किसी शब्द विशेष से ही संभव है। अर्थ का लक्षण देते हुए भर्तृहरि ने अपने ग्रंथ 'वाक्यपदीय' में कहा है कि 'जिस शब्द के उच्चारण से जिस अर्थ की प्रतीति होती है, वही उसका 'अर्थ' है। शब्द और उससे निर्मित विभिन्न भाषिक इकाइयों के माध्यम से ही हम सोच पाते हैं और अपने भावों-विचारों को व्यक्त कर पाते हैं। किसी भी शब्द का यह संप्रेषित अर्थ प्रयोक्ता और श्रोता दोनों पर निर्भर करता है। अत: शब्द विशेष से उनके मस्तिष्क में उभरने वाले अर्थबिंब या अर्थ-छवि में पर्याप्त अंतर या भेद हो सकता है। इससे स्पष्ट है कि किसी शब्द का उसके अर्थ से स्थिर या नित्य संबंध नहीं होता। साथ ही, यह भी आवश्यक नहीं कि किसी शब्द विशेष का एक ही अर्थ हो। एक शब्द के एक से अधिक अर्थ भी हो सकते हैं जो कि संदर्भ विशेष में प्रयोग किए जाने पर ही पूर्ण रूप से समझे जा सकते हैं। जैसे - 'अर्थ शब्द - अभिप्राय, धन, हेतु, कारण, प्रयोजन - आदि के लिए प्रयुक्त होता है। इसलिए 'अर्थशास्त्र' (Economics) के संदर्भ में जब हम 'अर्थ का प्रयोग करते हैं तो वहां इसका संबंध 'धन' से होता है। जबकि 'भाषाविज्ञान के संदर्भ में इसी 'अर्थ' का प्रयोग 'अभिप्राय' के लिए होता है। अत: शब्द अर्थों के वाहक मात्रा नहीं होते, उनमें पारस्परिक संबंध भी होता है। इस शाब्दिक संबंध से ही सही अर्थ-प्राप्ति संभव है।

अर्थ भाषा मानव व्यवहार का प्रमुख साधन है। मनुष्य स्वयं परिवर्तनशील है, इसलिए उनका प्रमुख व्यवहार भाषा भी परिवर्तनशील है। भाषा में परिवर्तन की यह प्रक्रिया उसके अंगों को भी प्रभावित करती है। अर्थ भी उससे अप्रभावित नहीं रहता। अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाओं का यहां संक्षेप में वर्णन प्रस्तुत है।

13.3 अर्थ-विकास एवं अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ

अर्थविज्ञान के प्रमुख चिंतक ब्रील के अनुसार अर्थ का विकास अथवा परिवर्तन की मुख्यत: तीन दिशाएँ हैं-

13.3.1 अर्थ विस्तार

वे शब्द जो पहले सीमित अर्थ में प्रयोग होते हों, लेकिन बाद में उनके अर्थ

में विस्तार देखने को मिलता है और उनका अर्थ व्यापक हो जाता है। इसे ही अर्थ विस्तार कहते हैं। प्रवीण का अर्थ पहले केवल वीणा बजानेवाले के लिए प्रयुक्त होता था किंतु धीरे-धीरे इस शब्द का अर्थ विस्तार हुआ और बाद में चल कर किसी भी काम में निपुण व्यक्ति को प्रवीण कहा जाने लगा। इसी प्रकार कुशल शब्द का अर्थ था 'कुश लाने वाला', लेकिन बाद में यह 'चतुर' का पर्याय बन गया।

13.3.2 अर्थ संकोच

जिस प्रकार अर्थ का विस्तार होता है, उसी प्रकार कई बार व्यापक अर्थ वाले शब्दों के अर्थों में संकोच भी होता है। जैसे- जलज अर्थ होता है 'जल से उत्पन्न' पर जल से उत्पन्न होने वाली सभी चीजों को जलज नहीं कहेंगे, यह शब्द कमल के अर्थ में रूढ़ हो चुका है।

13.3.3 अर्थादेश

अर्थ विस्तार और अर्थ संकोच के अलावा 'कई बार शब्द के अर्थ बिल्कुल बदल भी जाते हैं। जैसे असुर शब्द देवता का वाचक था पर आज वह दैत्यों का वाचक हो गया है। इसी तरह आकाशवाणी का अर्थ देववाणी था पर अब वह भारतीय रेडियो के लिए इस्तेमाल होता है।

इसके साथ अर्थोत्कर्ष और अर्थापकर्ष भी अर्थ परिवर्तन की दिशा निर्धारित करते हैं। अर्थोत्कर्ष में निकृष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द उत्कृष्ट अर्थ का बोधक हो जाता है। जैसे - साहस, मुग्ध आदि। पहले साहसी उसे कहा जाता था जो चोर-डकैत और जघन्य अपराध में लिप्त हो, लेकिन आगे चलकर वही धीरता और वीरता का परिचायक बन गया। वैसे ही मुग्ध पहले मूर्ख का बोधक था बाद में वही मोहित होने के अर्थ में परिवर्तित हो गया।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. अर्थ विज्ञान क्या है? अर्थ विज्ञान की चर्चा करते हुए अर्थ विस्तार को बताएं।

13.4 अर्थ परिवर्तन के कारण

13.4.1 भौगोलिक परिवेश की भिन्नता

भौगोलिक परिवेश की भिन्नता के कारण एक ही शब्द के हमें अलग-अलग रूप देखने को मिलते हैं, क्योंकि एक ही शब्द का हर जगह एक ही अर्थ हो यह जरूरी नहीं। जैसे 'कॉर्न' (corn) का अर्थ ब्रिटेन में गेहूँ है तो अमेरिका में मक्का।

13.4.2 सामाजिक परिवेश का परिवर्तन

समाज के विभिन्न जगहों पर एक ही शब्द के भिन्न अर्थ देखने को मिलते हैं। जैसे घर पर Father और चर्च में Father का एक ही अर्थ नहीं होता।

13.4.3 धार्मिक परिवेश में परिवर्तन

धर्म का प्रभाव भी शब्दों के अर्थ में पड़ता है। धर्म को केन्द्र में रखकर जो लड़ते हैं, वे अक्सर अपने नकारात्मक शब्दों को अपने विरोधी धर्म से जोड़ने का प्रयास करते हैं। एक उदाहरण है 'काफ़िर' (श्रद्धा न रखने वाला) जिसे कभी-कभी इस्लाम को मानने वाले हिन्दुओं से जोड़ते हैं। उसी तरह आज हिन्दुओं के यहां 'जेहाद' (पवित्र उद्देश्य के साथ संघर्ष करना) शब्द का अर्थ आतंकवाद से जोड़ा जाने लगा है।

13.4.4 राजनीतिक स्थिति का प्रभाव

राजनीति भी हमारे शब्दों के अर्थ को प्रभावित करते हैं। जैसे आजकल 'जय हिन्द' और 'जय श्री राम' का अर्थ राजनीतिक प्रभाव में आकर अपने मूल अर्थ से हटता जा रहा है।

13.4.5 नए भौतिक साधन

भौतिक साधनों में परिवर्तन के साथ शब्दों के अर्थ भी बदलते हैं। जैसे विज्ञान ने शीशे के दर्पण बना दिए और हमने शीशा धातु के आधार पर दर्पण का नामकरण शीशा कर दिया।

13.4.6 शब्द-प्रयोग की अधिकता

किसी-किसी शब्द के बहुत अधिक प्रयोग कर देने से भी उसका विशिष्ट अर्थ खो जाता है। जैसे - आचार्य, श्रीमान, नेता, महाजन, शहीद आदि।

13.4.7 लक्षणा-व्यंजना का प्रयोग

लक्षणा और व्यंजना भी अर्थ-परिवर्तन के प्रमुख कारणों में गिने जा सकते हैं। हम जानते हैं कि लक्षणा से शब्दार्थ में प्रभाव पैदा हो जाता है तथा व्यंजना से अर्थ विशिष्ट और नवीन बन जाता है। जैसे कोई कहे कि वह अपने गाँव का शेर है, तो इसमें शेर का अर्थ पशु विशेष न होकर वीर और प्रभावशाली माना जाएगा। वास्तव में व्यंजना के कारण ही कहावतें, लोकोक्तियाँ व आलंकारिक प्रयोग आदि विलक्षण अर्थबोध कराने में सफल हो पाते हैं।

13.4.8 शब्दों के तद्भव रूप

कई बार शब्दों के तद्भव रूप भी मूल अर्थ में परिवर्तन उपस्थित कर देते हैं। जैसे - 'श्रेष्ठ' (महान, श्रद्धेय) का तद्भव रूप 'सेठ' आगे चलकर व्यापारी के अर्थ में परिवर्तित हो गया। 'भद्र' (सुसंस्कृत) का तद्भव रूप 'भद्दा' (असभ्य, अश्लील, बेडौल) विपरीतार्थक हो गया। इसी प्रकार 'स्तन' (स्त्री के संबंध में) का तद्भव रूप 'थन' अब केवल पशुओं के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है।

13.4.9 शब्दकोशीय पर्याय

शब्दकोश में प्राय: एक शब्द का बोध कराने के लिए अनेक पर्याय दे दिए जाते हैं। कभी-कभी इन पर्यायों से भी अर्थ में पर्याप्त अंतर आ जाता है। जैसे- चेक (cheque) और ड्राफ्ट (draft) शब्द के ऐसे पर्याय दिये जाते हैं कि उसके मूल अर्थ में ही परिवर्तन हो जाता है। जैसे - चेक के लिए देयक, धनादेश, हुंडी आदि वहीं ड्राफ्ट के लिए भी धनादेश, हुंडी का प्रयोग करना। अब यहाँ हुंडी का प्रयोग केवल ड्राफ्ट के अर्थ में होना चाहिए। शब्दकोशीय पर्याय के कारण ही लोग हुंडी से चेक का अर्थ लगा लेते हैं।

13.4.10 सामान्य के लिए विशेष का प्रयोग

अनेक शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग पहले पदार्थ विशेष के ही अर्थ में किया जाता है, लेकिन बाद में सामान्य पदार्थों के लिए भी किया जाने लगा। जैसे- सब्ज़ी, स्याही आदि। सब्ज़ का अर्थ होता है हरा इसलिए सब्ज़ी से हरी तरकारी का अर्थबोध होता था। हालाँकि अब आलू, प्याज़ आदि के लिए भी सब्ज़ी का प्रयोग किया जाता है। वैसे ही स्याही का अर्थ होता है काला। पहले काले रंग की रोशनाई के लिए ही स्याही का प्रयोग होता था लेकिन अब किसी भी रंग की रोशनाई के लिए स्याही का प्रयोग किया जाने लगा है।

13.4.11 अन्य भाषाओं का अधूरा ज्ञान

अन्य भाषाओं के अधूरे ज्ञान से भी अर्थ परिवर्तन हो जाता है। उर्दू में 'खुलासा का अर्थ संक्षिप्त करना है किंतु हिंदी में इसे व्याख्या या विस्तार से बताने के अर्थ में प्रयोग किया जाने लगा है। वैसे ही विरोध का बोधक सही शब्द मुख़ालफत है लेकिन हिंदी में अक्सर ख़िलाफ़त का प्रयोग कर दिया जाता है जो ख़लीफ़ा से संबंधित है। कई बार तो अनर्थकारी अर्थ तक प्रचलित हो जाते हैं। जैसे - जनक-सुता = पिता की पुत्री। हालाँकि व्यक्तिवाचक संज्ञा 'जनक' की पुत्री थीं 'सीता'। बौद्ध जातक में तथा उसके आधार पर पालि-चीनी-कोश में 'जनक' (व्यक्तिवाचक संज्ञा) का अर्थ हो गया 'पिता' तथा 'जनक-सुता' का अर्थ हो गया 'पिता की पुत्री' अर्थात् बहन। यहाँ जो अर्थ परिवर्तन हुआ उसके आधार पर 'राम ने जनक-सुता से विवाह किया' का अर्थ होगा 'राम ने अपनी बहन से विवाह किया', जो कि बेहद मूर्खतापूर्ण होगा।

13.4.12 अन्य कारण

उपर्युक्त कारणों के साथ-साथ कई अन्य कारण भी हैं जिनसे अर्थ-परिवर्तन घटित होता है। श्रुतिमधुरता या सुश्रव्यता (euphemlsm) के कारण भी अर्थ-परिवर्तन होता है, क्योंकि मनुष्य कई बार लज्जा, घृणा या अमंगल की आशंका में भी कुछ शब्दों का प्रयोग करने में झिझकता है। कई बार कवियों की मनमानी तथा अभिनव प्रयोग से भी अर्थ परिवर्तन घटित हुए (पंत का गांधी जी के लिए 'अछूत' का प्रयोग छुआछूत से दूर के अर्थ में, निराला का अमावस्या के लिए 'अमानिशा' का प्रयोग आदि)। भावुकता या भावात्मक बल के कारण भी अर्थ-परिवर्तन संभव है। जैसे - दुष्ट, शैतान, गधा आदि का प्रयोग प्रेम और क्रोध दोनों स्थितियों में होना। ठीक इसी प्रकार भीषण, भयंकर, प्रचंड या दुर्दांत का प्रयोग अच्छे अर्थों में अतिशय भाव प्रदर्शन के लिए भी किया जाता है। कई बार अंधविश्वास (चेचक को माता कहना) भी अर्थ-परिवर्तन का कारण बन सकता है। साहचर्य संबंध (सूरत के साहचर्य के कारण तंबाकू को 'सूरती' कहना) तथा विनम्रता का प्रदर्शन (भिखारी को राजा, प्रधानमंत्री को प्रधान सेवक, झोपड़ी को महल या हवेली को कुटिया कहना) आदि अनेक कारण हैं, जिनसे अर्थ-परिवर्तन होता है।



13.5 सारांश

भाषा के दायरे में शब्दों और वाक्यों के तात्पर्य का अध्ययन अर्थ-विज्ञान कहलाता है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से पहले अर्थ-विज्ञान को एक अलग अनुशासन के रूप में मान्यता नहीं

थी। अर्थ-निरूपण तीन विभेदों के तहत किया जाता है। इनमें पहला है बोध और संदर्भ के बीच का अंतर। दूसरा है शब्द के अर्थ और वाक्य के अर्थ का भेद। तीसरा है पाठ और संदर्भ के बीच का अंतर। इस तीसरे अंतर को अब सीमेंटिक्स से अलग करके भाषा-शास्त्रियों ने प्रैगमैटिक्स के रूप में नया अनुशासन बना दिया गया है। मूलत: अर्थ परिवर्तन के विभिन्न कारण होते है जिसका उल्लेख प्रस्तुत इकाई में किया गया है।



13.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : भाषाविज्ञान की वह शाखा जिसमें शब्दों के अर्थ का अध्ययन किया जाता है, अर्थविज्ञान कहलाता है। भाषाविज्ञान की वह शाखा जिसमें शब्दों के अर्थ का अध्ययन किया जाता है, अर्थविज्ञान कहलाता है।



13.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



13.8 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये -

1. अर्थ विस्तार किसे कहते हैं ?
2. सामाजिक परिवेश का परिवर्तन क्या है ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए -

1. अर्थपरिवर्तन के कारणों का उल्लेख कीजिए।
2. अर्थविस्तार का क्या मतलब है ?

*** ***** ***

इकाई 14 : शैलीविज्ञान

इकाई की रूपरेखा

14.1 उद्देश्य

14.2 प्रस्तावना

14.3 शैली की अवधारणा

14.4 शैलीविज्ञान की अवधारणा

14.5 शैलीविज्ञान के तत्व

- 14.5.1 चयन
- 14.5.2 विचलन
- 14.5.3 समानांतरता
- 14.5.4 अप्रस्तुत-विधान
- 14.5.5 प्रतीक-विधान
- 14.5.6 बिंब-विधान

14.6 शैलीविज्ञान की शाखाएँ

14.7 सारांश

14.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

14.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

14.9 अभ्यास प्रश्न

14.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप -

- शैली तथा शैलीविज्ञान की अवधारणाओं को जानेंगे।
- शैलीविज्ञान के तत्वों से परिचित होंगे।
- शैलीविज्ञान की शाखाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

14.2 प्रस्तावना

शैलीविज्ञान आलोचना की ऐसी दृष्टि है, जो भाषाविज्ञान और काव्यशास्त्र के मेल-जोल से विकसित हुई है। इसका सामान्य तौर पर अभिव्यक्ति की शैली के तौर पर प्रयोग किया जाता है। साहित्य के संदर्भ में 'शैली' वस्तुत: शब्द (भाषा) और कला (साहित्य) के अनुबंधन की संकल्पना है। भाषाविज्ञान की अंतर्दृष्टि से संदर्भित और उसकी विश्लेषणात्मक प्रणाली से संयुक्त काव्यशास्त्र ही शैलीविज्ञान है। शैलीविज्ञान एक ओर साहित्यिक कृति की भाषा शैली का

अध्ययन काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर करता है। जिसमें रस, छंद, अलंकार, बक्रोक्ति, ध्वनि, रीति, शब्द-शक्ति, बिंब, प्रतीक आदि का समावेश किया जाता है। दूसरी ओर भाषा की प्रकृति या संरचना के अध्ययन को महत्व देकर भाषाविज्ञान के सिद्धांतों का भी उपयोग किया जाता है। अत: किसी कृति का सम्यक् मूल्यांकन के लिए शैलीविज्ञान की बेहद आवश्यकता है।

14.3 शैली की अवधारणा

किसी भी कार्य को करने का विशेष ढंग शैली है। यह कार्य खाना, चलना, बोलना, लिखना या रहन-सहन आदि हो सकता है। हर व्यक्ति का किसी भी कार्य को करने का अनोखा ढंग होता है। यह ढंग या तरीका व्यक्ति के हिसाब से अलग-अलग होता है। इस प्रकार अलग या ख़ास तरीके से काम को करना उस व्यक्ति की शैली कहलाता है। यह शैली उस व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान होती है। इस प्रकार साहित्य की आलोचना के संदर्भ में शैली का सामान्य अर्थ साहित्यकार द्वारा अपने भावों को अभिव्यक्ति देने के लिए अपनाई गई विशेष भाषा व्यवहार है।

'शैली' शब्द के लिए अंग्रेज़ी में 'Style' शब्द प्रचलित है। साहित्य की आलोचना के संदर्भ में 'शैली' शब्द को 'Style' शब्द की व्युत्पत्ति से समझा जा सकता है। अंग्रेज़ी 'Style' शब्द व्युत्पत्तिगत संबंध लैटिन के 'Stllus' शब्द से है। लैटिन में पत्थर, धातु या हड्डी से बनी कलम के लिए 'Stllus' शब्द का प्रयोग होता था। समय के साथ-साथ अर्थ परिवर्तन होकर यह शब्द लिखित अथवा मौखिक अभिव्यक्ति के ढंग के लिए प्रयोग होने लगा।

आज हिंदी आदि भाषाओं में 'साहित्यिक अभिव्यक्ति की पद्धति' के अर्थ में 'शैली' शब्द का प्रयोग बहुत पुराना नहीं है। अंग्रेज़ी के संपर्क में आने के बाद 'Style' के समानार्थी शब्द के रूप में हिंदी में 'शैली' शब्द का प्रयोग होने लगा है।

'शैली' शब्द के मूल में 'शील' शब्द है, जिसका प्रयोग वैदिक काल में ही होने लगा था। 'शील' शब्द में 'क्षण' प्रत्यय के योग से 'शैली' शब्द बना है। संस्कृत भाषा में 'शील' शब्द अपने बहुव्यवहृत रूप में 'स्वभाव' के अधिक निकट है और 'शैली' शब्द का निर्माण कदाचित् 'स्वाभाविक प्रवृत्ति' या 'अभिव्यक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति' संकल्पना को अभिव्यक्ति देने के लिए हुआ होगा।

शैली की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

हेनरी मोरियर के अनुसार, "To us style is a disposltion of existence, a way of being." अर्थात् शैली किसी के भी होने का एक ढंग है।

मरि के अनुसार, "Style is a quality of language, which communicates preclsely emotions or thoughts." अर्थात् शैली भाषा की उस विशिष्टता का नाम है, जो किसी के भाव अथवा विचार को ठीक-ठीक व्यक्त करती है।

न्यूमैन के अनुसार, "Style is thinking out into language." अर्थात् शैली भाषा के माध्यम से सोचना है।

शेरन के अनुसार, "The term (Style) simply indicates the presence of personality in the manner of artistic expression." अर्थात् शैली का अर्थ है कलात्मक अभिव्यक्ति में व्यक्तित्व की विद्यमानता।

भाषिक अभिव्यक्ति के संदर्भ में शैली को परिभाषित करते हुए भोलानाथ तिवारी ने कहा है, "भाषिक अभिव्यक्ति के विशिष्ट ढंग को शैली कहते हैं।"

डॉ. रवींद्र कुमार श्रीवास्तव के अनुसार, "यह एक ओर भाषा तथा साहित्य को जोड़नेवाली संकल्पना है जिसके संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि शैली कलात्मक सौंदर्य को दर्शाती है।"

इन परिभाषाओं के आधार पर शैली के संदर्भ में निम्नलिखित बातें कही जा सकती हैं-

- शैली का संबंध मूलत: भाषा के साथ है।
- शैली सामान्य न होकर विशिष्ट होता है।
- शैली का संबंध शैलीकार के व्यक्तित्व से होता है।
- शैली साहित्य के विषय-वस्तु, काल, धारा एवं स्थान से प्रभावित होता है।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. शैली विज्ञान क्या है ? विभिन्न विद्वानों द्वारा शैली विज्ञान की परिभाषाओ का उल्लेख करें।

14.4 शैलीविज्ञान की अवधारणा

साहित्यकार अपने भावों को प्रकट करने के लिए जिस विशिष्ट भाषिक शैली का सहारा लेता है, उस विशिष्ट शैली का वैज्ञानिक अध्ययन शैलीविज्ञान है। आधुनिक साहित्य की आलोचना की पद्धति के रूप में शैलीविज्ञान प्रायोगिक भाषाविज्ञान के अंतर्गत आता है। किंतु ऐसा होते हुए भी शैलीविज्ञान भाषाविज्ञान से इतर अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। भाषाविज्ञान जहाँ सामान्य भाषा का अध्ययन करता है, वही शैलीविज्ञान भाषिक अभिव्यक्ति की विशिष्टता का अध्ययन करता है। शैलीविज्ञान को साहित्यिक आलोचना की नवीन पद्धति के रूप में देखे जाने पर भी इसकी परिधि व्यापक हो सकती है। शैली की संकल्पना मूलत: भाषा के प्रायोगिक पक्ष के साथ जुड़ी होने के कारण मीडिया, कानूनी कामकाज, बैंक के कामकाज आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त विशिष्ट भाषिक अभिव्यक्ति के अध्ययन को भी शैलीविज्ञान की परिधि में समेटकर देखा जा सकता है। इसलिए भाषा और साहित्य के साथ शैलीविज्ञान के संबंध को देखते हुए शैलीवैज्ञानिक आलोचना को दो भागों में बाँटा जा सकता है- (क) साहित्यिक शैलीविज्ञान और (ख) साहित्येतर शैलीविज्ञान।

शैलीविज्ञान साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में एक ऐसा विज्ञान है, जो कृति को केवल कृति के रूप में, कृति से बाहर की सभी चीजों से अलग करके देखता है। शैलीविज्ञान कृति की भाषिक संरचना के माध्यम से ही कृति को व्याख्यायित करता है। अर्थात् शैलीविज्ञान साहित्य के सौंदर्य का उद्घाटन करता है। शैलीविज्ञान भाषा के आधार पर की गई साहित्य की सौंदर्यमूलक व्याख्या है।

14.5 शैलीविज्ञान के तत्व

साहित्य कृति में साहित्यकार विशिष्ट शैली के माध्यम से भावों की अग्रप्रस्तुति करता है। साहित्यकार की इस विशिष्ट शैली में कई तत्व निहित होते हैं, जिनका अध्ययन शैलीवैज्ञानिक अध्ययन में किया जाता है। अत: शैलीविज्ञान के ये तत्व हैं- चयन, विचलन, समानांतरता, अप्रस्तुत-विधान, प्रतीक-विधान और बिंब-विधान है। इन सभी तत्वों का परिचय आगे प्रस्तुत है।

14.5.1 चयन

चयन का अर्थ है चुनना। साहित्यकार जब किसी साहित्यिक कृति की रचना करता है, तब उनके सामने भिन्न भाषिक इकाइयों जैसे- ध्वनि, शब्द, वाक्य, रूप, अर्थ आदि के स्तर पर चयन अथवा चुनने की गुंजाइश होती है। जैसे- हिंदी में आकाश, गगन, व्योम समान अर्थ को बताने वाले शब्द हैं। किंतु साहित्यकार अपनी रचना में ध्वनिगत प्रभाव को ध्यान में रखते हुए इन तीनों में से किसी एक शब्द का चयन कर सकता है।

14.5.2 विचलन

प्रत्येक भाषा को लिखने के पीछे कुछ व्याकरणिक नियम होते हैं। जैसे हिंदी में किसी वाक्य को लिखने के लिए कुछ व्याकरणिक नियमों का पालन करना पड़ता है। किंतु साहित्यकार इन नियमों में रहकर अपने भावों को प्रकट नहीं कर पाता। इसलिए वे कभी-कभी व्याकरणिक नियमों को तोड़कर अपने भावों को प्रकट करता है। इसी को विचलन कहा जाता है। साहित्यकार ध्वनि, लिंग, क्रम, अर्थ, आदि स्तरों पर विचलन कर सकता है।

14.5.3 समानांतरता

साहित्य में जब दो या अधिक समान या विरोधी भाषिक इकाई साथ-साथ आती है, तब उसे समानांतरता कहा जाता है। जैसे-

'मुकुल मधुपो का मृदु मधुमास'

इस पंक्ति में कवि ने 'म' की आवृत्ति करते हुए समानांतरता उत्पन्न की है।

14.5.4 अप्रस्तुत-विधान

एक उदाहरण के माध्यम से अप्रस्तुत-विधान को समझते हैं। जैसे-

'तुम्हारा चेहरा चाँद-सा सुंदर है।'

इस पंक्ति में कवि ने चेहरा की सुंदरता को दिखाने के लिए चाँद का प्रयोग किया है। कवि के सामने एक चेहरा है, जिसको प्रस्तुत कहा जाता है। वही उस चेहरा की तुलना कवि ने चाँद के साथ की है। चाँद कवि के सामने नहीं है, इसलिए वह अप्रस्तुत है। इस प्रकार साहित्यकार समानता को आधार बनाकर अपनी रचना में अप्रस्तुत का विधान करता है।

14.5.5 प्रतीक-विधान

साहित्यकार अपनी रचनाओं में कथ्य को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रतीकों की योजना करते हैं। प्रतीक के भी कई प्रकार हो सकते हैं- भावात्मक प्रतीक, विचारात्मक प्रतीक, पौराणिक प्रतीक, यौन प्रतीक आदि।

14.5.6 बिंब-विधान

'बिंब' शब्द हालाँकि संस्कृत का शब्द है, किंतु संस्कृत में ठीक इस अर्थ में इसका प्रयोग नहीं मिलता। वहाँ इसका अर्थ छाया, प्रतिमा, प्रतिबिंब आदि है। आधुनिक काल में इस शब्द में नया अर्थ उस समय आया जब अंग्रेज़ी सब्द 'इमेज' के हिंदी पर्याय के रूप में इसके प्रयोग का आरंभ हुआ। काव्य-भाषा में बिंब का निर्माण मुख्यत: चार-पाँच प्रकार से किया जाता है- (क) अप्रस्तुतों के प्रयोग द्वारा (ख) प्रतीकों के द्वारा (ग) मानवीकरण (घ) विशेषणों के द्वारा (ङ) मात्र वर्णनात्मकता के द्वारा। बिंबों का संबंध किसी-न-किसी इंद्रिय से होता है। इसीलिए इंद्रियों के आधार पर बिंबों के प्रकार हैं- दृश्य बिंब, नाद-बिंब, गंध-बिंब, स्पर्श-बिंब, स्वाद बिंब।

14.6 शैलीविज्ञान की शाखाएँ

शैलीविज्ञान भाषा केंद्रिक अध्ययन है। इसलिए भाषा की प्रमुख इकाइयों जैसे- ध्वनि, शब्द, वाक्य, रूप, अर्थ को आधार मानकर शैलीविज्ञान की शाखाओं हम देख सकते हैं। ये शाखाएँ हैं- ध्वनीय शैलीविज्ञान, शब्दीय शैलीविज्ञान, वाक्यीय शैलीविज्ञान, रूपीय शैलीविज्ञान तथा अर्थीय शैलीविज्ञान।

- **ध्वनीय शैलीविज्ञान :** ध्वनिय शैलीविज्ञान ध्वनि-चयन, ध्वनि-विचलन, ध्वनि-सामानांतरता, ध्वनियों का प्रभाव तथा उनका विविध प्रकार के भावों के साथ संबंध पर विचार करता है।
- **शब्दीय शैलीविज्ञान :** शब्दीय समानांतरता तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्दावलियों के चयन, मानक-अमानक शब्द का चयन आदि पर विचार करता है।
- **वाक्यीय शैलीविज्ञान :** वाक्यीय शैलीविज्ञान में वाक्य, उपवाक्य, वाक्यांश तथा पदबंध पर अन्वय, क्रम, लोप, समानांतरता आदि की दृष्टि से विचार किया जाता है।
- **रूपीय शैलीविज्ञान :** रूपीय शैलीविज्ञान रूप के स्तर पर साहित्य में चयन, विचलन तथा समानांतरता आदि पर विचार करता है।
- **अर्थीय शैलीविज्ञान :** साहित्यकार भावों की अभिव्यक्ति के लिए अर्थ के स्तर पर अभिधा, लक्षणा अथवा व्यंजना शब्द-शक्ति का चयन कर सकता है। इसके अलावा अर्थ का विचलन तथा समानांतर प्रयोग भी कर सकता है। इन सभी विषयों का अध्ययन अर्थीय शैलीविज्ञान में किया जाता है।



14.7 सारांश

- शैली भाषिक अभिव्यक्ति का विशिष्ट ढंग है।
- शैली सामान्य न होकर विशिष्ट होता है।
- शैली का संबंध साहित्यकार के व्यक्तित्व के साथ होता है।
- साहित्यिक कृति में अभिव्यक्त विशिष्ट भाषिक अभिव्यक्ति का वैज्ञानिक अध्ययन शैलीविज्ञान है।
- शैलीवैज्ञानिक अध्ययन के प्रमुख तत्व हैं- चयन, विचलन, समानांतरता, अप्रस्तुत-विधान, प्रतीक-विधान और बिंब-विधान।
- भाषिक इकाइयों के आधार पर शैलीविज्ञान की शाखाएँ हैं- ध्वनीय शैलीविज्ञान, शब्दीय शैलीविज्ञान, वाक्यीय शैलीविज्ञान, रूपीय शैलीविज्ञान तथा अर्थीय शैलीविज्ञान।



14.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : शैलीविज्ञान इस बात का अन्वेषण करता है कि पाठक (मुख्यत: साहित्यिक) पाठों की भाषा के साथ किस प्रकार अंत:क्रिया करते हैं, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि जब हम पाठ पढ़ते हैं तो हम उन्हें किस प्रकार समझते हैं, तथा उनसे किस प्रकार

प्रभावित होते हैं। हेनरी मोरियर, मरि, न्यूमैन, शेरन इत्यादि विद्वानों ने शैली विज्ञान को परिभाषित करते हुई ऊपर इसकी विस्तारपूर्वक चर्चा की है।



14.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, हिंदी साहित्य सम्मलेन इलाहाबाद।
3. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।



14.10 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों का उत्तर दीजिये :

1. मरि के अनुसार शैली विज्ञान क्या है?
2. 'बिंब' शब्द कौन से भाषा की शब्द है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लिखिए :

1. शैली की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
2. शैलीविज्ञान की परिभाषाएँ दीजिए।
3. शैलीविज्ञान का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
4. शैलीविज्ञान के प्रमुख तत्वों का विश्लेषण कीजिए।
5. भाषिक इकाइयों के आधार पर शैलीविज्ञान की शाखाओं पर प्रकाश डालिए।

*** ***** ***